प्रायोगिकसंस्करणम्

# संस्कृतभाषापरिचयः

## पूर्वमध्यमा द्वितीयवर्षम्
## ( कक्षा- 10 )

महर्षि-पतञ्जलि-संस्कृत-संस्थानम्,
भोपालम्

प्रायोगिकसंस्करणम्

# संस्कृतभाषापरिचयः

## पूर्वमध्यमा द्वितीयवर्षम्

## द्वितीय-प्रश्नपत्रम्

कूट संख्या (602)

प्रकाशकः

महर्षि-पतञ्जलि-संस्कृत-संस्थानम्, भोपालम्

वर्षम् - 2019

• प्रकाशनवर्षम् – 2019

**सर्वाधिकार सुरक्षित**

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार के व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

**संस्कृतपाठ्यपुस्तकलेखनसमन्वय–मार्गदर्शन–समितिः**

| | |
|---|---|
| 1. श्री लोकेशजाटवः, संचालकः, राज्यशिक्षाकेन्द्रम्, भोपालम् | अध्यक्षः |
| 2. डॉ. भागीरथकुमरावतः, सदस्य, म.प्र.पा.पु. स्थायी समिति | सदस्यः |
| 3. डॉ. रघुवीरप्रसादगोस्वामी, सदस्य, म.प्र.पा.पु. स्थायी समिति | सदस्यः |
| 4. श्री अशोक पारीकः, नियंत्रक, पाठ्यक्रमः, राज्य शिक्षाकेन्द्रम् | सदस्यः |
| 5. श्री एस.ए.एच रिजवी, नियंत्रकः, भाषा राज्यशिक्षाकेन्द्रम् | सदस्यः |
| 6. श्री प्रशांतडोलसः, उपनिदेशकः, महर्षिपतंजलिसंस्कृतसंस्थानम् | सदस्यः |
| 7. श्री बृजेशसक्सेना, समन्वयकः (पाठ्यक्रमः) राज्यशिक्षाकेन्द्रम् | सदस्यः |
| 8. श्रीमती मीता गुप्ता, समन्यवयकः (भाषा) राज्यशिक्षाकेन्द्रम् | सदस्यः |
| 9. डॉ. सत्यजीतपाण्डेयः, महर्षिपतंजलिसंस्कृतसंस्थानम् | सदस्यः |
| 10. डॉ. अशोककुमार व्यासः, राज्यशिक्षाकेन्द्रम् | सदस्यः |
| 11. डॉ. लोकेशखरे, राज्यशिक्षाकेन्द्रम् | सदस्यः |
| 12. श्री पी.आर. तिवारी, निदेशकः, | सदस्यः |
| महर्षिपतंजलिसंस्कृतसंस्थान्, भोपालम् | सचिवः |

**समन्वयकाः –**

1. डॉ. सत्यजीतपाण्डेयः, महर्षिपतंजलिसंस्कृतसंस्थान्, भोपालम्
2. डॉ. अशोककुमार व्यासः, राज्यशिक्षाकेन्द्रम भोपालम्
3. रेशमा लाला, महर्षिपतंजलिसंस्कृतसंस्थान्, भोपालम्

**लेखकगणाः –**

1. डॉ. रघुवीरप्रसादगोस्वामी, रामानन्द संस्कृतमहाविद्यालाय, भोपालम्
2. डॉ. शीतांशुत्रिपाठी, राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थानम्,
3. श्री पुरुषोत्तमतिवारी, शास.उ.मा.वि., सांईखेड़ा
4. श्री मनोजकुमारद्विवेदी, शास. उत्कृष्ट उ.मा.वि., उज्जयिनी

**म.प्र.–पाठ्यपुस्तक–स्थायी–समितिः**

| | |
|---|---|
| डॉ. गोविन्दशर्मा, ग्वालियरम् | अध्यक्षः |
| डॉ. भागीरथकुमरावतः, भोपालम् | सदस्यः |
| डॉ. गिरीश–अग्निहोत्री, जबलपुरम् | सदस्यः |
| श्री अनिलचतुर्वेदी, इन्दौरम् | सदस्यः |
| डॉ. सुभाषगुप्ता, इन्दौरम् | सदस्यः |
| डॉ. मुकेशतिवारी, शहडोलम् | सदस्यः |
| डॉ. चन्द्रदेव–अष्ठाना, ग्वालियरम् | सदस्यः |
| डॉ. नाथूरामराठौरः, दमोहम् | सदस्यः |
| डॉ. रघुवीरगोस्वामी, भोपालम् | सदस्यः |
| डॉ. पूजा उपाध्याय, उज्जैनम् | सदस्यः |
| डॉ. गोविन्द रामानी, हरदा | सदस्यः |
| आयुक्तः राज्यशिक्षाकेन्द्रम्, भोपालम् | सदस्यः |
| | सचिवः |
| आयुक्तः, लोकशिक्षणसंचालनालयः, भोपालम् | सदस्यः |
| सचिवः, माध्यमिकशिक्षामण्डलम्, भोपाल | सदस्यः |
| प्रबंधसंचालकः, म.प्र.पाठ्य पुस्तक निगम, भोपाल | सदस्यः |
| प्रतिनिधिः, राष्ट्रीयशैक्षिकअनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् नईदिल्ली | सदस्यः |

# प्राक्कथनम्

भारतीयसन्दर्भे संस्कृतस्य महत्त्वं सर्वोपरि विद्यते। इयं भाषा न केवलं सर्वप्राचीना अपितु संस्कृतेः संवाहिका भाषा वर्तते। समग्रम् अपि भारतीयं ज्ञान-विज्ञानं संस्कृते एक निहितमस्ति। संस्कृतस्य विश्वजनीनं सर्वकालिकं महत्त्वं विज्ञाय पाठ्यक्रमे संस्कृतस्य नियोजनं सुनिश्चितं वर्तते। पाठ्यक्रमे न केवलं वाङ्मयस्य अपितु तत्र निहितानां जीवमूल्यानां, मानवीयादर्शनां, उदात्तभावानां शिक्षणम् अपि लक्ष्यमेकं विद्यते।

प्रस्तुतपाठ्यपुस्तके प्रकृतमुद्देश्यम् आश्रित्य पाठानां समुचितः सन्निवेशः कृतो विद्यते। अत्र नातिविस्तरेण समग्रस्यापि वाङ्मयस्य संस्कृतवैभस्य, विधानां, प्रवृत्तीनां, तत्त्वानां, रचनाकाराणां परिचयः अत्र प्रदत्तः। एतस्य पाठ्यपुस्तकस्य अध्यनेन न केवलं भारतीयसंस्कृतेः परिचयः अपितु संस्कृतभाषोपनिबद्धस्य वाङ्मयस्य अपि परिचयो भविष्यति। अधोलिखितानि पाठ्यपुस्तकस्य उद्देश्यानि संस्थानेन प्रकल्पितानि- तद्यथा-

(1) संस्कृतभाषायाः तत्साहित्यस्य च अध्ययनाय प्रोत्साहनम्।

(2) सोद्देश्यसंस्कृतशिक्षायाः पारम्परिकाध्ययनं वर्तमानशिक्षाप्रणाल्या सह योजनां प्राचीनार्वाचीनपद्धत्योर्मध्ये समन्वयस्थापनम्।

(3) 'प्रायोज्य-प्रणाली-विज्ञानम्' इत्यनेन अधिकृत्य नावाचारेण संस्कृतशिक्षायाः सञ्चालनम्।

(4) संस्कृतवाङ्मये निहितज्ञानस्य व्यावहारिकरूपेण छात्राणां सम्मुखे प्रस्तुतीकरणम्।

(5) संस्कृते विद्यमानायाः भारतीयसंस्कृतेः ज्ञानम्।

(6) संस्कृतवाङ्मये निहितानां मानवीयजीवनमूल्यानाम् अवगमनम्।

(7) संस्कृतवाङ्मये अन्तर्निहितस्य ज्ञानविज्ञानस्य भारतस्यातीतगौरवस्य च युगानुकूलसन्दर्भे प्रस्तुतिः।

इतोऽपि पाठ्यपुस्तकमाध्यमेन अस्माकं देशस्य सांस्कृतिपरम्पराणां निदर्शनं प्रजातान्त्रिकराजव्यवस्थायाः ऐतिहासिकं प्रतिफलनं, साहित्यिकप्रवृत्तीनां ज्ञानम् राष्ट्रियाः चिन्ताः चिन्तनञ्च अत्र समाहितं वर्तते। प्रस्तुतपाठ्यपुस्तकनिर्माणे संस्कृतशिक्षायाः लक्ष्येषु तथ्यात्मकराष्ट्रस्तरीयाः सर्वमान्य-व्यापक-शैक्षणिक-पाठ्यक्रमस्य निर्धारितोद्देश्यानां स्वीकृतसिद्धान्ताः सहायकाः अभवन्।

आशासे यत् इदं पाठ्यपुस्तकं संस्कृतविद्यालयानां कृते निर्धारितं 'सा विद्या या विमुक्तये' इत्यस्य ध्येयवाक्यस्य प्रतिपूर्तिं करिष्यति तथा च उपर्युक्तानाम् उद्देश्यानां पूर्तिरपि सफलया करिष्यति इति।

निदेशकः
महर्षि-पतञ्जलि-संस्कृत-संस्थानम्
भोपालम्

# पाठ्यक्रमः

## 10वीं (पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्ड)
## कूट संख्या– 602

| | | |
|---|---|---|
| क. | सन्धिसमासविचारः | 20 |
| ख. | क्रियाविचारः | 10 |
| ग. | प्रत्ययविचारः | 20 |
| घ. | कारकविचारः | 10 |
| ङ | अव्ययविचारः | 20 |
| च. | संस्कृतस्य भाषासु प्रभावः | 20 |
| | योग | 100 |

## ईकाईवार पाठ्यक्रम एवं ब्लू प्रिन्ट (अंक योजना अर्थात् प्रश्न पत्र का स्वरूप)

## कक्षा – 10वीं (पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्ड)

निर्देश – वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रश्नपत्र के आरंभ में दिये जायेंगे।

1. प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिसके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति एक वाक्य में उत्तर, सही विकल्प तथा सत्य–असत्य का चयन आदि के प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न में (1×5×5=25) अंक निर्धारित है।

2. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर सभी प्रश्नों में विकल्प का प्रावधान रखा जायेगा। यह विकल्प समान इकाई से तथा समान कठिनाई स्तर वाले होंगे।

3. कठिनाई स्तर – 40ः सरल प्रश्न, 45ः सामान्य प्रश्न, 15ः कठिन प्रश्न।

**विषय – संस्कृतभाषा परिचयः (602)** **पूर्णांक – 100, समय – 3.00 घण्टे**

| क्र. | पाठ्यक्रमानुसार इकाईयां | इकाई पर आवंटित अंक | वस्तुनिष्ठ प्रश्न | अंकवार प्रश्नों की संख्या | | | | | | कुल प्रश्न |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 अंक | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 10 अंक | |
| 1 | प्रथम ,स्वर,व्यज्जन उच्चारण स्थानम् | 10 | 03 | 03 | 01 | – | – | – | | |
| 2 | द्वितीय – माहेश्वर सूत्राणि प्रत्याहारश्च | 10 | 02 | 01 | 02 | – | | – | | |
| 3 | तृतीय –सर्वनाम,पद परिचयः | 10 | 03 | – | 01 | – | | – | – | |
| 4 | चतुर्थ – लिंग वचन,संख्या ज्ञानम् | 10 | 04 | 01 | 01 | – | | – | – | |
| 5 | पंचम – लकार शब्द रूप – धातु | 10 | 03 | 01 | 01 | – | | – | – | |
| 6 | षष्ठम् अव्यय प्रत्ययश्च | 10 | 02 | 02 | 01 | – | | – | – | |
| 7 | सप्तम – कारक विभक्ति | 10 | 03 | 01 | 02 | – | | – | – | |
| 8 | अष्टम् – सन्धि समास | 10 | 02 | 01 | 01 | – | | – | – | |
| 9 | नवम् अनुवाद वाक्य रचना | 10 | 03 | – | – | – | | – | – | |
| 10 | दशन् पत्र लेखनम् | 10 | – | – | – | – | | – | – | |
| | योग | 100 | 25 | 20 | 30 | 25 | | | | 30 |

# अनुक्रमणिका


| स.क्रं. | विवरण | पृष्ठ |
|---|---|---|
| प्रथमोऽध्याय: | संस्कृतभाषा | 1 |
| द्वितीयोऽध्याय: | माहेश्वरसूत्राणि | 14 |
| तृतीयोऽध्याय: | संस्कृतवर्ण: परिचय: | 23 |
| चतुर्थोऽध्याय: | लिङ्गपरिचय: | 29 |
| पंचमोऽध्याय: | लकारपरिचय: | 37 |
| षष्ठमोऽध्याय: | अव्यय:प्रत्यय: | 53 |
| सप्तमोऽध्याय: | कारक-परिचय: | 58 |
| अष्टमोऽध्याय: | सन्धि-समास-परिचय: | 69 |
| नवमोऽध्याय: | अनुवाद:, वाक्यरचना | 93 |
| दशमोऽध्याय: | पत्रलेखनम् | 118 |

## प्रथमः अध्यायः

# संस्कृतभाषा

''देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।''

(ऋक् 8.100.11)

अतिप्राचीना संस्कृतभाषा दैवीय प्रेरणया उत्पन्ना इति विख्यातम्। अत-एव इयं भाषा देवभाषेति लोके प्रसिद्धा। अथ च प्राचीनकालादेव भारतीयज्ञानविज्ञानस्य दिव्यानि तत्त्वानि अस्यां भाषायां सङ्ग्रथितानि। सम्पूर्णेऽपि विश्वे आदिज्ञानस्य स्रोतः वेद एव इति, तच्च संस्कृतभाषया एव लभ्यते। अतः संस्कृतभाषायाः महत्त्वं न केवलं भारतदेशे अपितु सम्पूर्णे विश्वे दृश्यते।

समस्तेऽपि विश्वे प्राचीनतमा भाषा संस्कृतमस्ति। ब्रह्ममुखादेव एषा निःसृता इति भारतीयानां विश्वासः

**अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।**
**आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्त्यः॥**

(वाक्यपदीयम्)

भाषामाध्यमेनैव समाजे परस्परम् अभिव्यक्तिः सम्भवति। काव्यादर्शे आचार्यदण्डी इत्थमेव अभिप्रैति-

**''वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्तते''**

**''इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।**
**यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते॥**

भाषा निरन्तरं मानवहृदये प्रवहति-

सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेनो अन्तर्हृदा मनसा पूयमाना। (ऋक् 4.58.6)

भाषा एव मानवजीवनस्य सारः रसः वा -

**पुरुषस्य वाग् रसः, वाच ऋग् रसः। (छा.उप. 1.1.2)**

**जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः।** (ऋक् 4.58.1)

एतादृशैः अमृतवचनैः पूर्णा संस्कृतभाषा दिव्या सनातनी च।

ऋग्वेदः विश्वस्य प्राचीनतमा रचना अस्ति। मैक्समूलर महोदयस्य मतानुसारं ऋग्वेदस्य रचना क्रिस्तोः पूर्व 4000 वर्षेभ्यः प्राक्जाता। लोकमान्यबालगङ्गाधरतिलकमहोदस्य मतानुसारं क्रिस्तोः 6000 वर्षेभ्यः पूर्वमिति। बहवः पाश्चात्याः भारतीयाश्च विद्वांसः क्रिस्तो पूर्व 2500 वर्षेभ्यः प्राक् इति मन्यन्ते।

यद्यपि ऋग्वेदस्य कालविषये मतभेदाः सन्ति तथापि अयं विश्वस्य प्राचीनतमः ग्रन्थः इत्यस्मिन् विषये मतभेदः नास्ति। प्राचीनकाले संस्कृतं भारते साधारणजनानां व्यावहारिकी भाषा आसीत्।

**संस्कृतसाहित्येतिहासे भागद्वयं कर्तुं शक्यते** -

1. वैदिकसंस्कृतसाहित्यम्
2. लौकिकसंस्कृतसाहित्यम्

वैदिकसाहित्ये व्यावहारिकरूपेण भाषायाः विभिन्नरूपाणि दृश्यन्ते। परं लौकिकसंस्कृतं प्रायः पाणिनीयनियमानुसारं भवति।

**भाषाणां वर्गीकरणम्** -

भाषाविज्ञानिनः सर्वाः भाषाः विभिन्नपरिवारेषु वर्गीकुर्वन्ति

1. भारोपीयपरिवारः
2. द्रविडपरिवारः
3. आस्ट्रोएशियाईपरिवारः
4. तिब्बतवर्मीपरिवारः

एतेषु परिवारेषु भारोपीयपरिवारः प्रमुखः विशालश्च। भारतस्य यूरोपमहाद्वीपस्य च सर्वासां भाषाणामत्र गणना भवति। भारते भारोपीयपरिवारस्य द्रविडपरिवारस्य च भाषा भाष्यन्ते। यद्यपि सर्वासां परिवाराणां का मूलभाषा इत्यस्मिन् विषये भाषावैज्ञानिकः मौनं धारयन्ति अथवा या काऽपि काल्पनिकी मूलभाषा इति वदन्ति। परं संस्कृतभाषायाः प्राचीनसमृद्धिं दृष्ट्वा कदाचिदेषा एव सा मूलभाषा अभविष्यत इति भारतीयानां चिन्तनम्।

भारोपीयभाषापरिवारे शतम इति शब्दस्य उच्चारणानुगुणम् इत्थं वर्गीकरणं भवति।

**भारोपीय भाषा परिवारः**

| **शतमवर्गः** | **केण्टुमवर्गः** | |
|---|---|---|
| भारतईरानीशाखा | ग्रीकशाखा | इतालिकशाखा |
| ईरानी | भारतीय | [(हैलेनिक (लैटिन)] |
| ट्यूटानिकशाखा | कैलटिकशाखा | तोखारी शाखा |
| प्राचीनफारसी | जर्मन | आंग्ल |
| आधुनिक फारसी | | |

उभयवर्गयोः भाषाभाषिणः जनाः एकस्यैव परिवारस्य आसन्। तेषां स्थानं भारतयूरोपयोः मध्यवर्तीभागः इति कथ्यते। दूरप्रदेशान् प्रति गमनेन आवासभेदेन वर्गाः शाखाः भाषाश्च भिन्नाः जाताः। केण्टुमवर्गे ग्रीक-लैटिन-भाषे, अथ च शतं वर्गे भारतईरानीभाषे प्रमुखाः अभवन्। वैदिकसंस्कृतं भारतईरानीशाखायाः भारतीयरूपम्। आर्यभाषा इति वा तस्य व्यवहारः।

## आर्यभाषापरिवारः

**आर्यभाषायाः त्रयः कालाः -**

प्राचीनार्यभाषाकालः (क्रिश्तोः पूर्व 500 वर्षपर्यन्तम्) प्राचीन-आर्यभाषाकालः अतिदीर्घः। अस्मिन् काले आर्याः उत्तरभारते न्यवसन्। अयमेव वैदिककालः। अस्मिन् काले संस्कृतं व्यवहारभाषा आसीत्। वेदाः उपनिषदः दर्शनानि अस्मिन्नेव काले आसन्। अस्य कालस्य अन्तिमभागे पाणिनेः व्याकरणं समागतम्। संस्कृतेन सह प्राकृतमपि जनभाषा अभवत्।

मध्यकालीनार्यभाषाकालः (क्रिश्तोः पूर्व 500 वर्षतः 1000 ईस्वीपर्यन्तम्)

अस्मिन् काले प्राकृतं जनभाषा अभवत्। प्रादेशिकभेदेन प्राकृतस्य अनेकानि रूपाणि अभवन् - मागधी, अर्धमागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री, पैशाची इत्यादीनि प्रमुखान्यासन्। प्राकृतभाषाणां विकृतिकारणात् अपभ्रंशः जातः। संस्कृतम् उच्चवर्गस्य व्यवहारिकी भाषा साहित्यिकी भाषा चाभवत्।

आधुनिकार्यभाषाकालः (क्रिश्तोः 1000 वर्षतः वर्तमानं यावत्)

अस्मिन् काले अपभ्रंशानामपि विकासः जातः। भाषागत परिवर्तनानन्तरं काश्मीरी, सिन्धी, पञ्जाबी, मराठी इत्यादयः भाषाः उद्गताः यासु संस्कृतशब्दाः प्रचुराः। संस्कृतं साहित्यिकभाषारूपेण अवशिष्टा।

**संस्कृतम्**

वैदिकसंस्कृतम्-लौकिकसंस्कृतम्

साहित्यिक-संस्कृतम् प्राकृतम्

पैशाचीप्राकृतम् शौरसेनीप्राकृतम् अर्धमागधीप्राकृतम् मागधीप्राकृतम् महाराष्ट्रीप्राकृतम्

अपभ्रंश मागधीप्राकृतम्

गुजराती राजस्थानी पञ्जाबी हिन्दी बांग्ला बिहारी उड़िया असमिया

**खड़ी बोली बृजभाषा**

संस्कृतभाषा समस्त-आर्यभाषाणां जननी अस्ति। द्रविडवर्गीयाः दक्षिणभारतीयभाषाः तमिल-तेलुगु-कन्नड़-मलयालम-भाषाः यद्यपि भिन्नपरिवारीयाः तथापि एतासु संस्कृतशब्दानां प्रचुरः प्रयोगः दृश्यते। एतासां साहित्यमपि संस्कृतसाहित्येन प्रभावितमस्ति।

रामायण-महाभारतग्रन्थौ एतासां साहित्यानां कृतेऽपि उपजीव्यग्रन्थौ। अतः सर्वाः अपि भारतीयाः भाषाः संस्कृताज्जातः, संस्कृतेन संपुष्टाः वा, संस्कृतभाषया घनिष्ठं सम्बन्धं धारयन्ति।

व्याकरणदोषरहिता भाषा संस्कृतभाषेति कथ्यते। पुरा सर्वे जनाः संस्कृतभाषा एव वदन्ति स्म। अतः समग्रमपि प्राचीन साहित्यं संस्कृतभाषायामेव उपलभ्यते। सर्वप्राचीनग्रन्थाः चत्वारो वेदाः देवभाषायामेव निबद्धाः सन्ति। संस्कृतभाषायाः काव्यानां माधुर्यं संसारे प्रसिद्धं वर्तते। इयं संस्कृतभाषा सर्वोत्कृष्टा साहित्यसंयुक्ता वर्तते।

संस्कृतभाषैव भारतवर्षस्य प्राणभूता भाषा अस्ति। संस्कृतभाषा एव भारतवर्षमेकसूत्रे बध्नाति। अतः संस्कृतभाषा सञ्जीवनीभाषा, अमृतभाषा, विश्वभाषा, वेदवाणी, देववाण्यश्च अस्ति इति वयम् अनुभवामः।

## संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

संस्कृतभाषा अतिप्राचीनकालादारभ्य विश्वे भारते वा व्यवह्रिमाणा पठ्यमाना च अस्ति। एषाभाषा अद्यापि प्रासङ्गिकी अस्ति। अतः संस्कृतभाषा, तस्याः साहित्यं च जगति महत्त्वं भजेते। अतएव ''भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा'' इत्युच्यते। तत्रापि ''संस्कृतिः संस्कृताश्रिता'' इत्युच्यते। भारतीया संस्कृतिः संस्कृतभाषया संग्रथिता प्राचीन-संस्कृतग्रन्थेषु संरक्षिता अद्यापि विश्वमानवकल्याणाय पथप्रदर्शिका अस्ति। संस्कृतस्य महत्त्वं विविधकारणैरस्ति। तद्यथा -

### 1. ऐतिहासिकं महत्त्वम्

संस्कृतभाषा विश्वस्य अत्यन्तप्राचीना भाषा ऋग्वेदश्च प्राचीनतमः ग्रन्थः इति सर्वैरङ्गीक्रियते। संस्कृतभाषया एव भारतस्य प्राचीनतमस्य रूपस्य परिचयः भवति। संस्कृतभाषायाः आश्रयेण पञ्चसहस्रवर्षेभ्योऽपि अधिकस्य ऐतिहासिक-गौरवस्य भावः पुष्टः भवति। अतः भारतीय-अस्मितायाश्च केन्द्रभूतस्य संस्कृतस्य ऐतिहासिकं **महत्त्वम्।**

### 2. आध्यात्मिकं महत्त्वम्

आध्यात्मिकजगति पाश्चात्यदर्शनैः अप्राप्तनामपि गूढरहस्यानां दैवीयतत्त्वानां व्याख्यानं विस्तृतरूपेण भारतीयदर्शनग्रन्थेषु कृतमस्ति। अनेनैव महत्त्वपूर्णेन आध्यात्मिकज्ञानेन भारतं जगद्गुरुरासीत्। अद्यापि बहवः वैदेशिकाः स्व-स्वदेशेषु भारतीय-दर्शनस्य अध्ययनं कुर्वन्ति अथवा भारतीयदर्शनमध्येतुं भारतम् आगच्छन्ति। यद्यपि अद्य भौतिकवादस्य प्राधान्यं दृश्यते तथापि भौतिकवादेन सर्वासां मानवीयसमस्यानां, कुण्ठानां वा समाधानं न भवति। समस्तमानवकल्याणार्थं अध्यात्मवाद एव शरणम्। सन्तुलितमानवजीवनस्य कृते समष्टिकल्याणस्य कृते च गूढातिगूढाः सरलातिसरलाश्च बहवः दार्शनिकविचाराः संस्कृतभाषायां **प्रतिपादिता** -

''तेनत्यक्तेनभुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्''
इति सन्तोषेण परस्परं कलहः वैमनस्यं वा न भवेत्।

**मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु च लोष्ठवत्।**
**आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः॥**

**आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।**
**इति चिन्तनेन मनुष्यस्य सामाजिकं जीवनं सुखमयं भवति।**

**''गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत।''**
**''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः॥''**

इति प्रतिक्षणं धर्माचरणेन स्व स्व कर्माचरणेन च शतवर्षाणां सुखमयजीवनस्य कामना क्रियते। कर्मवैफल्ये सति निराशा न भवेत् इत्येतदर्थं कर्मसिद्धान्तः सम्यक् प्रतिपादितः -

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन''

पुनश्च व्यक्तित्वस्य संतुलितविकासाय -

''सुखदुःखेसमेकृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।''

दुःखेष्वनुद्विग्नमनः सुखेषु विगतस्पृहः।

''विहाय कामान् सर्वान् यः पुमांश्चरति निस्पृहः।

निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति।।''

एवमेव स्थितप्रज्ञस्य भावः जीवन्मुक्तस्य लक्षणानि, आत्मतत्त्वम्, अखण्डपिण्डब्रह्माण्डसम्बन्धः, ईश्वरसिद्धिः, मोक्षप्राप्तिः, सृष्टिप्रक्रिया, सत्त्वरजस्तमोगुणाः, जीवात्मपरमात्मसम्बन्धः इत्यादयः बहवः दार्शनिकविचाराः वेदेषु उपनिषत्सु दर्शनग्रन्थेषु च सम्यक् प्रतिपादिताः। सर्वेषां साररूपेण सुबोधरूपेण श्रीमद्भगवद्गीतायां सम्यक् व्याख्या कृता। एते सर्वेऽपि विचाराः संस्कृतस्य आध्यात्मिकं महत्त्वं प्रतिपादयन्ति।

**3. सांस्कृतिकं महत्त्वम्**

भारतीया संस्कृतिः आत्मसन्तुष्टा, अध्यात्मनिष्ठा, लोककल्याणभूयिष्ठा च अस्ति। अतः भारतीया संस्कृतिः परम्परा च समृद्धा अस्ति -

**''एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।**
**स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।''**

भारतीया संस्कृतिरेव भारतभूमिं पुण्यभूमिः इति कल्पयति -

''गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे।'' स्वर्गापवर्गास्पद

समृद्धा भारतीया संस्कृतिः विभिन्नघटकैः ज्ञातुं शक्यते -

- सरलग्रामीणजीवनम्
- कृषिप्रधानव्यवसायः
- पशुपालनं पर्यावरणसंरक्षणं च
- चत्वारः पुरुषार्थाः - धर्म-अर्थ-काम-मोक्षाः।
- चत्वारः आश्रमाः - ब्रह्मचर्य-गृहस्थ-वानप्रस्थ-संन्यासाश्च।
- षोडशसंस्काराः - मानवजीवनस्य अनुशासित-समयबद्ध-निर्वाहार्थम्

एते सर्वेऽपि सांस्कृतिकघटकाः। पुराणग्रन्थेषु धर्मशास्त्रग्रन्थेषु गृह्यसूत्रेषु, स्मृतिग्रन्थेषु, महाकाव्येषु च सम्यक्रूपेणप्रतिपादिताः। एतेषां ज्ञानेनैव अग्रे सुखमयं समृद्धिमयं च जीवनं यापयितुं शक्यते। एते सर्वेऽपि विचाराः संस्कृतस्य सांस्कृतिकं महत्त्वं प्रतिपादयन्ति।

**4. साहित्यकं महत्त्वम् -**

संस्कृतसाहित्यं सम्पूर्णेऽपि विश्वे अत्यन्तं समृद्धं वैविध्यपूर्णं च अस्ति। ज्ञानविज्ञानयो भण्डारः संस्कृतसाहित्ये द्रष्टुं शक्यते -

- दर्शनसाहित्यम्-वेदेषु उपनिषत्सु दर्शनशास्त्रग्रन्थेषु च उच्चकोटिदर्शनसाहित्यं दृश्यते।
- शास्त्रसाहित्यम् - अष्टादशविद्या व्याकरण-ज्योतिष-तर्कादीनि।
- ललितसाहित्यम् - संगीत-नृत्य-नाट्य-कामकला विषयकग्रन्थाः।
- गद्यसाहित्यम् - कादम्बरी-वासवदत्ता-तिलकमञ्जरी इत्यादयः।
- नाट्यसाहित्यम् - अभिज्ञानशाकुन्तलम्, रत्नावली, स्वप्नवासवदत्तम् इत्यादयः।

- काव्यसाहित्यम् - रामायणम्, महाभारतम्, रघुवंशम्, कुमारसम्भवम् इत्यादयाः।
- गीतिसाहित्यम् - ऋतुसंहारम्, गीतगोविन्दम् इत्यादयाः।
- नीतिसाहित्यम् - चाणक्यनीतिः, विदुरनीतिः, भर्तृहरेः नीतिशतकम् इत्यादयाः।
- कथासाहित्यम् - हितोपदेशः, पञ्चतन्त्रम्, कथासरित्सागरः इत्यादयाः।
- विज्ञानसाहित्यम् - योग-चिकित्सा, भौतिक-रसायनादयाः विज्ञानग्रन्थाः।
- स्तोत्रसाहित्यम्-शिवताण्डवस्तोत्रम्, आनन्दलहरी, सौन्दर्यलहरी, मुकुन्दमाला, भजगोविनदम् इत्यादयाः एव। इत्थम्प्रकारेण संस्कृतस्य वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिकं महत्त्वम्।

**5. व्याकरणगतमहत्त्वम्** -

संस्कृतभाषायाः यादृशं सुदृढं, सुबद्धं व्याकरणमस्ति न तावत् विश्वस्य अन्यस्याः कस्याः अपि भाषायाः। आचार्यपाणिनिना एतादृशं महत्वपूर्णं कार्यं साधितम्। पाणिनीयव्याकरणेन पुरातन-साहित्यानाम् अधुनातनसाहित्यानां च अध्ययनं सुकरं भवति।

**6. भाषावैज्ञानिकं महत्त्वम्**

संस्कृतभाषायाः प्राचीनत्वात अस्याः व्याकरणस्य सृदृढत्वात् च भाषावैज्ञानिकक्षेत्रं संस्कृतभाषायाः महत्प्राधान्यम् अस्ति। विविधभाषाणां तुलनात्मक-स्वरूपविश्लेषणे संस्कृतभाषा आधारभूता। विविधभाषाणाम् अन्यभाषासु अनुवादकाले, सङ्गणकमाध्यमेन यन्त्रानुवादकाले वा संस्कृतव्याकरणस्य महती आवश्यकता भवति। अतएव प्रसिद्ध भाषाविज्ञानी एल. ब्लूमफील्ड महोदयः उक्तवान् -

Astadhyayi is the greatest monument of human intelligence —L. Bloomffield

भाषाविज्ञाने ध्वनिविज्ञानम् (Phonetics), शब्दविज्ञानम् (Morphology), अर्थविज्ञानम् (Semantics), वाक्यविज्ञानम् (Syntax) इति चत्वारः भेदाः भवन्ति। एतेषु चतुर्षु अपि परीक्षणे सति संस्कृतभाषा सर्वेषु क्षेत्रेषु समर्था तिष्ठति। अतः भारोपीयभाषापरिवारे तु अस्य प्रमुखं स्थानमस्ति। विश्वस्य समस्तभाषासु सम्पूर्णभाषाविज्ञानक्षेत्रे च संस्कृतस्य महत्त्वमस्ति इति नातिशयम्।

**7. वैज्ञानिकं महत्त्वम्**

संस्कृतभाषायां भारतीयप्राचीनविज्ञानस्य बहवः ग्रन्थाः लभ्यन्ते-

- भूगोलविज्ञानस्य, खगोलविज्ञानस्य च विद्वांसः आर्यभटः, भास्कराचार्यः, वराहमिहिरः प्रख्याताः। एतेषां यद्यपि सर्वे ग्रन्थाः नोपलब्धाः तथापि केचन तु सन्ति एव।
- गणिते भास्कराचार्यमतिरिच्य ब्रह्मगुप्तः, श्रीधरः, महावीरः एवं च श्रीपतिः प्रमुखा आचार्याः आसन्।
- भौतिकविज्ञाने कणादस्य महत्वपूर्ण-योगदानमस्ति। एतेन अणुसिद्धान्तस्य प्रतिपादनं कृतम्। उदयनाचार्यः वाचस्पति मिश्रश्च प्रकाशविषये ऊष्णताविषये च प्रतिपादितवन्तौ। दिशाबोधार्थं मत्स्ययन्त्रस्यापि व्यवहारः आसीत्।
- रसायनविज्ञाने रसरत्नाकरः, रसेन्द्रमङ्गला, रसार्णवः, रसेन्द्रचूड़ामणिः इत्यादयः ग्रन्थाः आसन्। नागार्जुनः प्रमुखः आचार्यः आसीत्।
- वनस्पतिविज्ञाने बहूनां यन्त्राणां उल्लेखः दृश्यते। समराङ्गणसूत्रधार इत्यस्मिन् ग्रन्थे विमानरचना विधिः प्रोक्तः।

- सामाजिकविज्ञाने, राजनीतिविज्ञाने, अर्थशास्त्रे, विधिविज्ञाने च ग्रन्था: उपलभ्यन्ते। एते विषया: गौतमधर्मसूत्राणि, बोधायनधर्मसूत्राणि, आपस्तम्ब धर्मसूत्राणि, वरिष्ठधर्मसूत्राणि, याज्ञवल्क्यस्मृति:, मनुस्मृति: बार्हस्पत्यार्थशास्त्रं, कौटिल्यस्य अर्थशास्त्रमित्यादिषु ग्रन्थेषु उपलभ्यन्ते।
- कामशास्त्रस्यापि वैज्ञानिकं विवेचनं प्रजापति:, नन्दी, श्वेतकेतु:, दत्तक:, कुचुमार:, वात्स्यायन:, प्रभृतय: आचार्या: कृतवन्त:।

अद्यापि अन्ताराष्ट्रियस्तरे आयुर्वेदस्य, योगशास्त्रस्य वास्तुशास्त्रस्य च प्रयोगा: दृश्यन्ते। प्राचीनभारतीयवैज्ञानिकग्रन्था: संस्कृते आसन्। तेषां प्रकाशनेन आधुनिक जीवनेन संयोजनेन च लोककल्याणं सिद्धयति।

**8. राष्ट्रियमहत्त्वम्** -

विविधभाषाभाषिभारते भावात्मक-एकतासम्पादने संस्कृतं सूत्ररूपेण तिष्ठति। संस्कृतग्रन्थेषु प्राचीनकालादेव अखण्डराष्ट्रस्य कल्पना कृता आसीत् प्रान्तभेदं विना संस्कृतं सम्पूर्णेऽपि भारतराष्ट्रे व्यवह्रियमाणा, अधीयमाना चासीत् अस्ति च।

राष्ट्रैक्यसम्पादनार्थमेव शङ्कराचार्य: चतुर्षु दिक्षु - उत्तरे बद्रीनाथ:, पश्चिमे द्वारिका, पूर्वदिशि जगन्नाथपुरी, दक्षिणे शृङ्गेरी इति क्षेत्रेषु मठान् स्थापितवान्। स: शङ्कराचार्य: केरलदेशीय: हिमालये तपस्चरितवान्।

रामायणम्, महाभारतम्, श्रीमद्भागवतम्, श्रीमद्भगवद्गीता च सम्पूर्णे भारते समानरूपेण आद्रियन्ते। एतेषां श्लोका: उद्धरणानि प्रसङ्गाश्च प्रवचनेषु उपयुज्यन्ते।

सम्पूर्णेऽपि राष्ट्रे सांस्कृतिककार्यक्रमेषु संस्कारेषु च संस्कृतभाषा एव प्रयुज्यते। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि, चत्वारिधामानि, विभिन्नतीर्थस्थानानि च सम्पूर्णे राष्ट्रे व्याप्तानि। तेषां महत्त्वं संस्कृतभाषया कीर्तितम्।

महाकवि: कालिदास: राष्ट्रस्य वर्णनं कुर्वन् इत्थं लिखति -

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज:।
पूर्वापरस्तोयनिधीवगाह्य स्थित: पृथिव्या इव मानदण्ड:।।

मेघदूतकाव्ये मेघयात्राप्रसङ्गे, रघुवंशे रघो: दिग्विजययात्राप्रसङ्गे, अन्येषु च काव्येषु विविधप्रसङ्गेषु कालिदास: भारतस्य विभिन्नभौगोलिकस्थानानां सुन्दरं वर्णनं करोति। स च कालिदास: कश्मीरप्रान्तीय: वा उज्जैनप्रान्तीय: वा अन्यप्रान्तीय: वा इति मतभेदा: दृश्यन्ते परं तस्य काव्यानि सम्पूर्णेऽपि राष्ट्रे समानरुचिना पठ्यन्ते।

राष्ट्रस्य भिन्न-भिन्नप्रान्तीया: कवय:, लेखका: सस्कृते ग्रन्थान् रचितवन्त:। सुदूरे उत्तरे कश्मीरे कल्हण:, विल्हण:, डल्हण:, रुद्रट:, कैय्यट:, जैय्यट:, मम्मट: प्रसिद्धा:। नैयायिका: विद्वांस: उदयनाचार्य:, रघुनाथशिरोमणि:, गदाधरभट्टाचार्य: प्रभृतय: बङ्गदेशीय: मिथिलाप्रान्तीया: वा। सुललितकवि: जयदेव: उत्कलीय:। इत्थमेव संस्कृतपण्डिता: न सीमितप्रान्ते आसन् अपितु समस्ते राष्ट्रे आसन्।

कश्मीरप्रान्तीयस्य भरतस्य नाट्यशास्त्रं भरतनाट्यरूपेण दक्षिणे सुरक्षितम्। रामायणेन काशीरामेश्वरयो: तीर्थाटनं सर्वेषां कृते अनिवार्यं जातम्। उत्तरस्य अवतारपुरुषाणां सम्प्रदाया: दक्षिणस्य आचार्यै: रामानुज: शङ्करवल्लभाचार्यै: संरक्षिता:।

एवं प्रकारेण राष्ट्रैक्यसाधकानि बहूनि तत्त्वानि संस्कृतग्रन्थेषु उपलभ्यन्ते। अद्यापि सर्वासु भाषासु

अन्तर्प्रवाहिणी संस्कृतधारा राष्ट्रिय ऐक्यं द्रढयति। राष्ट्रभाषाया: हिन्दीभाषाया: सम्पोषणं संस्कृतेनैव भवति। अत: संस्कृतभाषाया: राष्ट्रव्यापकं महत्त्वमस्ति।

**9. अन्ताराष्ट्रियं महत्त्वम् -**

संस्कृतभाषा प्राचीनकालादेव अन्येष्वपि आसीत्। ह्वेनसांग, फाह्यान, इत्यादय: वैदेशिका: यात्रिण: संस्कृतज्ञानस्य प्रचारं कृतवन्त:। गणिते शून्यसिद्धान्त: भारतीयगणितमाध्यमेनेव प्राप्तम्। अरबदेशेषु संस्कृतगणितस्य प्रचार: आसीत्। यवनेषु ज्योतिषशास्त्रस्य प्रचार: आसीत्।

वैदिककालादेव संस्कृतरचनासु समस्तविश्वकल्याणस्य भाव: वर्णित:।

**''उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्''**

''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्''

''यत्र भवेत् विश्वमेकनीडम्''

'आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वत:''

''सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभागभवेत्।।''

''सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्'' इत्यादिभि: उक्तिभि: सर्वमानवकल्याणभावनाप्रसारिता।

- बौद्धपण्डितै: संस्कृतस्य प्रचार: भारतात् बहि: अपि कृत:। जावा, सुमात्रा, इत्यादिषु एशियादेशेषु कृत:।
- अब्दुलरहीमखानखाना, दाराशिकोहप्रभृतय: मोहम्मदा: अपि संस्कृतम् अधीवन्त: प्रसारितवन्तश्च।
- चीनदेशे बौद्धसाहित्ये रामायणस्य प्रसङ्गा: लभ्यन्ते। पृथ्वी कच्छपोपरि तिष्ठता इति तेषां विश्वास: आसीत्। स्वस्तिकचिह्नं बुद्धस्य हृदयमिति स्वीकृतम्। खोतानप्रान्ते संस्कृतस्य प्राचीनविश्वविद्यालय: आसीत्। गणेशपूजा तत्र प्रचलिता आसीत्। मंगोलदेशे गरुडस्य पूजा क्रियते स्म।
- मङ्गोलभाषायां दिवसानां नामानि संस्कृतभाषया प्रभावितानि - आदिया (आदित्यवासर:) सोमिया (सोमवासर:), बुधिया (बुधवासर:), सुकर (शुक्रवासर:) संजीव (शनिवासर:)
- विदेशेषु अनेकस्थलानां नामानि संस्कृतनिष्ठानि-ईरान, आयर्लैण्ड (आर्य), काठमाण्डू (काष्ठमण्डप:), पेशावर (पुरुषपुर), सिंगापुर (सिंहपुर), सुमात्रा (स्वर्णद्वीप), जावा (यवद्वीप), साईबेरिया (शिविरदेश:), लाओस (लावदेश:)।
- आङ्ग्लशासनकाले बहव: आङ्ग्लविद्वांस: संस्कृतस्य अध्ययनं संस्कृतग्रन्थानाम् अनुवादं वा कृतवन्त:।
- 1785 तमे वर्षे चार्ल्स विल्किन्स महोदय: गीताया: हितोपदेशस्य च अनुवादं कृतवान्।
- 1783 तमे वर्षे सर विलियम जोन्स महोदय: संस्कृतप्रचाराय कलकत्ता मध्ये रॉयलएशियाटिक सोसायटी इति संस्थानं स्थापितवान्।
- 1786 तमेवर्षे जोन्समहोदय: अभिज्ञानशाकुन्तलस्य अनुवादं कृतवान्।

- 1791 तमे वर्षे जर्मनविद्वान् जार्जफॉस्टन् शाकुन्तलस्य जर्मनभाषायां अनुवादं कृतवान्, यत् पठित्वा तत्रत्यः राष्ट्रकविः गेटे अत्यन्तं प्रफुल्लितः बहुप्रशंसां कृतवान्।
- प्रसिद्धजर्मनदर्शनिकः शोपेनहारः उपनिषदः समं दर्शनसाहित्यं नास्ति इति प्रशंसितवान्।
- 1814 तमे वर्षे पेरिसविश्वविद्यालये संस्कृताध्यापनं प्रारब्धम्।
- जर्मनदेशे संस्कृताध्ययनस्य महती परम्परा दृश्यते। तत्रत्याः मैक्समूलर, डॉ. धीबो, जैकोबी, बीटलिंग, गोल्टसटकर, प्रो. किरलसन, जेम्स वेलेंटाईन, फ्रोड्रिक्स लेगल, बेबर प्रभृतयः प्रमुखाः आसन्।
- चैकोस्लावियादेशे प्राक् विश्वविद्यालयमतिरिच्य चतुर्षु स्थलेषु संस्कृतस्य पठनपाठनं प्रचलति।
- फिनलैण्डदेशे हेलसिंकी विश्वविद्यालये क्रिश्तोः 1835 वर्षादेव संस्कृतस्य अध्ययनम् अध्यापनं प्रचलति।
- हंगरीदेशे लीडनविश्वविद्यालये क्रिस्तोः 1835 वर्षादेव संस्कृतस्य अध्ययनम् अध्यापनं प्रचलति।
- इंग्लैण्डदेशे ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, लन्दन, एडिनबरा विश्वविद्यालयेषु संस्कृताध्ययनं निरन्तरं प्रचलति।
- हालैण्डदेशे चतुर्षु विश्वविद्यालयेषु संस्कृताध्यापनं प्रचलति।
- अमेरिकादेशेऽपि संस्कृतस्याध्ययनं प्रारब्धमस्ति। तत्र दशाधिकविश्वविद्यालयेषु अन्यसंस्थासु च संस्कृताध्ययनं प्रचलति।
- कनाडादेशे कोलम्बिया, साइमनफ्रेजर, टोरण्टो, पिण्डसर तथा च मैकगिल विश्वविद्यालयेषु संस्कृतस्य पठनपाठनं प्रचलति।
- दक्षिण–अमेरिका तथा पेरुदेशस्य लिपेः पुरातत्त्विक अन्वेषणेन ज्ञातं यत् सा लिपिः सिन्धु नदी सभ्यताकाले प्रचलितलिप्या साम्यं भजते इति।
- पुराणेषु वर्णितानां कुशद्वीप (न्यूबिया) शाल्मलिद्वीपः, चन्द्रस्थानं (अफ्रीकायाः पूर्वीभागः), शंखद्वीपः (अबिसिनियातः मैडागास्करपर्यन्तं अफ्रीकायाः भूभागः) इत्यादीनां स्थानानाम् आलोचनेन ज्ञायते यत् अफ्रीकादेशोऽपि संस्कृतप्रभावितः अस्ति।
- रूस, स्वीडन, फ्रांस, पोलैण्ड, इत्यादिषु देशेषु अपि संस्कृताध्ययनं प्रचलति। इण्डोनेशियादेशे, मॉरीशस, फिलीपाइन्स मलेशिया इत्यादिषु देशेष्वपि संस्कृतस्य प्रभावः प्रसारः च दृश्यते।
- एवं प्रकारेण प्राचीनकालात् विभिन्नदेशेषु संस्कृतस्य अध्ययनं प्रचलति। अद्यापि बहवः वैदेशिकाः संस्कृताध्ययनाय भारतमागच्छन्ति। पञ्चशीलादि विश्वशान्तिस्थापकसिद्धान्तेषु भारतीय दर्शनस्य प्रभावः दृश्यते। संस्कृतसहाय्येनैव विश्वशान्तिः, समरसता, सामञ्जस्यं च सुलभतया सम्भवति। बहवः भारतीयाः विदेशेषु स्थित्वा स्वमूलेन सम्बन्धं स्थापयितुं तत्र वैदेशिक भाषारूपेण संस्कृतं पठन्ति। अतः संस्कृतस्य अद्यापि अन्ताराष्ट्रियं महत्त्वम् अस्ति।

**10. प्रासङ्गिकमहत्त्वम् -**

संस्कृतभाषा न केवलं प्राचीनकालस्य ऐतिहासिकी भाषा अपितु वर्तमानकालेऽपि नित्यम् अधीयमाना व्यवह्रियमाणा भाषा चास्ति। अद्यापि सम्पूर्णे राष्ट्रे विविधरूपेण संस्कृताध्ययनं प्रचलति। प्रायः 150 विश्वविद्यालयेषु संस्कृताध्ययनार्थं संस्कृतविभागः सन्ति। देशस्य पञ्चदश संस्कृतविश्वविद्यालयेषु संस्कृताध्ययनं प्रचलति। दिल्ली, तिरुपति इति द्वयोः मानित विश्वविद्यालययोः राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्- मानितविश्वविद्यालयस्य चतुर्दशपरिसरेषु संस्कृताध्ययनं प्रचलति।

बड़ौदा, पुणे, कलकत्ता, चेन्नई, तिरुपति इत्यादिषु स्थितेषु प्राच्यशोधसंस्थानेषु शोधकार्याणि प्रचलन्ति।

भारतसर्वकारेण संचाल्यमानेषु आदर्शसंस्कृतविद्यापीठेषु संस्कृताध्ययनं प्रचलति। विभिन्नराज्येषु संस्कृतसंस्थाभिः अकादमी संस्कृतकार्यक्रमाः सञ्चाल्यन्ते। सम्पूर्णेऽपि देशे देवालयेषु सांस्कृतिक उत्सवेषु पारिवारिकसंस्कारेषु च संस्कृतभाषा प्रयुज्यते। सम्प्रति देशे अनेक स्वैच्छिकसंस्थाभिः संस्कृतस्य प्रचारकार्यं क्रियते।

अद्यापि प्राचीन अर्वाचीनविज्ञानयोः तुलनात्मक-अध्ययनार्थं संस्कृतस्य आवश्यकता अस्ति। लोकोपयोगी आयुर्वेदः योगः, वास्तु, ज्योतिष, शास्त्राणां प्रचारार्थं संस्कृतस्य उपयोगिता अस्ति। आकाशवाणी, दूरदर्शनमाध्यमेन संस्कृतकार्यक्रमाः प्रसार्यन्ते। अद्यापि संस्कृतकवयः राष्ट्रियस्तरे संस्कृत-कविसम्मेलनेषु स्वीयमधुरकाव्यैः रसिकान् आनन्दयन्ति।

बहवः लेखकाः इदानीमपि संस्कृते ग्रन्थान् प्रणयन्ति। संस्कृतभाषया बह्व्यः पत्रिकाः निरन्तरप्रकाश्यन्ते। अतः संस्कृतभाषा न केवलं श्रेष्ठभाषा अपितु प्राचीनकालात् अद्यावधि भारते प्रयुज्यमाना अमृतभाषा अस्ति। अतः वर्तमानकाले तु अस्य प्रासङ्गिकता अस्ति एव। भविष्यत् कालेऽपि संस्कृतं सदा प्रासङ्गिकं भविष्यत्येव।

## अभ्यासप्रश्नाः

**प्रश्न 1- संस्कृतभाषया एकपदेन उत्तरत -**

(1) अतिप्राचीना भाषा का ?

(2) दैवीय प्रेरणया का भाषा उत्पन्ना ?

(3) देवभाषेति लोके का भाषा प्रसिद्धा ?

(4) आदिज्ञानस्य स्रोतः कः ?

(5) मानवजीवनस्य सारः रसः वा कः ?

(6) मानवहृदये निरन्तरं किं प्रवहति ?

(7) प्राचीनभारते साधारणजनानां व्यावहारिकी भाषा का आसीत् ?

(8) विश्वस्य प्राचीनतमः ग्रन्थः कः ?

(9) भारते कस्य भाषापरिवारद्वयस्य भाषा भाष्यन्ते ?

(10) भारतईरानीशाखायाः भारतीयरूपम् किम् ?

**प्रश्न 2- एकवाक्येनोत्तरत -**

(1) लौकिकसंस्कृतं केन नियमानुसारं चलति ?

(2) संस्कृतभाषायां कीदृशं साहित्यम् उपलभ्यते ?

(3) आर्यभाषाणां जननी का भाषा अस्ति ?

(4) वयं संस्कृतभाषाविषये किम् अनुभवामः ?

(5) भारतीयदर्शनमध्येतुं भारतम् के आगच्छन्ति ?

(6) पुरुषार्थानां नामानि लिखत ?

(7) आश्रमानां नामानि कानि सन्ति ?

**प्रश्न 3 - कोष्ठकात् उचितं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत -**

(क) संस्कृतम् एवं भारतवर्षं ........................... सूत्रे बध्नाति । (एक, अनेक, विशेष)

(ख) संस्कृतिः ......................... । (जनाश्रिता, धनाश्रिता, संस्कृताश्रिता)

(ग) रसायनविज्ञानस्य ग्रन्थः ..................... अस्ति। (रामायणम्, रसार्णवः, मनुस्मृतिः)

(घ) अर्थशास्त्रम् ..................... लिखितम्। (कौटिल्येन, कालिदासेन, राजशेखरेण)

(ङ) हिन्दीभाषायाः पोषणं ..................... भवति। (प्राकृतेन, संस्कृतेन, पालिना)

**प्रश्न 4- अधोलिखितान् पूरयत -**

(1) भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे ..................... ।

(2) मातृवत् परदारेषु ..................... ।
..................... पश्यति सः पण्डितः ।।

(3) सर्वे भवन्तु सुखिनः ..................... ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु ..................... ।।

(4) एतद्देशप्रसूतस्य ..................... ।
..................... पृथिव्यां सर्वमानवाः ।।

(5) उदारचरितानां तु ..................... ।

(6) संगच्छध्वं संवदध्वं ..................... ।

(7) कुर्वन्नेवेह कर्माणि ..................... ।

**प्रश्न 5- उचितम् मेलनं कुरुत -**

| | **क** | **ख** |
|---|---|---|
| (1) | वैदिकसंस्कृतम् | संस्काराः |
| (2) | शौरसेनी | विश्वगुरुः |
| (3) | वेदाः | लौकिकसंस्कृतम् |
| (4) | भारतम् | प्राकृतम् |
| (5) | षोडश | चत्वारः |

**प्रश्न 6- अधोलिखितानां संक्षेपेण विवेचयत -**

(1) संस्कृतस्येतिहासिकं महत्त्वम्।

(2) संस्कृतस्याध्यात्मिकं महत्त्वम्।

(3) संस्कृतस्य व्याकरणगतं महत्त्वम्।

(4) संस्कृतस्य साहित्यिकं महत्त्वम्।

(5) संस्कृतस्यान्ताराष्ट्रियं महत्त्वम्।

**प्रश्न 7- अधोलिखितानां पदानां प्रकृतिप्रत्ययौ पृथक्-पृथक् लिखत -**

| पदम् | प्रकृतिः ( मूलशब्दः ) | प्रत्ययः |
|---|---|---|
| (क) संस्कृतम् | ...................................... | .................... |
| (ख) प्रसिद्धाः | ...................................... | .................... |
| (ग) अस्याः | ...................................... | .................... |
| (घ) कर्माणि | ...................................... | .................... |
| (ङ) पश्यति | ...................................... | .................... |
| (च) समाचरेत | ...................................... | .................... |
| (छ) कारणात् | ...................................... | .................... |
| (ज) भविष्यन्ति | ...................................... | .................... |
| (झ) गृहीत | ...................................... | .................... |
| (ञ) अधिगच्छति | ...................................... | .................... |
| (ट) महती | ...................................... | .................... |
| (ठ) व्याकरणम् | ...................................... | .................... |
| (ड) पर्यावरणम् | ...................................... | .................... |
| (ढ) विज्ञानम् | ...................................... | .................... |
| (ण) पठति | ...................................... | .................... |

**प्रश्न 8- अधोलिखितानां प्रत्येकानां ग्रन्थद्वयस्य नाम लिखत -**

(क) नाट्यसाहित्यम्................................................।

(ख) गीतिसाहित्यम्................................................।

(ग) नीतिसाहित्यम्................................................।

(घ) कथासाहित्यम्................................................।

(ङ) काव्यसाहित्यम्................................................।

**प्रश्न 9- अधोलिखितानां पदानां विग्रहं कृत्वा समास नाम लिखत -**

| समस्त पदानि | विग्रहः | समासनाम |
|---|---|---|
| (क) अमृतवचनैः | ............................ | .............................. |
| (ख) पितरौ | ............................ | .............................. |
| (ग) सर्वभूतेषु | ............................ | .............................. |
| (घ) समानवर्णौ | ............................ | .............................. |
| (ङ) भाषाविज्ञानम् | ............................ | .............................. |
| (च) तपोधनानि | ............................ | .............................. |
| (छ) तपोवनम् | ............................ | .............................. |

**( परीक्षाकृते नास्ति )**

**योग्यता - विस्तारः**

(क) वेदानां नामानि कानि सन्ति ?

(ख) पुराणानां नामानि लिखत।

(ग) षोडश संस्काराणां नामानि लिखत।

(घ) पञ्चस्तोत्राणां नामानि लिखत।

(ङ) पञ्चसंस्कृतविश्वविद्यालयानां नामानि लिखत।

❖ ❖ ★ ❖ ❖

## द्वितीयः अध्यायः

# माहेश्वर-सूत्राणि

> ''नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
> उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्।।''
>
> इत्यनेन श्लोकेन चतुर्दशसूत्राणि माहेश्वरसूत्राणि इति नाम्ना प्रसिद्धाः। महर्षि पाणिनेः तपस्याप्रभावेण भगवान् शिवः प्रसन्नो भूत्वा नृत्यन् चतुर्दशवारं ढक्कां वादयन् इमानि चतुर्दशसूत्राणि प्रकटीकुर्वन् अस्माकं कृते संस्कृतवर्णाः प्रदत्तवान्। एतेषु चतुर्दशसूत्रैः एव संस्कृतभाषायाः विकासः जातः।

**चतुर्दशमाहेश्वरसूत्राणि भवन्ति :-**

1. अइउण् 2. ऋलृक् 3. एओङ् 4. ऐऔच् 5. हयवरट् 6. लण्
7. ञमङणनम् 8. झभञ् 9. घढधष् 10. जबगडदश्
11. खफछठथचटतव् 12. कपय् 13. शषसर् 14. हल्

अत्र सर्वे स्वराः व्यञ्जनानि च अन्तर्निहिताः सन्ति। प्रत्येकस्मिन् सूत्रे अन्तिमवर्णस्य इत् संज्ञा भवति। यस्य वर्णस्य हलन्त्य भवति तद्वर्णस्य ''तस्य लोपः'' इत्यनेन सूत्रेण लोपः भवति। परन्तु अत्र ''णादयोऽणाद्यर्थाः'' इत्यनेन वार्तिकेन 'अण्' आदि त्रिचत्वारिंशत् प्रत्याहारसिद्ध्यर्थं चतुर्दशसूत्रेषु ण्-आदि हलन्त्यवर्णानां लोपः न भवति।

**प्रत्याहाराः**

इदानीम् अस्माकं पुरतः प्रश्नः उपस्थितः। यत् वर्णमालायां एतावत् क्रमपरिवर्तनस्य पृष्ठे भगवतः पाणिनेः किम् प्रयोजनम्? अत्र वस्तुतः मुख्यप्रयोजनं प्रत्याहारनिर्माणं प्रत्याहारस्य अर्थः भवति 'संक्षेपः'। प्रत्याहाराः त्रिचत्वारिंशत् भवन्ति।

प्रत्याहारस्य निर्माणं कथं भवति वयं उदाहरण द्वारा जानीमः। उदाहरणत्वेन 'अच्' प्रत्याहारः अस्ति एतस्य प्रत्याहारस्य निर्माणं पश्यामः - प्रथमं माहेश्वरसूत्राणां आरम्भे

''अइउण्, ऋलृक, एओङ्, ऐऔच्''

अत्र आदिवर्ण 'अ' तथा च अन्त्यवर्णः 'च्' अस्ति। अत्र ''अइउण्'' सूत्रस्य 'ण्', ऋलृक् सूत्रस्य 'क्', 'एओङ्' सूत्रस्य ङ्, एऔच् सूत्रस्य 'च' अर्थात् 'ण्' 'क्' 'ङ्' 'च्' एतेषां चतुर्वर्णानां इत् संज्ञा 'हलन्त्यम्' सूत्रेण भवति। अतः 'तस्य लोपः' इत्यनेन सूत्रेण एतेषां वर्णानां लोपः भवति। अतः 'अच्' प्रत्याहारेण ''अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ'' इत्येषाम् वर्णानां बोधः भवति।

## पाणिनीयव्याकरणे प्रयुक्त-त्रिचत्वारिंशत्-प्रत्याहाराणां क्रमः

| क्र.स. | प्रत्याहारः | घटकवर्णाः |
|---|---|---|
| 1. | अण् | अ, इ, उ। |
| 2. | अक् | अ, इ, उ, ऋ, लृ। |
| 3. | इक् | इ, उ, ऋ, लृ। |
| 4. | उक् | उ, ऋ, लृ। |
| 5. | एङ् | ए, ओ। |
| 6. | अच् | अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ। |
| 7. | इच् | इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ। |
| 8. | एच् | ए, ओ, ऐ, औ। |
| 9. | ऐच् | ऐ, औ। |
| 10. | अट् | अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र। |
| 11. | अण् | अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल। |
| 12. | इण् | इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल। |
| 13. | यण् | य, व, र, ल। |
| 14. | अम् | अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न। |
| 15. | यम् | य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न। |
| 16. | ञम् | ञ, म, ङ, ण्, न। |
| 17. | ङम् | ङ, ण, न। |
| 18. | यञ् | य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ। |
| 19. | झष् | झ, भ, घ, ढ, ध। |
| 20. | भष् | भ, घ, ढ, ध। |
| 21. | अश् | अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द। |
| 22. | हश् | ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द। |
| 23. | वश् | व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द। |
| 24. | जश् | ज, ब, ग, ड, द। |
| 25. | झश् | झ, भ, घ, द, ध, ज, ब, ग, ड, द। |
| 26. | बश् | ब, ग, ड, द। |
| 27. | छव् | छ, ठ, थ, च, ट, त। |

| | | |
|---|---|---|
| 28. | यय् | य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प। |
| 29. | मय् | म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प। |
| 30. | झय् | झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प। |
| 31. | खय् | ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प। |
| 32. | चय् | च, ट, त, क, प। |
| 33. | यर् | य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स। |
| 34. | झर् | झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स। |
| 35. | खर् | ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स। |
| 36. | चर् | च, ट, त, क, प, श, ष, स। |
| 37. | शर् | श, ष, स। |
| 38. | अल् | अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह। |
| 39. | हल् | ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह। |
| 40. | वल् | व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह। |
| 41. | रल् | र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह। |
| 42. | झल् | झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह। |
| 43. | शल् | श, ष, स, ह। |

**इमे प्रत्याहाराः**

## विशेष

1. 'अण्' प्रत्याहारः द्विवारं भवति।
   अण् - अ, इ, उ
   अण् - अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल।
2. 'अच्' प्रत्याहारे समस्तस्वरवर्णाः भवन्ति।

3. 'हल' प्रत्याहारे समस्तव्यञ्जनवर्णाः भवन्ति।
4. 'ञम्' प्रत्याहारे वर्णानाम् अन्त्याक्षराः
''ञ, म, ङ, ण, न'' अन्तर्निहिताः भवन्ति।
5. वर्गाणां चतुर्थवर्णाः 'झष्' प्रत्याहारे भवन्ति।
6. वर्गाणां तृतीयवर्णाः 'जश्' प्रत्याहारे भवन्ति।
7. वर्गाणां प्रथमद्वितीयवर्णाः 'खय्' प्रत्याहारे भवन्ति।
8. 'अल्' प्रत्याहारे सर्वेस्वराः व्यञ्जनानि च भवन्ति।

## सर्वनाम-परिचयः

समाजे, व्यवहारे, विचाराणम् आदान-प्रदाने च भाषायाः यथा महत्वपूर्णम् स्थानं भवति तथैव भाषायां सर्वनाम-शब्दानां स्थानं भवति। भाषां विना यथा विचाराणां, भावानाम् अभिव्यक्तिः न सम्भवति तथैव सर्वनाम-शब्दानां प्रयोगं बिना भाषया भावाभिव्यक्तिः न भवितुम् अर्हति।

अतः छात्राणाम् अवबोधनाय एतं विषयं प्रस्तुतोऽस्ति।

- सर्वादीनि सर्वनामानि (1/1/27/1 पा.सू.)
  सर्वादीनि सर्वनामसंज्ञकानि स्युः।
  सर्व, विश्व, उभ, उभय, उतर, डतम, अन्य, अन्यतर, इतर, त्वत्, त्व, नेम, सम, सिम।
- पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरपराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम्। (गणसूत्रम् 1/1/34// पा.सू.)
  संज्ञाभिन्न-व्यवस्थायाः अर्थे-पूर्व-पर-अवर-दक्षिण-उत्तर-अपर-अधर-शब्दानां सर्वादिगणे गणना भवति।
- स्वमज्ञातिधनाख्यायाम्। (गणसूत्रम् 1/1/35//पा.सू.)
  स्वशब्दः धन-ज्ञाति (बन्धु) - अर्थे सर्वादिगणे भवति। भिन्नार्थे सर्वनामसंज्ञा भवति।
- अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः। (गणसूत्रम् 1/1/36//पा.सू.)
  अन्तर-शब्दस्यार्थः यदि बहिः- धारणोग्यञ्च भवति चेत् तस्य गणना सर्वादिगणे भवति। भिन्नार्थे नाम संज्ञा भवति।
- त्यादादिगणस्य त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद् भवतु किम् इत्येषां शब्दानां सर्वनामसंज्ञा भवति।

ये शब्दाः संज्ञास्थानेषु प्रयुक्ताः भवन्ति ते सर्वनाम शब्दाः कथ्यन्ते। तेषाम् आरम्भः सर्वशब्दात् भवति। प्रायशः तेषां रूपाणि समानानि भवन्ति। द्वन्द्वसमासम् अतिरिच्य अन्य-समासस्य अन्ते यदि सर्व इत्यादि सर्वनाम शब्दानां प्रयोगः भवति तदा तेषामपि सर्वनाम-संज्ञा भवति। एतेषु सर्वनाम-शब्देषु केचन संख्यावाचिनः केचन विशेषादयः च भवन्ति। सर्वादिगणे पञ्चतिंशत् (35) शब्दाः स्वीकृताः।

**यथा** -

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. सर्व | 2. विश्व | 3. उभ | 4. उभय | 5. इतर |
| 6. डतम | 7. अन्य | 8. अन्यतर | 9. इतर | 10. त्वत् |
| 11. त्व | 12. नेम | 13. सम | 14. सिम | 15. पूर्व |
| 16. पर | 17. अवर | 18. दक्षिण | 19. उत्तर | 20. अपर |
| 21. अधर | 22. स्व | 23. अन्तर | 24. त्यद् | 25. तद् |
| 26. यद् | 27. एतद् | 28. इदम् | 29. अदस् | 30. एक |
| 31. द्वि | 32. युष्मद् | 33. अस्मद् | 34. भवत् | 35. किम् |

**विशेष :- उभशब्दो नित्यं द्विवचनान्तः। एवञ्च उभयशब्दस्य द्विवचनं नास्ति।**

- - त्वत् एवञ्च त्व अन्यस्य पर्यायौ स्तः।
- -'नेम-अर्धस्य, सम-सर्वस्य पर्यायौ स्तः।
- -'सम-तुल्यार्थे सर्वनाम न भवति।
- -सिम-सम्पूर्णस्य पर्यायः अस्ति।
- -स्व-निजवाचकार्ये एव सर्वनाम भवति।
- -त्यदादेः सम्बोधनं नास्ति। (त्यद्, तद्, यद्, एतद् इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवतु, किम्)
- -कति-यति-तति ऐते शब्दाः सर्वेषु लिंगेषु प्रयुक्ताः एवञ्च नित्य बहुवचनान्ताः भवन्ति।
- सर्वनामशब्दाः अर्थानुसारेण षड्प्रकारेषु विभक्ताः।
    1. पुरुषवाचक-सर्वनाम-शब्दाः - अस्मद्, युष्मद्, भवत्।
    2. निश्चयवाचक-सर्वनाम शब्दाः -तद्, एतद्, इदम्, अदस्।
    3. सम्बन्धवाचक-सर्वनामशब्दाः - यद्शब्दः सम्बन्धै-वाचकोऽस्ति। एतेन सह तद्अपि भवति।
    4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम शब्दाः - किम् प्रश्नवाचकेन सर्वनामशब्देन सह चित्, चन, अपि इत्येषां प्रयोगं कृत्वा अनिश्चयवाचकसर्वनामस्य निर्माणम् भवति।
    5. प्रश्नवाचक-सर्वनामशब्दाः - किम् प्रश्नवाचक-सर्वनामशब्दे प्रत्ययानां प्रयोगं कृत्वा - कतर, कतम इत्यादि शब्दानां निर्माणं भवति।
    6. निजवाचक-सर्वनामशब्दः - स्व शब्दः निजवाचकार्थे सर्वनाम भवति।

**पदपरिचयः**

- सुप्तिङन्तं पदम् (1/4/14// पा.सू.)
  सुबन्तं तिङन्तं च पदसंज्ञं स्यात्।।

**परिभाषा**- ये शब्दाः सुप-तिङ्-प्रत्ययैः विधीयन्ते ते शब्दाः सुबन्त-पद संज्ञकाः तिङन्तपदसंज्ञकाः च भवन्ति। शब्दानां सुबन्त-पदसंज्ञा भवति, धातूनां तिङन्त-पदसंज्ञा भवति।

सुप् प्रत्ययाः :- स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्यामभ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङ्सोसाम्ङयोस्सुप्। (4/1/2//)

सु औ जस् इति प्रथमा। अम् औट् शस् इति द्वितीया। टा भ्याम् भिस् इति तृतीया। ङे भ्याम् भ्यस् इति चतुर्थी। ङसि भ्याम् भ्यस् इति पञ्चमी। ङस् ओस, आम् इति षष्ठी। ङि ओस् सुप् इति सप्तमी।

**परिभाषा-** येषां शब्दानां अन्ते सुप् प्रत्ययः भवति ते शब्दाः सुबन्तशब्दाः भवन्ति। संज्ञा-सर्वनाम-विशेषणादि शब्देषु सुप् प्रत्ययस्य प्रयोगः भवति। सुप् प्रत्ययाः एकविंशतिः (21) भवन्ति।

**सुप-प्रत्यय-तालिका -**

| **विभक्तिः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | सु (:) | औ | जस् (अः) |
| द्वितीया | अम् | औट् (औ) | शस् (अः) |
| तृतीया | टा (आ) | भ्याम् | भिस् (भिः) |
| चतुर्थी | ङे (ए) | भ्याम् | भ्यस् (भ्यः) |
| पञ्चमी | ङसि (अः) | ओस् (ओः) | आम् |
| षष्ठी | ङस् (अः) | ओस् (ओः) | आम् |
| सप्तमी | ङि (इ) | ओस् (ओः) | सुप् (सु) |

- तिङप्रत्ययाः
- तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्तातांझथासाथांध्वमिड्वहिमहिङ्।। (3/4/78)

एतेऽष्टादश लादेशाः स्युः।।

परिभाषा - धातुभ्यः क्रियापद निर्माणाय येषां प्रत्ययानां प्रयोगः भवति ते तिङ्प्रत्ययाः भवन्ति। तिङ्प्रत्ययाः अष्टादश भवन्ति। प्रथम-नव-प्रत्ययाः परस्मैपदे प्रयुक्ताः भवन्ति। द्वितीय-नव-प्रत्ययाः आत्मनिपदे प्रयुक्ताः भवन्ति।

**तिङन्त-पद-विभाजनम् -**

- 1-परस्मैपदप्रत्यया :- तिप्, तस्, झि, सिप्, थस्, थ, मिप, वस्, मस्।

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | तिप् (ति) | तस् (तः) | झि (अन्ति) |
| मध्यमपुरुषः | सिप् (सि) | थस् (थः) | थ |
| उत्तमपुरुषः | मिप् (मि) | वस् (वः) | मस् (मः) |

- 2-आत्मनेपदप्रत्ययाः - त आताम् झ, थास् आथाम् ध्वम् इट् वहि महिङ्।

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | त | आताम् | झ (अन्त) |
| मध्यमपुरुषः | थास् (थाः) | आथाम् | ध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | इट् (इ) | वहि | महिङ् (महि) |

**विशेष :- उभयपदिनः धातवः**

येभ्यः धातुभ्यः परस्मैपदीय आत्मनेपदीय धातूरूपाणां निर्माणं भवति। ते उभयपदिनः धातवः भवन्ति।

यथा- नी, धृ, पच्, भज्, याच आदि धातवः उभय पदिनः भवन्ति।

**उदाहरणम्**

परस्मैपद धातु रूपाणि

**वर्तमान-लट् - 'पच्'**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | पचति | पचतः | पचन्ति |
| मध्यमपुरुषः | पचसि | पचथः | पचथ |
| उत्तमपुरुषः | पचामि | पचावः | पचामः |

आत्मनेपद धातु रूपाणि

**वर्तमान-लट्**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | पचते | पचेते | पचन्ते |
| मध्यमपुरुषः | पचसे | पचेथे | पचध्वे |
| उत्तमपुरुषः | पचे | पचावहे | पचामहे |

**अभ्यासप्रश्नाः**

**वस्तुनिष्ठप्रश्नाः**

**प्रश्न 1- अधोलिखितेषु पदेषु समुचितविकल्पं चित्वा उत्तरत -**

(क) माहेश्वरसूत्राणि सन्ति -

(I) त्रयोदश, (II) चतुर्दश, (III) दश, (IV) अष्ट

(ख) माहेश्वरसूत्राणि कुतः आगतानि -

(I) पाणिनेः, (II) महेश्वरात्, (III) कात्यायनात्, (IV) पतञ्जलेः

(ग) 'अण्'-प्रत्याहारे कति वर्णाः -

(I) चत्वारः, (II) द्वौ, (III) त्रयः, (IV) एकः

(घ) सर्वाणि व्यञ्जनानि कस्मिन् प्रत्याहारे भवन्ति -

(I) रवर्, (II) चर्, (III) अच्, (IV) हल्

(ङ) वर्गाणां तृतीयवर्णाः कस्मिन् प्रत्याहारे भवन्ति ?

(I) झष्, (II) अच्, (III) जश्, (IV) इण्

**प्रश्न- 2 रिक्त-स्थानानि पूरयत -**

(क) 'अल्' प्रत्याहारे सर्वे स्वराः ........................ च भवन्ति ?

(ख) 'अच्' प्रत्याहारे समस्त ................भवन्ति ?

(ग) 'ख' 'फ' 'छ' 'ठ' 'थ', 'च' 'ट' 'त' इत्यादयः वर्णाः .......... प्रत्याहारे सन्ति ?

(घ) 'ञ ................. नम्' सूत्रं पूरयत ?

(ङ) द्विवारं ................. प्रत्याहारः भवति ?

**प्रश्न- 3 सत्यकथनानां पुरतः 'आम्', असत्यकथनानां 'पुरतः' 'न' इति लिखत -**

(क) शर् प्रत्याहारे सप्तवर्णाः सन्ति।

(ख) 'ह' वर्णः 'शल्' प्रत्याहारे भवति ?

(ग) माहेश्वरसूत्रेषु 'ह' इति वर्णः द्विवारम् उच्चरितः ?

(घ) माहेश्वर सूत्राणाम् अन्त्यवर्णः - इतसंज्ञकः भवति ?

(ङ) नटराजराजः दशमञ्चवारं ढक्कां ननाद ?

**प्रश्न- 4 एकपदेन उत्तरत -**

(क) प्रत्याहाराः कति भवन्ति।

(ख) इत् संज्ञा केन सूत्रेण भवति।

(ग) 'एच' प्रत्याहारे कति वर्णाः सन्ति।

(घ) 'ङम्' प्रत्याहारीयवर्णान् लिखत।

(ङ) 'यण्' प्रत्याहारे के वर्णाः सन्ति।

**प्रश्न- 5 युग्ममेलनं कुरुत -**

| | |
|---|---|
| (क) शिवः | 1. स्वराः |
| (ख) हल् | 2. माहेश्वराणि |
| (ग) अचः | 3. द्विवारम् |
| (घ) इ, उ, ऋ, लृ | 4. व्यञ्जनानि |
| (ङ) अण् प्रत्याहारः | 5. इक् |

**अतिलघूत्तरीयाः प्रश्नाः**

एक वाक्येन उत्तराणि लिखत।

1. 'छव्' - प्रत्याहारीय वर्णान् लिखत ?
2. 'वश्' प्रत्याहारे कति वर्णाः सन्ति ?
3. 'चय्' प्रत्याहारे के वर्णाः ?
4. 'जभ्' प्रत्याहारे के वर्णाः ?
5. 'शल्' प्रत्याहारीयान् वर्णान् लिखत ?

**लघूत्तरीयाः प्रश्नाः**

1. 'अच्' प्रत्याहारे के वर्णाः?
2. 'अम्' प्रत्याहारीवर्णान् लिखत?
3. 'इण्' प्रत्याहारीयान् वर्णान् लिखत?
4. 'यम्' प्रत्याहारे के वर्णाः सन्ति?
5. 'खय्' प्रत्याहारे के वर्णाः?

**दीर्घोत्तरीयाः प्रश्नाः**

1. 'यर्' प्रत्याहारीयवर्णान् लिखत?
2. चतुर्दशमाहेश्वराणि सूत्राणि लिखत?
3. 'अल्' प्रत्याहारे के वर्णाः?
4. 'रल्' प्रत्याहारीयान् वर्णान् लिखत?
5. 'झल्' प्रत्याहारे के वर्णाः?

❖ ❖ ★ ❖ ❖

## तृतीयः अध्यायः

# संस्कृत-वर्णः परिचयः

पाणिनीयशिक्षायां चतुष्षष्ठिः (64) वर्णानां समुल्लेखः दृश्यते -

**त्रिषष्ठिष्चतुष्षष्ठिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः।**
**संस्कृते प्राकृते चापि स्वयं प्रोक्ता स्वयम्भुवा।**
**स्वराः विंशतिरेकश्च स्पर्शनां पञ्चविंशतिः।**
**यादयश्च स्मृह्ध्यष्टौ चत्त्वारश्च यथा स्मृता।**
**अनुस्वारो विसर्गश्च कपौ चाऽपि पराश्रितौ।**
**दुःस्पृष्टश्चेति विज्ञेय लृकारः प्लुत एव च॥**

(पा.शि.श्लो.सं. 3, 4-5)

(क) स्वर-वर्णाः - अ, आ, आ३, इ, ई, ई३, उ, ऊ, ऊ३,
ऋ, ऋह, ऋ३, लृ३ ए, ए३,
ओ, ओ३, ऐ, ऐ३, औ, औ३ = 21

(ख) व्यञ्जनवर्णाः

स्पर्शसंज्ञकवर्णाः कादयोमावसानाः स्पर्शाः

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क् | ख् | ग् | घ् | ङ् | |
| च् | छ् | ज् | झ् | ञ् | |
| ट् | ट् | ड् | ढ् | ण् | |
| त् | थ् | द् | ध् | न् | |
| प् | फ् | ब् | भ् | म् | = 25 |

**अन्तस्थसंज्ञकवर्णा :-**

यणोऽन्तःस्थाः = यण् प्रत्याहारे समाहिताः वर्णाः अन्तस्थसंज्ञकवर्णाः सन्ति।

यण् = य् व् र् ल् = 4

**ऊष्मसंज्ञकवर्णा :-**

'शल् ऊष्माण:' = शल् प्रत्याहारे

समाहिता: वर्णा: ऊष्मसंज्ञक वर्णा: सन्ति।

शल् = श् ष् स् ह्

यमा: = कुं खुं गुं घुं

अनुस्वार: = (-ं)

विसर्ग: = (:)

जिह्वामूलीयौ = (क ख)

उपध्मानीयौ = (प फ)

द्विस्पृष्ट: = ऌ

योग: = 63 + ऌ = 64

## वर्णानां भेदा:

**स्वरभेदा:**

उच्चारणदृष्ट्या स्वराणाम् उच्चता - निम्नता - आधारेण एते त्रिधा विभक्ता:

1. उदात्त: - 'उच्चैरुदात्त:'
2. अनुदात्त: - नीचैरनुदात्त:
3. स्वरित: - समाहार: स्वरित:

**कालभेदा:**

स्वराणाम् उच्चारणकालानुगुणन् एते त्रिधा उच्चारणकालभेदा: विभक्ता:

1. ह्रस्व: - एकमात्राकाल:
2. दीर्घ: - द्विमात्राकाल:
3. प्लुत: - त्रिमात्राकाल:

**विशेष**- ह्रस्वदीर्घप्लुतवर्णा: उदात्तानुदात्तस्वरितभेदेन नवप्रकारकं भवन्ति, एवञ्च प्रत्येकवर्ण: अनुनासिक अननुनासिकत्वाभ्यां भेदेन द्विधा भवति। (द्विप्रकारकं भवति) अत: प्रत्येकवर्णस्य अष्टादशभेदा: भवन्ति।

अष्टादशस्वरभेदविवरणम्

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अ इ उ ऋ ऌ | | अ इ उ ऋ ए ओ ऐ औ | | अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ | |
| | ह्रस्वस्वरभेदा: | | दीर्घस्वरभेदा: | | प्लुतस्वरभेदा: |
| 1 | उदात्तानुनासिक: | 7 | उदात्तानुनासिक: | 13 | उदात्तानुनासिक: |
| 2 | उदात्ताननुनासिक: | 8 | उदात्ताननुनासिक: | 14 | उदात्ताननुनासिक: |
| 3 | अनुदात्ताननुनासिक: | 9 | अनुदात्ताननुनासिक: | 15 | अनुदात्ताननुनासिक: |

| | | |
|---|---|---|
| 4 अनुदात्ताननुनासिकः | 10 अनुदात्ताननुनासिकः | 16 अनुदात्ताननुनासिकः |
| 5 स्वरितानुनासिकः | 11 स्वरितानुनासिकः | 17 स्वरितानुनासिकः |
| 6 स्वरिताननुनासिकः | 12 स्वरिताननुनासिकः | 18 स्वरिताननुनासिकः |

**उच्चारणस्थानभेदाः**

वर्णानाम् उच्चारणस्थानदृष्ट्या इमे भेदाः सन्ति -

1. कण्ठः - (अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः)

   अ, कु = क ख ग घ ङ, हः एतेषां वर्णानां कण्ठस्थानं भवति।

2. तालुः - (इचुयशानां तालुः)

   इ, चु = च छ ज झ ञ, य, श, एतेषां वर्णानांक स्थानं तालुः भवति।

3. मूर्धाः - 'ऋटुरषाणां मूर्धा'

   ऋ, टु = ट ठ ड ढ ण, र, ष, एतेषां वर्णानां स्थानं मूर्धा भवति।

4. दन्ताः - 'लृतुलसानां दन्ताः'

   लृ, तु = त थ द ध न, ल स, एतेषां वर्णानां स्थानं दन्ताः भवन्ति।

5. ओष्ठौः - 'उपूपध्मानीयानामोष्ठौ'

   उ,पु = प फ ब भ म, उपध्मानीय (प फ)

   एतेषां वर्णानां उच्चारण स्थानं ओष्ठौ।

6. नासिका ''ञमङणननां नासिका च'' :- 'ञ, म, ङ, ण, न, एतेषां वर्णानां स्थानं नासिका भवति।

7. कण्ठतालुः - 'एदैतोः कण्ठतालुः'

   ए, ऐ वर्णयोः कण्ठतालुस्थानं भवति।

8. कण्ठौष्ठौ - 'ओदौतोः कण्ठ + औष्ठम्'

   ओ, औ वर्णयोः कण्ठ + ओष्ठस्थानं भवति।

9. दन्तोष्ठौ - 'वकारस्य दन्तोष्ठम्'

10. जिह्वामूलम् - 'जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्'

**आभ्यान्तरप्रयत्नदृष्ट्या वर्णभेदाः**

वर्णानाम् उच्चारणावसरे आभ्यान्तरप्रयत्नदृष्ट्या इमे भेदाः सन्ति -

1. स्पृष्टम्, 2. ईषत्स्पृष्टम्, 3. ईषद्विवृतम्, 4. विवृतम्, 5. संवृतम्।

विशिष्टम् - स्पर्शसंज्ञकवर्णानां स्पृष्ट आभ्यान्तरप्रयत्नः भवति।

अन्तस्थसंज्ञकवर्णानाम् ईषत्स्पृष्टप्रयत्नं भवति

ऊष्मसंज्ञकवर्णानाम् ईषद्विवृतप्रयत्नो भवति।

स्वराणां विवृतप्रयत्नो भवति।

ह्रस्तस्य अवर्णस्य प्रयोगे संवृतप्रयत्नो भवति, परन्तु प्रक्रियादशायां तु विवृतमेव भवति।

**बाह्यप्रयत्नदृष्ट्या वर्णभेदाः :-**

वर्णानाम् उच्चारणकाले बाह्यप्रयत्नदृष्ट्या इमे भेदाः सन्ति :-

1. विवारः, 2. संवारः, 3. श्वासः, 4. नादः, 5. घोषः, 6. अघोषः, 7. अल्पप्राणः 8. महाप्राणः, 9. उदात्तः, 10. अनुदात्तः, 11. स्वरितः

विशेष : ''खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च''

- खर् प्रत्याहारीय वर्णानां विवारः, श्वासः, अघोषाश्च - बाह्यप्रयत्नो भवति।
- ''हशः संवारा नादा घोषाश्च''
- हश् प्रत्याहारीयवर्णानां संवार-नाद-घोषाश्च बाह्यप्रयत्नो भवति।
- वर्गाणां प्रथमतृतीयपञ्चमाक्षराणां यण् प्रत्याहारीय वर्णानामाश्च अल्पप्राणाः
- वर्गाणां द्वितीयचतुर्थ-अक्षराणां यण् प्रत्याहारीयवर्णानामाश्च अल्पप्राणाः विद्यन्ते।

**आभ्यान्तरबाह्यप्रयत्नज्ञानार्थकं कोष्ठकम्-**

| आ.प्र. | स्पृष्टाः | | | ईषत्स्पृष्टाः | ईषद्विवृताः | विवृताः | | संवृताः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| संज्ञाः | स्पर्शाः | | | ईषत्स्पृष्टाः | ऊष्माणः | | स्वराः | |
| वर्णाः | क ख<br>च छ<br>ट ठ<br>त थ<br>प फ | ग ङ<br>ज ञ<br>ड ण<br>द न<br>ब म | घ<br>झ<br>द<br>ध<br>भ | य<br>व<br>र<br>ल | श<br>ष<br>स | ह | अ इ उ<br>ऋ लृ ए<br>ओ ऐ औ | ह्रस्वऽकारः<br>प्रयोगे |
| बाह्यप्रयत्नाः | अ.प्रा.+<br>म.प्रा.<br>विवाराः<br>श्वासाः<br>अघोषाः | अल्प-<br>प्राणाः<br>संवाराः<br>नादाः<br>घोषाः | म.प्रा.<br>संवाराः<br>नादाः<br>घोषाः | अल्पप्राणाः<br>संवाराः<br>नादाः<br>घोषाः | म.प्रा.<br>विवाराः<br>श्वासाः<br>अघोषाः | म.प्रा.<br>सं.<br>ना.<br>घो. | उदात्त-अनुदात्त स्वरिताः। | |

**अभ्यासप्रश्नाः**

**वस्तुनिष्ठप्रश्नाः**

**प्रश्न -1 अधोलिखितेषु पदेषु समुचितविकल्पं चित्वा उत्तरत -**

(क) स्वरवर्णानां संख्या भवति-

(I) अष्टादश (II) नवदश

(III) विंशतिः (IV) एकविंशतिः

(ख) स्पर्शसंज्ञकवर्णानां संख्या वर्तते-

(I) पञ्चाशत् (II) त्रिंशत्

(III) पञ्चविंशति (IV) विंशति:

(ग) अधस्तनेषु मूर्धन्यवर्ण: भवन्ति -

(I) 'क' (II) 'च'

(III) 'ट' (IV) 'प'

(घ) 'क' इत्यस्य वर्णस्य उच्चारणस्थानमस्ति -

(I) तालव्य: (II) कण्ठ्य:

(III) दन्त्य: (IV) ओष्ठ्यौ

(ङ) आभ्यान्तरप्रयत्नो भवति ?

(I) पञ्चधा (II) त्रिधा

(III) द्विधा (IV) एतेषु कोऽपि नास्ति

**प्रश्न -2 एकपदेन उत्तरत -**

(क) दीर्घवर्णे कति मात्रा: ?

(ख) 'उ' वर्णस्य उच्चारणस्थानं किम् ?

(ग) 'ए' वर्णस्य -उच्चारणस्थानं किम् ?

(घ) बाह्यप्रयत्नस्य कति भेदा: ?

(ङ) 'अच्' इत्यस्य का संज्ञा ?

**प्रश्न -3 सत्यकथनानां समक्षं 'आम्' असत्य कथनानां 'समक्षं' 'न' इति लिखत -**

(क) स्पर्श संज्ञकवर्णानां स्पृष्ट-आभ्यान्तरप्रयत्न: भवति ?

(ख) 'ख' इति वर्णस्य अल्पप्राणो विद्यते ?

(ग) ह्रस्व-अकारस्य प्रयोगे संवृतप्रयत्नोऽस्ति ?

(घ) शल् प्रत्याहारीयवर्णानां महाप्राणप्रयत्नो विद्यते ?

(ङ) ऋतुरषाणां तालु: ?

**प्रश्न -4 कोष्ठकात् शुद्धम् उत्तरं चित्वा रिक्त स्थानानि पूरयत -**

(क) स्वरा: विंशतिरेकश्च ......................... पञ्चविंशति:। (अन्तस्थानां/स्पर्शानां)

(ख) अकुहविसर्जनीयानां ..................। (मूर्धा/कण्ठ:)

(ग) दृश: संवारा .....................घोषाश्च । (नादा/विवार:)

(घ) 'भ' इति वर्णस्य उच्चारणस्थानं .................भवति। ( तालु:/औष्ठौ)

(ङ) स्वराणां ................ प्रयत्नो भवति। ( स्पृष्ट:/विवृत)

**प्रश्न -5 युग्मं योजयत -**

(क) दीर्घवर्ण: 1. धकार:

(ख) सकार: 2. द्विमात्राकाल:

| | | | |
|---|---|---|---|
| (ग) | स्पर्शसंज्ञकवर्णः | 3. | यण् प्रत्याहारीयवर्णाः |
| (घ) | तालव्यस्थानीयः | 4. | दन्त्यस्थानीयः |
| (ङ) | अन्तस्थसंज्ञकः | 5. | यकारः |

**अतिलघूत्तरीयाः प्रश्नाः**

**अधोलिखितप्रश्नानां उत्तराणि एकवाक्येन लिखत-**

1. कण्ठ्यवर्णाः के ?
2. तालव्यवर्णान् लिखत ?
3. आभ्यान्तरप्रयत्नः कतिधा भवति ?
4. वर्गस्य केषां वर्णानां महाप्राणः भवति ?
5. वकारस्य उच्चारणस्थानं किम् ?

**लघूत्तरीयाः प्रश्नाः**

**अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-**

1. स्पर्शसंज्ञकवर्णान् लिखत ?
2. स्वराणाम् एकविंशति भेदान् लिखत?
3. के आभ्यान्तरप्रयत्नाः ?
4. बाह्यप्रयत्नानां नामानि लिखत ?
5. उच्चारणकालभेदान् लिखत ?

**दीर्घोत्तरीयाः प्रश्नाः**

1. अष्टादशस्वरभेद-विवरण-तालिकां प्रदर्शयत ?
2. आभ्यान्तरबाह्यप्रयत्नयोः तालिकां प्रदर्शयत ?
3. आभ्यान्तरप्रयत्नः कतिधा भवति ?
4. वर्गस्य केषां वर्णानां महाप्राणः भवति ?
5. वकारस्य उच्चारणस्थानं किम् ?

❖ ❖ ★ ❖ ❖

# चतुर्थः अध्यायः
# लिङ्ग-परिचयः

संस्कृतव्याकरणे अत्यन्तोपयोगिनां केषाञ्चन् शब्दानां विषये लिङ्गनिर्देशनं विद्यते। संस्कृते लिङ्गत्रयं तद्यथा- पुंल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसकलिङ्गञ्च।

**पुंल्लिङ्गाधिकारपरिचयः**

छञ्, अप्, घ, अच् प्रत्ययान्तशब्दाः पुंल्लिङ्गे भवन्ति। यथा-रामः, पाकः त्यागः। करः, गरः। विस्तरः, गोचरः। चयः जयः इत्यादयः।

विशेष- रामशब्दवत् ये ह्रस्व-अकारान्तशब्दाः सन्ति ते पुल्लिङ्गे । नङ् प्रत्ययान्तशब्दाः पुंल्लिङ्गे प्रयुक्ता- यथा-यज्ञः, यत्नः विश्नः, प्रश्नः इत्यादयः ।

विशेष :- याच्या शब्दः तु स्त्रीलिङ्गे भवति।

धि- प्रत्ययान्तघुसंज्ञकशब्दाः पुँल्लिङ्गे भवन्ति, यथा -आधिः, निधिः, उदधिः इत्यादयः। परञ्च इषुधि शब्दः स्त्रीलिङ्गे एव भवति। देवः, असुरः, आत्मा, स्वर्गः, गिरिः समुद्रः, नखः केशः, दन्तवाचकशब्दाः, स्तनः, भुजः, कण्ठः खड्गः, शरः, पङ्कश्च एवं एतेषां पर्याय शब्दा अपि पुँल्लिङ्गाः भवन्ति। यथा दशनः, शिरोरुहः इत्यादयः। ग्रीवा शब्दः तु स्त्रीलिङ्गे पठितः। मनन्नन्ताः चर्मन् आदि शब्दान् विहाय प्रायः नकारान्तशब्दाः पुँल्लिङ्गाः भवन्ति, - यथा-राजा तक्षा, युवा, इत्यादयः।

क्रतुः, पुरुषः, कपोलः, गुल्फः, मेघः इत्यादि शब्दाः एवञ्च एतेषां शब्दानां पर्यायवाचकशब्दा अपि पुँल्लिङ्गाः भवन्ति। यथा - अध्वरः, नरः, गण्डः, प्रपदः नीरदः -इत्यादयः ।

परञ्च मेघस्य पर्यायशब्दः अभ्रः नपुंसकलिङ्गो विद्यते।

उकारान्तशब्दाः पुँल्लिङ्गे भवन्ति। यथा- प्रभुः, इक्षुः, आदयः । परञ्च हनुः करेणुः, धेनुः, रज्जुः, कुहुः, सरयुः, तनुः, रेणुः प्रियङ्गुश्चादि शब्दाः स्त्रीलिङ्गे भवन्ति । अस्यैव द्वितीयोऽपवादोऽयमस्ति-श्मश्रु, जानुः, वसुः, (धनवाची) स्वादुः, अश्रुः जतुः, त्रपुः, तालुः आदयः शब्दाः नपुंसकलिङ्गे भवन्ति। परञ्च देवतार्थकः व सुशब्दः तु पुँल्लिङ्गाः।

येषां शब्दानाम् -अन्ते 'रु', तथा 'तु, वर्णे संयुज्येते ते शब्दाः पुँल्लिङ्गाः भवन्ति। यथा- मेरुः गुरुः, सेतुः केतुरित्यादयः। अस्यैवापवादोऽस्ति-यत् दारुः, कसेरुः, जतुः, वस्तुः, मस्तुः, आदिशब्दाः नपुंसकलिङ्गे पठिताः सन्ति। सक्तुः, शब्दः पुँल्लिङ्गनपुंसकलिङ्गयोः विद्यते।

ककारोपधायुक्ताः अकारान्तशब्दाः पुँल्लिङ्गाः भवन्ति। यथा- स्तवकः, कल्कः इत्यादयः।

अस्यापवादः - चिबुकम् शालूकम्, प्रातिपदिकम्, अंशुकम्, उल्मुकशब्दाः नपुंसके भवन्ति।

टकारोपधायुक्ता अकारान्तशब्दाः पुँल्लिङ्गाः सन्ति। यथा- घटः, पटः इत्यादयः।

अस्यापवादः - किरीट, मुकुट, ललाट, वटादि-शब्दाः नपुंसकलिङ्गे पठिताः सन्ति। तथा कुट्, कूट, कपट, कपाट, कर्पट,नट, निकट, कीटादिशब्दाः पुँल्लिङ्गनपुंसकलिङ्गयोः भवन्ति।

णकारोपधायुक्ता अकारान्त पुँल्लिङ्गशब्दाः यथा- गुणः, गणः, पाषाणः, आदयः। परञ्च ऋण, लवण, पर्ण, तोरण, उष्णादि शब्दाः नपुंसकलिङ्गे भवन्ति। तथा काषार्पाणादि शब्दाः पुँल्लिङ्ग-नपुंसकलिङ्गयोः भवन्ति।

थकारोपधायुक्ता अकारान्तः पुँल्लिङ्गशब्दाः यथा- रथः, पथः, ग्रन्थः, श्रन्थः। परञ्च-अस्यापवादाः- काष्ठपृष्ठसिक्थोक्थानि नपुंसकलिङ्गे भवन्ति। दिगर्थकः काष्ठा शब्दः स्त्रीलिङ्गे प्रयुक्तो भवति । तीर्थ-यूथ- प्रोथ-गाथा-शब्दाः पुँल्लिङ्गनपुंसकलिङ्गयोः भवन्ति ।

नोपधोऽदन्तशब्दाः पुंल्लिङ्गाः भवन्ति। यथा- इन, फेन आदयः । अपवादाः -जघन- अजिन-तुहिन-कानन-वन- वृजिन-विपिन-वेतन-शासन-सोपान-मिथुन-श्मशान-रत्न-निम्न-चिह्न- आदिशब्दाः नपुंसकलिङ्गे पठिताः । तथैव मान-यान-अभिधान-मलिन- पुलिन-उद्यान-शयन-आसन-स्थान-चन्दन-आलान-समान-भवन-वसन-सम्भावन-विभावन-विमानादिशब्दाः पुँल्लिङ्गनपुंसकलिङ्गयोः भवन्ति।

पकारोपधायुक्ता अकारान्तपुंल्लिङ्गशब्दाः।

यथा- यूपः, दीपः, सर्पः आदयः। अत्रापवादाः-पाप-रूप-उडुप-तल्य-शिल्प-पुष्प-शष्प- (बालतृणम्) -समीप-अन्तरीप-आदिशब्दाः नपुंसके भवन्ति। शूर्प-कुतप-कुणप-द्वीप- विटपादिशब्दाः पुंल्लिङ्गनपुंसकलिङ्गयोः भवन्ति।

भोपधोऽकारान्तः पुंल्लिङ्गशब्दाः -

यथा- स्तम्भः, कुम्भः इत्यादयः।

अपवादः - तलभं, नपुंसकलिङ्गे भवति। जृम्भं तु पुंल्लिङ्गनपुंसकलिङ्गयोः भवति।

मकारोपधायुक्ता अकारान्तशब्दाः पुंल्लिङ्गे भवन्ति।

यथा - सोमः भीमः आदयः । अस्यापवाद-सिध्म, रुक्म, युध्म, इध्म, गुल्म, अध्यात्म, कुङ्कम-शब्दाः नपुंसके भवन्ति । संग्राम, दाडिम, कुसुम, अश्रम, क्षेम, क्षौम, होम, उद्दामानि शब्दाः पुंल्लिङ्गनपुंसकयोः भवन्ति।

योपधोऽदन्तः पुंल्लिङ्गशब्दाः ।

यथा- समयः, हयः । अपवादाः - किसलय-हृदय- इन्द्रिय, उत्तरीय, आदिशब्दाः नपुंसके पठिताः। तथैव गोमय, कषाय, मलय, अन्वय, अव्यय-शब्दाः पुंल्लिङ्गनपुंसकलिङ्गयोःभवन्ति।

रोपधोऽकारान्तशब्दाः पुंल्लिङ्गा ।

यथा-क्षुरः, अङ्कुरः आदयः। अस्यापवादाः-द्वार, अग्रस्फार, तक्र, वक्र, वप्र, क्षिप्र, क्षुद्र, नार, तीर, दूर, कृच्छ, रन्ध्र, आश्र, स्वभ्र, भीर, गभीर, क्रूर, विचित्र, केयूर, केदार, उदर, अजस्र, शरीर, कन्दर, मन्दार, पञ्जर, अजर, जठर, अजिर, वैर, चामर, आदिशब्दाः नपुंसकलिङ्गे भवन्ति।

शुक्रशब्दस्तु देवताभिन्नेऽर्थे क्लीबे प्रयुज्यते। चक्र, वज्र, अन्धकार, सार, अवार, पार, क्षीर, तोमर, शृङ्गार, भृङ्गार, मन्दार, उशीर, तिमिर, शिशिर, शब्दाः पुंल्लिङ्गनपुंसकलिङ्गयोः भवन्ति।

**षोपधोऽकारान्ताः पुँल्लिङ्गाः**

यथा- वृषः, वृक्षः इत्यादयः । अपवादः शिरीष, ऋषीष, अम्बरीष, पीयूष, पुरीष, आदिशब्दाः नपुंसकालिङ्गे भवन्ति। सकारोपधायुक्ता अकारान्तशब्दाः पुंल्लिङ्गा भवन्ति। यथा- वत्सः, वायसः आदयः। अपवादः - पनस, बिस, बुस, साहस, आदिशब्दाः नपुंसके पठिताः। तथा-चमस, अंस, रस, निर्यास, उपवास, कार्पास, वास, मास, कास, कांस, मांसादिशब्दाः पुंल्लिङ्गनपुंसकलिङ्गयोः भवन्ति।

रश्मि - दिवसशब्दौ त्तपर्यायवाचकशब्दाः पुंसि भवेत् । रश्मिर्मयूखः, दिवसो घस्तः, अपवादाः दीधिति, स्त्रियाम् । दिनाहिनी नपुंसकलिङ्गे।

परिमाणवाचकशब्दाः पुंसि भवन्ति -कुडवः, प्रस्थः । द्रोण -आठकौ नपंसुके पुल्लिङ्गे च भवतः। खारी, मानिका च स्त्रीलिङ्गे।

दार, अक्षत, लाज, असु, एते शब्दाः बहुवचनान्तत्वं पुंल्लिङ्गत्व च।

मरुत्, गुरुत्, तरत, ऋत्विग्, ऋषि, राशि, दृति, ग्रन्थि, कृमि, वलि, कौलि, रवि, कवि, मुनि, गज, अंश, वंश, पुरोडाश, मथिन्, पथिन् अतिथि, सारथि, पाणि, समुद्र, इत्यादयः शब्दाः पुँल्लिङ्गे भवन्ति।

**स्त्रीलिङ्गाधिकारः**

ऋकारान्ता मातृन्दुहितृस्वसृ-यातृ-ननान्दृ-एते पञ्चैव स्त्रीलिङ्गा।

क्तिन्प्रत्ययान्ताः तल्प्रत्ययान्ताश्चशब्दाः तथा आबन्ताः ङीपङीबन्ता ऊङन्ताश्च शब्दाः स्त्रीलिङ्गे पठिताः। कृतिः, भूतिः, ब्राह्मणता, देवता, रमा, कुमारी, कुण्डोहनी, कुरू, इत्यादयाः।

गो, मणि, यष्टि, मुष्टि, पाटलि, वस्ति, शाल्मलि, त्रुटि, मसि, मरीचि, मृत्यु, शीधु, कर्कन्धुः, रेणुः, योनि, उर्मि, तिथि इषु बाहु, इत्यादयः शब्दाः पुंल्लिङ्गस्त्रीलिङ्गयोः प्रयुज्यन्ते। समुनस् शब्दस्तु देवार्थवाचकः पुँल्लिङ्ग। तथा पुष्पार्थवाचकः नपुंसकस्त्रीलिङ्गयोः प्रयुज्यते। भूमि, विद्युत, सरित्, लता, वनिता, आदिशब्दानां पर्यायशब्दा अपि स्त्रियामेव भवन्ति।

चमू, ग्लानि, लक्ष्मी, श्री, विंशति, त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षष्ठि, सप्तति, अशीति, नवति, भास, स्रज, दिश्, उष्णिक्, उपानह, प्रावृट्, कटि, नाड्ी, रुचि, नाली, रात्रि, प्रतिपद् आपद्, विपद्, धुर, धूलि, केलि, वलि, क्षुध्, मुद्, समधि्, आशिष्, पुर्, द्वार, अप् (बहुवचनान्तः) वाक् यवागू, सीमन्, नौ, याच्ञा एते शब्दाः स्त्रीलिङ्गे पठिताः।

**नपुंसकलिङ्गाधिकारः**

भावार्थकः ल्युट् प्रत्यन्तः निष्ठा-प्रत्ययान्ताः-तद्धित-ष्यञ्-प्रत्ययान्ताः तथा भार्वकर्म निमित्तक यत्-य-ढक्-अञ्-अण्-वुञ्-छप्रत्ययान्ताश्च शब्दाः नपुंसकलिङ्गे भवन्ति। यथा-हसनम्, शयितम्, शुक्लत्वम्, शौक्ल्यम्, स्तेयम्, सख्यम्, कापेयम्, आधिपत्यम्, औष्ट्रम्, द्वैहायनं, पितापुत्रकम्, अच्छावाकीयम्, इत्यादयः। अव्ययीभावसमासान्तशब्दाः नपुंसकाः भवन्ति।

यथा- अधिस्त्रि, उपकुम्भम्, उपगङ्गम्, उपगङ्गम्-इत्यादयः। एकवद्भावन्तो द्वन्द्वाः शब्दाः नपुंसकलिङ्गे भवन्ति। इसन्ता, उसन्ताश्च शब्दाः नपुंसके भवन्ति। यथा-हविः, धनुः - आदयः। अपवादः-अर्चिः स्त्रियां नपुंसके च भवति। छदिः - तु स्त्रियाम्-एव।

मुख, नयन, लोह, वन, मांस, रुधिर, जल, धन, अन्न, एते शब्दाः तथा एतेषां पर्यायशब्दाः

नपुंसकलिङ्गे भवन्ति। यथा-मुखम्-आननम्। नयनं-लोचनम्। लोहं-कालम्। वनं-गहनम्। मांसम्-आमिषम्, रुधिरं-रक्तम्। विवरं -विलम्। जलं-वारि, हलं - लाङ्गलम्। धनं-द्रविणम् । अन्नम् - अशनम इत्यादया:। अत्रापवाद: - अटवी शब्दा: तु स्त्रीलिङ्गे प्रयुक्त:।

लोपधोऽकारान्ता: शब्दा: नपुंसकलिङ्गा: भवन्ति। यथा-कुलं, कूलं, स्थलम् इत्यादय:। अत्रापवाद: - तूल, उपल, मङ्गल, शाल, कम्बल, तल, मुसल, देवल, वृषल, शब्दा: तु पुँल्लिङ्गे एव भवन्ति। तथा शील, मूल, मंङ्गल, शाल, कमल, तल, मृणाल, बाल, विडाल, शूल एते शब्दा: पुँल्लिङ्गनपुंसकलिङ्गयो: भवन्ति। संख्यावाचक शतादि: शब्दा: नपुंसकम्।

अत्रापवाद: - कोटिशब्द: स्त्रीलिङ्गे भवति।

मन्प्रत्ययान्ता द्वि-अच्का: शब्दा: नपुंसकलिङ्गे भवन्ति। यथा- वर्म, चर्म, इत्यादय:। अत्रापवाद: ब्रह्मन् शब्द: पुँल्लिङ्गनपुंसकलिङ्गयो: भवति। असन्तो द्वि-अच्क: शब्दा: नपुंसकलिङ्गे प्रयुज्यन्ते। यथा-यश:, मन:, तप:, इत्यादय:।

त्रान्तशब्दो नपुंसकं भवति। यथा- पत्र, छत्र, नपुंषका: । यात्रा, मात्रा, बरत्रा, द्रंष्ट्रा, शब्दा: स्त्रीलिङ्गे भवन्ति। परञ्च भृत्र, अमित्र, छात्र, पुत्र, मन्त्र वृत्र, मेढ्र, उष्ट्र, शब्दा: पुंल्लिङ्गे एव भवन्ति। तथा पत्र, पात्र, पवित्र, सूत्र, छत्र, एते शब्दा: पुंल्लिङ्गनपुंसकलिङ्गयो: भवन्ति।

बल, कुसुम, शुल्ब, पत्तन, रण, एते शब्दा: तथा एतेषां शब्दानां पर्यायशब्दा: नपुंसकलिङ्गे प्रयुज्यन्ते। यथा- बलं -वीर्यम्। कुसुमं पुष्पम् -इत्यादय:। अत्रापवाद:- आदवसंग्रामौ पुंसि।

फल जातिवाची शब्दो नपुंसकं भवति। यथा- आमलकम्, आम्रम् इत्यादय:।

## वचनज्ञानम्

**एकवचनेप्रयुक्ताशब्द:**

1. एक: पुंल्लिङ्गे
   एका स्त्रीन
   एकम् नपुंसकलिङ्गे
2. अव्ययीभावसमासपदे
   एकवचनं भवति
   यथा -यथाशक्ति:, उपगङ्गम्, उपशरदम्, आदय:।

**द्विवचनेप्रयुक्ता: शब्दा**

1. उभ शब्द:
   (उभौ)
2. द्वि शब्द:
   द्वि (द्वौ) पुल्लिङ्गे
   (द्वे) स्त्रीलिङ्गे
   (द्वे) नपुंसकलिङ्गे
   इत्यादय:

**बहुवचने प्रयुक्ताः शब्दाः**

1. त्रि शब्दः
   (त्रयः) पुंल्लिङ्गे
   (तिस्रः) स्त्रीलिङ्गे
   (त्रीणि) नपुंसकलिङ्गे
2. अप शब्दः
   (आपः)
3. चतुर् शब्दः
   (चत्वारः) पुंल्लिङ्गे
   (चतस्रः) स्त्रीलिङ्गे
   (चत्वारि) नपुंसकलिङ्गे
4. पञ्च
   षड्
   सप्त
   अष्ट
   नव
   दश इत्यादयः संख्यावाचशब्दाः बहुवचने भवन्ति।
   विशेष :- उभय शब्दे द्विवचनं नास्ति।
   उभयः - उभये।

**सङ्ख्या**

सङ्ख्या एकतः चतुः पर्यन्तम् त्रिषु लिङ्गेषु भवन्ति।

यथा -

| सङ्ख्या | पुंल्लिङ्गे | स्त्रीलिङ्गे | नपुंसकलिङ्गे |
|---|---|---|---|
| 1 | एकः | एका | एकम् |
| यथा- | एकः बालकः । | एका बालिका । | एकम् फलम्। |
| 2 | द्वौ | द्वे | द्वे |
| यथा- | द्वौ बालकौ । | द्वे बालिके । | द्वे फले |
| 3 | त्रयः | तिस्रः | त्रीणि फलानि |
| यथा- | त्रयः बालकः । | तिस्रः बालिकाः । | त्रीणि फलानि। |
| 4 | चत्वारः | चतस्रः | चत्वारि |
| यथा- | चत्वारः बालकः । | चतस्रः बालिकाः । | चत्वारि फलानि। |
| 5 | पञ्च | पञ्च | पञ्च |
| यथा- | पञ्च बालकः । | पञ्च बालिकाः । | पञ्च फलानि । |

ध्यातव्यम् - एकतः चतुः पर्यन्तमेव सङ्ख्यासु लिङ्गभेदः भवति। पञ्चतः त्रिषुलिङ्गेषु

रूपाणि समानमेव भवन्ति।

**सङ्ख्याः**

1. एकम्
2. द्वे
3. त्रीणि
4. चत्वारि
5. पञ्च
6. षट्
7. सप्त
8. अष्ट
9. नव
10. दश
11. एकादश
12. द्वादश
13. त्रयोदश
14. चतुर्दश
15. पञ्चदश
16. षोडश
17. सप्तदश
18. अष्टादश
19. नवदश
20. विंशतिः
21. एकविंशतिः
22. द्वाविंशातिः
23. त्रयोविंशतिः
24. चतुर्विंशतिः
25. पञ्चविंशतिः
26. षड्विंशतिः
27. सप्तविंशतिः
28. अष्टाविंशतिः
29. नवविंशतिः
30. त्रिंशत्
31. एकत्रिंशत्
32. द्वात्रिंशत्
33. त्रयस्त्रिंशत्
34. चतुस्त्रिंशत्
35. पञ्चत्रिंशत्
36. षट्त्रिंशत्
37. सप्तत्रिंशत्
38. अष्टात्रिंशत्
39. नवत्रिंशत्
40. चत्वारिंशत्
41. एकचत्वारिंशत्
42. द्विचत्वारिंशत्
43. त्रिचत्वारिंशत्
44. चतुश्चत्वारिंशत्
45. पञ्चचत्वारिंशत्
46. षटचत्वारिंशत्
47. सप्तचत्वारिंशत्
48. अष्टचत्वारिंशत्
49. नवचत्वारिंशत्
50. पञ्चाशत्
51. एकपञ्चाशत्
52. द्विपञ्चाशत्
53. त्रिपञ्चाशत्
54. चतुश्पञ्चाशत्
55. पञ्चपञ्चाशत्
56. षट्पञ्चाशात्
57. सप्तपञ्चाशत्
58. अष्टपञ्चाशत्
59. नवपञ्चाशत्
60. षष्टिः
61. एकषष्टिः
62. द्विषष्टिः
63. त्रिषष्टिः
64. चतुःषष्टिः
65. पञ्चषष्टिः
66. षट्षष्टिः
67. सप्तषष्टिः
68. अष्टषष्टिः
69. नवषष्टिः
70. सप्ततिः
71. एकसप्ततिः
72. द्विसप्ततिः
73. त्रिसप्ततिः
74. चतुस्सप्ततिः
75. पञ्चसप्ततिः
76. षट्सप्ततिः
77. सप्तसप्ततिः
78. अष्टसप्ततिः
79. नवसप्ततिः
80. अशीतिः
81. एकाशीतिः
82. द्वयशीतिः
83. त्रयशीतिः
84. चतुरशीतिः

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 85. | पञ्चाशीतिः | 91. | एकनवतिः | 97. | सप्तनवतिः |
| 86. | षडशीतिः | 92. | द्विनवतिः | 98. | अष्टनवतिः |
| 87. | सप्ताशीतिः | 93. | त्रिनवतिः | 99. | नवनवतिः |
| 88. | अष्टाशीतिः | 94. | चतुर्नवतिः | 100. | शतम् |
| 89. | नवाशीतिः | 95. | पञ्चनवतिः | | |
| 90. | नवतिः | 96. | षण्णवतिः | | |

## अभ्यासप्रश्नाः

**वस्तुनिष्ठप्रश्नाः**

**प्रश्न- 1 अधोलिखितेषु पदेषु समुचितविकल्पं चित्वा उत्तरत -**

(क) घञ् प्रत्ययान्तशब्दे लिङ्गः भवति -

(I) स्त्रीलिङ्गः (II) पुंल्लिङ्गः

(III) नपुंसकलिङ्गः (IV) एतेषु कोऽपि न

(ख) उभयशब्दे किं वचनं न भवति -

(I) एकवचनम् (II) द्विवचनम्

(III) बहुवचनम् (IV) एतेषु कोऽपि नास्ति

(ग) अव्ययीभावसमासपदे वचनं भवति -

(I) द्विवचनम् (II) एकवचनम्

(III) बहुवचनम् (IV) एतेषु कोऽपि न

(घ) ल्युट् प्रत्यायान्तशब्दो भवति -

(I) पुँल्लिङ्गः (II) स्त्रीलिङ्गः

(III) नपुंसक लिङ्गः (IV) कोऽपि न

(ङ) परिमाणवाचक शब्दाः भवन्ति ?

(I) पुंल्लिङ्गाः (II) नपुंसकलिङ्गाः

(III) स्त्रीलिङ्गाः (IV) उपरोक्ता सर्वे

**प्रश्न- 2 रिक्त-स्थानानि पूरयत -**

(क) पकारोधायुक्त ..................शब्दाः ?

(ख) अव्ययीभावसमासान्त ................भवन्ति ?

(ग) एकवचने प्रयुक्तः शब्दः ..................... भवति ?

(घ) कि-प्रत्ययान्तघुसंज्ञक शब्दाः ................. भवति ?

(ङ) रामशब्दे ......................... धातुः अस्ति ?

**प्रश्न- 3 सत्यकथनानां समक्षम् 'आम्' असत्यकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत -**

(क) रमा शब्दः पुँल्लिङ्गः अस्ति।

(ख) राजा-शब्दः स्त्रीलिङ्गः अस्ति ।

(ग) अकारोपधायुक्तः सोमशब्दः पुँल्लिङ्ग ।

(घ) फलजातिवाची शब्दाः नपुंसकलिङ्गाः भवन्ति।

(ङ) द्वि शब्दः बहुवचने प्रयुज्यते।

**प्रश्न- 4 युग्ममेलनं कुरुत -**

| | | | |
|---|---|---|---|
| (क) | शिरीष | 1. | नवनवतिः |
| (ख) | घटशब्दः | 2. | नपुंसकः |
| (ग) | देवताशब्दः | 3. | अंधकारः |
| (घ) | एकोनविंशति | 4. | पुँल्लिङ्गः |
| (ङ) | तिमिरः | 5. | स्त्रीलिङ्गः |

**दीर्घोत्तरीयाः प्रश्नाः**

1. एकतः विंशति पर्यन्तं संख्यां लिखत ?
2. कि-प्रत्ययान्तघुसंज्ञकशब्दानां सोदाहराणि विवेचनं कुरुत ?
3. नोपधोऽकारान्तशब्दानाम् उदाहरणानि लिखत ?
4. नकारान्तादन्ताः दशशब्दान् विलिख्य किमपि एकशब्दस्य सर्वविभक्तिषु शब्दरूपाणि लिखत?

❖ ❖ ★ ❖ ❖

## पञ्चमः अध्यायः

# लकार-परिचयः

संस्कृतव्याकरणे दशलकारेषु धातुरूपाणि भवन्ति। अत्र पाठ्यक्रमानुसारेण निम्नलिखिताः लकाराः - (लट् -लिट्-लुट्-लृट-लेट्-लोट् लङ्-लिङ्-लुङ्-लृङ्)

1. **लट्-लकारः** - वर्तमानकालार्थकः । (वर्तमाने लट् -पा.सू. 3/21/123)
   सरलार्थः - वर्तमानकालिकक्रियाव्यवहारे धातोः लट्लकारः भवति।
2. **लिट्-लकारः** - अनद्यतनपरोक्षभूतकालार्थकः । (परोक्षे लिट् -पा. सू. 3/2/115)
   सरलार्थः - अक्ष्णः परं परोक्षं, अर्थात् यस्मिन् अनद्यतनभूतकालिकघटनायाः दर्शनं जातं तस्य व्यवहारस्य कृते धातोर्लिट्लकारस्य प्रयोगो भवति।
3. **लुट्-लकारः** - अनद्यतनभविष्यकालार्थकः । (अनद्यतने लुट् -पा.सू. 3/3/15)
   सरलार्थः - अद्यतनभविष्यकालिकघटनायाः क्रियाव्यवहारे धातोःलुट-लकारस्य प्रयोगो भवति।
4. **लृट्-लकारः** - भविष्यार्थकः । (लृट् शेषे च -पा.सू. 3/3/13)
   सरलार्थः - क्रियार्थायां क्रियायां सत्याम् असत्यां वा धातोः लृट्लकारो भवति।
5. **लोट्लकारः** - विध्याद्यर्थेषु । (लोट् च)
   सरलार्थः - विधिः, नियन्त्रणम्, आमन्त्रणम्, अधीष्टः, संप्रश्नः प्रार्थनादिश्चार्थेषु धातोः लोट्-लकारोभवति।
6. **लङ्-लकारः** - अनद्यतनभूतार्थकः । (अनद्यतने-लङ् -पा.सू. 3/2/111)
   सरलार्थः - अनद्यतनभूतकालिकार्थेषु क्रियाव्यवहारे लङ्लकरारस्य प्रयोगो भवति।
7. **विधिलिङ्लकार** :- विध्यार्थकः= विधिनिमन्त्रणा-मन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् (पा.सू. 3/3/161)
   सरलार्थः - विधिः - निमंत्रणम्, आमन्त्रणम्, अधीष्टः, संप्रश्न, प्रार्थनादिषु अर्थेषु लिङ्लकारो प्रयोगो भवति।

   विधिः - किमपि कार्ये प्रेरितकरणार्थकः निमन्त्रणम् - नियोगकरणम् अर्थात् श्राद्धादिकार्येषु दौहित्रादिणां श्रद्धापूर्वकं तेषाम् आह्वानमिति।

   आमन्त्रणम् = यथेच्छाह्वानम्। अधीष्टः - सत्कारपूर्वकं निवेदनम् इत्यादयः।

**8. आशिषिलिङ्लकारः** :- आशिष्यर्थकः । (लिङाशिषि -पा.सू. 3/4/16)

सरलार्थः - आशीवादार्थकेऽपि लिङ्लकार भवति।

**9. लुङ्लकारः** - भूतकालार्थकः । (लुङ् -पा.सू. 3/2/110)

सरलार्थः - भूतकालार्थ वृत्तेर्धातोः क्रियाव्यवहारे लुङ्लकारः भवति।

**10. लृङ्लकारः** - भविष्यकालार्थकः । (लिङ् -निमित्तेलृङ्क्रियातिपत्तौ-पा.सू. 3/3/139)

सरलार्थः - क्रियाया अनिष्पतौ स्यात् तर्हि हेतुहेतुमद्भावादिलिङ्निमित्तं तेषु-अर्थेषु भविष्यत्कालार्थे क्रियाव्यवहारेषु धातोर्लृङलकारो भवति।

विशेष- एतेषु उपर्युक्तेषु दशलकारेषु पञ्चमो लकारः इत्यस्य प्रयोगः केवलं वेदेषु गोचरः (प्रयुक्तः) भवति।

## धातुरूपाणि

**परस्मैपदिनः धातुरूपाणि**

**भू (भव्) धातुः -लट्लकारः**

(होना अर्थ)

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | भवति | भवतः | भवन्ति |
| मध्यमपुरुषः | भवसि | भवथः | भवथ |
| उत्तमपुरुषः | भवामि | भवावः | भवामः |

निर्देशः -उपर्युक्तानुसारमेव - लिख्, खाद्, धाव्, क्रीड्, वद्, पा (पिब्), हस्, गम् (गच्छ्), पठ् गद् इत्यादीनां धातूनां रूपाणि लट्लकारे भवन्ति।

**भू धातुः लिट्लकारः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | बभूव | बभूवतुः | बभूवुः |
| मध्यमपुरुषः | बभूविथ | बभूवथुः | बभूव |
| उत्तमपुरुषः | बभूव | बभूविव | बभूविम |

**गम् धातुः लिट्लकारः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | जगाम | जग्मतुः | जग्मुः |
| मध्यमपुरुषः | जगमिथ/जगन्थ | जग्मथुः | जग्म |
| उत्तमपुरुषः | जगाम/जगम | जग्मिव | जग्मिम |

**नद् धातुः लिट्लकारः**

**(अस्फुट बोलना)**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | ननाद | नेदतुः | नेदुः |
| मध्यमपुरुषः | नेदिथ | नेदथुः | नेद |
| उत्तमपुरुषः | ननाद-ननद | नेदिव | नेदिम |

**पा (पिब्) धातुः लिट्लकारः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | पपौ | पपतुः | पपुः |
| मध्यमपुरुषः | पपिथ-पपाथ | पपथुः | पप |
| उत्तमपुरुषः | पपौ | पपिव | पपिम |

**श्रु धातुः लिट्लकारः**

**(श्रवणार्थकः - सुनने अर्थ में)**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | शुश्राव | शुश्रवतुः | शुश्रवुः |
| मध्यमपुरुषः | शुश्रोथ | शुश्रवथुः | शुश्रुव |
| उत्तमपुरुषः | शुश्राव-शुश्रव | शुश्रुव | शुश्रुम |

**भू धातुः लुट्लकारः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | भविता | भवितारौ | भवितारा: |
| मध्यमपुरुषः | भवितासि | भवितास्थः | भवितास्थ |
| उत्तमपुरुषः | भवितास्मि | भवितास्वः | भवितास्मः |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - लिख, (लेखिता) खाद्, वद्, पठ्, हस्, गद् इत्यादीनां धातुनां रूपाणि लुट्लकारे भवन्ति।

**पा धातुः लुट्लकारः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | पाता | पातारौ | पातारः |
| मध्यमपुरुषः | पातासि | पातास्थः | पातास्थ |
| उत्तमपुरुषः | पातास्मि | पातास्वः | पातास्मः |

**गम् धातुः लुट्लकारः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | गन्ता | गन्तारौ | गन्तारः |
| मध्यमपुरुषः | गन्तासि | गन्तास्थः | गन्तास्थ |
| उत्तमपुरुषः | गन्तास्मि | गन्तास्वः | गन्तास्मः |

**गम् धातुः लृट्लकारः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | गमिष्यति | गमिष्यतः | गमिष्यन्ति |
| मध्यमपुरुषः | गमिष्यसि | गमिष्यथः | गमिष्यथ |
| उत्तमपुरुषः | गमिष्यामि | गमिष्यावः | गमिष्यामः |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - लिख (लेख) धाव्, क्रीड्, खाद्, वद्, हस्, पठ्, गद् भू (भव) इत्यादीनां धातूनां रूपाणि लृट्लकारे भवन्ति।

**पा (पिब्) धातुः लृट्लकारः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुषः | पास्यति | पास्यतः | पास्यन्ति |
| मध्यमपुरुषः | पास्यसि | पास्यथः | पास्यथ |
| उत्तमपुरुषः | पास्यामि | पास्यावः | पास्यामः |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - या, हा, वा, इत्यादीनां धातूनां रूपाणि लृट्लकारे भवन्ति।

**भू (भव्) धातुः लोट्लकारः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुषः | भवतु/भवतात् | भवताम् | भवन्तु |
| मध्यमपुरुषः | भव/भवतात | भवतम् | भवत |
| उत्तमपुरुषः | भवानि | भवाव | भवाम |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - लिख्, धाव्, क्रीड्, खाद्, बद् गम् (गच्छ), हस्, पठ् , गद् पा (पिब्) इत्यादीनां धातूनां रूपाणि लोट्-लकारे भवन्ति।

**वद् धातुः लङ्लकारः**

(व्यक्तशब्दे= बोलने अर्थ में)

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | अवदत् | अवदताम् | अवदन् |
| मध्यमपुरुषः | अवदः | अवदतम् | अवदत |
| उत्तमपुरुषः | अवदम् | अवदाव | अवदाम |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - लिख्, धाव्, खाद्, पच्-हस्, पठ्, गद् गम् (गच्छ) पा (पिब्) भू (भव्) क्रीड् इत्यादीनां धातूनां रूपाणि लङ्-लकारे भवन्ति।

**हस् धातुः विधिलिङ्लकारः**

(हसनार्थक= हँसने अर्थ में)

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | हसेत् | हसेताम् | हसेयुः |
| मध्यमपुरुषः | हसेः | हसेतम् | हसेत |
| उत्तमपुरुषः | हसेयम | हसेव | हसेम |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - लिख्, धाव्, खाद्, पठ्, गद्, गम् (गच्छ), पा (पिब्), क्रीड्, भू (भव्), इत्यादीनां धातूनां रूपाणि विधिलिङ्लकारे भवन्ति।

**भू (भव्) धातुः आशिषिलिङ्लकारः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | भूयात् | भूयास्ताम् | भूयासुः |
| मध्यमपुरुषः | भूयाः | भूयास्तम् | भूयास्त |
| उत्तमपुरुषः | भूयासम् | भूयास्व | भूयास्म |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - लिख्, धाव्, खाद्, पठ्, वद्, गद् गम् (गच्छ), पा (पिब्), क्रीड्, आदिधातूनां रूपाणि आशिषिलिङ्लकारे भवन्ति।

**भू (भव्) धातुः लुङ्लकारः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | अभूत् | अभूताम् | अभूवन् |
| मध्यमपुरुषः | अभूः | अभूतम् | अभूत |
| उत्तमपुरुषः | अभूवम् | अभूव | अभूम |

**गम् धातुः लुङ्लकारः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुषः | अगमत् | अगमताम् | अगमन् |
| मध्यमपुरुषः | अगमः | अगमतम् | अगमत |
| उत्तमपुरुषः | अगमम् | अगमाव | अगमाम |

**गद्- धातुः लुङ्लकारः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | अगादीत् | अगादिष्टाम् | अगादिषुः |
| मध्यमपुरुषः | अगादीः | अगादिष्टम् | अगादिष्ट |
| उत्तमपुरुषः | अगादिषम् | अगादिष्व | अगादिष्म |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - वद्, पठ्, आदिधातूनां रूपाणि भवन्ति।

**पच्- धातुः लुङ्लकारः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | अपाक्षीत् | अपाक्ताम् | अपाक्षुः |
| मध्यमपुरुषः | अपाक्षीः | अपाक्तम् | अपाक्त |
| उत्तमपुरुषः | अपाक्षम् | अपाक्ष्व | अपाक्ष्म |

**भू- धातुः लृङ्लकारः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | अभविष्यत् | अभविष्यताम् | अभविष्यन् |
| मध्यमपुरुषः | अभविष्यः | अभविष्यतम् | अभविष्यत |
| उत्तमपुरुषः | अभविष्यम् | अभविष्याव | अभविष्याम |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - लिख्, धाव्, खाद्, पठ्, गद्, गम्, पा (अपास्यत्) क्रीड् इत्यादीनां धातूनां रूपाणि लृङ्लकारे भवन्ति।

## आत्मनेपदीय धातुरूपाणि

**लभ्- धातुः लट्लकारः**

(लाभार्थकः)

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | लभते | लभेते | लभन्ते |
| मध्यमपुरुषः | लभसे | लभेथे | लभध्वे |
| उत्तमपुरुषः | लभे | लभावहे | लभामहे |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - रुच्, मुद् (मोद्) याच्, एध् इत्यादीनां धातूनां रूपाणि लट्लकारे भवन्ति।

**मुद्- धातुः लिट्लकारः**

(प्रसन्न होना)

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | मुमुदे | मुमुदाते | मुमुदिरे |
| मध्यमपुरुषः | मुमुदिषे | मुमुदाथे | मुमुदिध्वे |
| उत्तमपुरुषः | मुमुदे | मुमुदिवहे | मुमुदिमहे |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - रुच्, याच्, लभ्, एध्, इत्यादीनां धातूनां रूपाणि लिट्लकारे भवन्ति।

**एध्- धातुः लुट्लकारः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | एधिता | एधितारौ | एधितारः |
| मध्यमपुरुषः | एधितासे | एधितासथे | एधिताध्वे |
| उत्तमपुरुषः | एधिताहे | एधितास्वहे | एधितास्महे |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - रुच्, याच्, लभ्, मुद्, इत्यादीनां धातूनां रूपाणि लुट्लकारे भवन्ति।

**लभ्- धातुः लृट्लकारः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | लप्स्यते | लप्स्येते | लप्स्यन्ते |
| मध्यमपुरुषः | लप्स्यसे | लप्स्येथे | लप्स्यध्वे |
| उत्तमपुरुषः | लप्स्ये | लप्स्यावहे | लप्स्यामहे |

**याच्- धातुः लृट्लकारः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | याचिष्यते | याचिष्येते | यचिष्यन्ते |
| मध्यमपुरुषः | याचिस्यसे | याचिष्येथे | याचिष्यध्वे |
| उत्तमपुरुषः | याचिष्ये | याचिष्यावहे | याचिष्यामहे |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - रुच्, मुद्, एध्, इत्यादीनां धातूनां रूपाणि लृट्लकारे भवन्ति।

**रुच्- धातुः लोट्लकारः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | रोचताम् | रोचेताम् | रोचन्ताम् |
| मध्यमपुरुषः | रोचस्व | रोचेथाम् | रोचध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | रौचै | रोचावहै | रोचामहै |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - मुद्, एध्, याच् इत्यादीनां धातूनां रूपाणि लोट्लकारः भवन्ति।

**लभ्- धातुः लङ्लकारः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | अलभत | अलभेताम् | अलभन्त |
| मध्यमपुरुषः | अलभथाः | अलभेथाम् | अलभध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | अलभे | अलभावहि | अलभामहि |

**मुद्- धातुः विधिलिङ्लकारः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | मोदेत | मोदेयाताम् | मोदेरन् |
| मध्यमपुरुषः | मोदेथाः | मोदेयाथाम् | मोदेध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | मोदेय | मोदेवहि | मोदेमहि |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - रुच्, एध्, याच् इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

**लभ्- धातुः आशिषिलिङ्लकारः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | लप्सीष्ट | लप्सीयास्ताम् | लप्सीरन् |
| मध्यमपुरुषः | लप्सीष्ठाः | लप्सीयास्थाम् | लप्सीध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | लप्सीय | लप्सीवहि | लप्सीमहि |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - मुद्, एध्, याच् इत्यादीनां धातूनां रूपाणि लोट्लकारः भवन्ति।

**याच्- धातुः आशिषिलिङ्लकारः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | याचिषीष्ट | याचिषीयास्ताम् | याचिषीरन् |
| मध्यमपुरुषः | याचिषीष्ठाः | याचिषीयास्थाम् | याचिषीध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | याचिषीय | याचिषीवहि | याचिषीमहि |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - सेव्, मुद्, एध्, इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

**रूच्- धातुः लुङ्लकारः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | अरोचिष्ट | अरोचिषाताम् | अरोचिषत |
| मध्यमपुरुषः | अरोचिष्ठाः | अरोचिषाथाम् | अरोचिध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | अरोचिषि | अरोचिष्वहि | अरोचिष्महि |

**लभ्- धातुः लुङ्लकारः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | अलब्ध | अलप्साताम् | अलप्सत |
| मध्यमपुरुषः | अलब्धाः | अलप्साथाम् | अलब्ध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | अलप्सि | अलप्स्वहि | अलप्स्महि |

**सेव्- धातुः लृङ्लकारः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | असेविष्यत | असेविष्येताम् | असेविष्यन्त |
| मध्यमपुरुषः | असेविष्यथाः | असेविष्येथाम् | असेविष्यध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | असेविष्ये | असेविष्यावहि | असेविष्यामहि |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - याच,एध्, रूच् इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

## उभयपदीय धातु रूपाणि

**नी- धातुः लट्लकारः**

**परस्मैपदीयः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | नयति | नयतः | नयन्ति |
| मध्यमपुरुषः | नयसि | नयथः | नयथ |
| उत्तमपुरुषः | नयामि | नयावः | नयामः |

**आत्मनेपदीयः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | नयते | नयेते | नयन्ते |
| मध्यमपुरुषः | नयसे | नयेथे | नयध्वे |
| उत्तमपुरुषः | नये | नयावहे | नयामहे |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - हृ (हर्) भज्, पच् इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

**भज्- धातुः लिट्लकारः**

**परस्मैपदीयः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | बभाज | भेजतुः | भेजुः |
| मध्यमपुरुषः | भेजिथ-बभक्त | भेजथुः | भेज |
| उत्तमपुरुषः | बभाज-बभज | भेजिव | भेजिम |

**आत्मनेपदीयः**

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | भेजे | भेजाते | भेजिरे |
| मध्यमपुरुषः | भेजिषे | भेजाथे | भेजिध्वे |
| उत्तमपुरुषः | भेजे | भेजिवहे | भेजिमहे |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - पच्, हृ (हर्) इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

**हृ (हर्)- धातुः लुट्लकारः**

**परस्मैपदीयः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | हर्ता | हर्तारौ | हर्तारः |
| मध्यमपुरुषः | हर्तासि | हर्तास्थः | हर्तास्थ |
| उत्तमपुरुषः | हर्तास्मि | हर्तास्वः | हर्तास्मः |

**आत्मनेपदीयः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | हर्ता | हर्तारौ | हर्तारः |
| मध्यमपुरुषः | हर्तासे | हर्तासाथे | हर्ताध्वे |
| उत्तमपुरुषः | हर्ताहे | हर्तास्वहे | हर्तास्महे |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - भज्, पच् इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

**नी- धातुः लृट्लकारः**

**परस्मैपदीयः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | नेष्यति | नेष्यतः | नेष्यन्ति |
| मध्यमपुरुषः | नेष्यसि | नेष्यथः | नेष्यथ |
| उत्तमपुरुषः | नेष्यामि | नेष्यावः | नेष्यामः |

**आत्मनेपदीयः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | नेष्यते | नेष्येते | नेष्यन्ते |
| मध्यमपुरुषः | नेष्यसे | नेष्येथे | नेष्यध्वे |
| उत्तमपुरुषः | नेष्ये | नेष्यावहे | नेष्यामहे |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - भज् (भक्ष्यति/भक्ष्यते) , पच् (पक्ष्यति- पक्ष्यते) हृ ( हर्) हरिष्यते इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

भज्- धातुः लोट्लकारः

परस्मैपदीयः

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | भजतु-तात् | भजताम् | भजन्तु |
| मध्यमपुरुषः | भज-तात् | भजतम् | भजत |
| उत्तमपुरुषः | भजानि | भजाव | भजाम |

आत्मनेपदीयः

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | भजताम् | भजेताम् | भजन्ताम् |
| मध्यमपुरुषः | भजस्व | भजेथाम् | भजध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | भजै | भजावहै | भजामहै |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - वह्, नी, हृ (हर्) पच् इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

पच्- धातुः लङ्लकारः

परस्मैपदीयः

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | अपचत् | अपचताम् | अपचन् |
| मध्यमपुरुषः | अपचः | अपचतम् | अपचत |
| उत्तमपुरुषः | अपचम् | अपचाव | अपचाम |

आत्मनेपदीयः

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | अपचत | अपचेताम् | अपचन्त |
| मध्यमपुरुषः | अपचथाः | अपचेथाम् | अपचध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | अपचे | अपचावहि | अपचामहि |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - वह् नी, हृ (हर्) भज्, इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

वह्- धातुः विधिलिङ्लकारः

परस्मैपदीयः

| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | वहेत् | वहेताम् | वहेयुः |
| मध्यमपुरुषः | वहेः | वहेतम् | वहेत |
| उत्तमपुरुषः | वहेयम् | वहेव | वहेम |

**आत्मनेपदीयः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | वहेत | वहेयाताम् | वहेरन् |
| मध्यमपुरुषः | वहेथाः | वहेयाथाम् | वहेध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | वहेय | वहेवहि | वहेमहि |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - पच्, नी (नय्), भज् इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

**पच्- धातुः आशिषिलिङ्लकारः**

**परस्मैपदीयः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | पच्यात् | पच्यास्ताम् | पच्यासुः |
| मध्यमपुरुषः | पच्याः | पच्यास्तम् | पच्यास्त |
| उत्तमपुरुषः | पच्यासम् | पच्यास्व | पच्यास्म |

**आत्मनेपदीयः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | पक्षीष्ट | पक्षीयास्ताम् | पक्षीरन् |
| मध्यमपुरुषः | पक्षीष्ठाः | पक्षीयास्थाम् | पक्षीध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | पक्षीय | पक्षीवहि | पक्षीमहि |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - भज्, नी, वह्, हृ (हर) इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

**नी- धातुः लुङ्लकारः**

**परस्मैपदीयः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | अनैषीतः | अनैष्टम् | अनैषुः |
| मध्यमपुरुषः | अनैषीः | अनैष्टम् | अनैष्ट |
| उत्तमपुरुषः | अनैषम् | अनैष्व | अनैष्म |

**आत्मनेपदीयः**

**नी धातुः- लुङ्लकारः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | अनेष्ट | अनेषाताम् | अनेषत |
| मध्यमपुरुषः | अनेष्ठाः | अनेषाथाम् | अनेद्वम् |
| उत्तमपुरुषः | अनेषि | अनेष्वमि | अनेष्महि |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - भज्, पच्, हृ (हर्) वह् इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

**पच्- धातुः लृङ्लकारः**

**परस्मैपदीयः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | अपक्ष्यत् | अपक्ष्यताम् | अपक्ष्यन् |
| मध्यमपुरुषः | अपक्ष्यः | अपक्ष्यतम् | अपक्ष्यत |
| उत्तमपुरुषः | अपक्ष्यम् | अपक्ष्याव | अपक्ष्याम |

**आत्मनेपदीयः**

| **पुरुषः** | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषः | अपक्ष्यत | अपक्ष्येताम् | अपक्ष्यन्त |
| मध्यमपुरुषः | अपक्ष्यथा | अपक्ष्येथाम् | अपक्ष्यध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | अपक्ष्ये | अपक्ष्यावहि | अपक्ष्यामहि |

निर्देशः - उपर्युक्तानुसारमेव - भज्, हृ (हर्) नी (नय्) इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

**अभ्यासप्रश्नाः**

**वस्तुनिष्ठप्रश्नाः**

**प्रश्न- 1 अधोलिखितेषु पदेषु समुचितविकल्पं चित्वा उत्तरत -**

(क) लकाराः भवन्ति -

(I) अष्ट (II) पञ्च

(III) दश (IV) सप्त

(ख) परोक्षभूतकालिकलकारः वर्तते -

(I) लोट्लकारः (II) लिट्लकारः

(III) लङ्लकारः (IV) लट्लकारः

(ग) 'ननाद' इति पदे धातुरस्ति -

(I) नाद (II) ना

(III) नद (IV) नन

(घ) 'गमिष्यति' इति पदे लकारः -

(I) लट्लकारः (II) लृट्लकारः

(III) लोट्लकारः (IV) कोऽपि न

(ङ) 'कवौ' इति पदे विभक्तिः अस्ति ?

(I) प्रथमा (II) सप्तमी

(III) तृतीया (IV) कोऽपि न

**प्रश्न- 2 रिक्त स्थानानि पूरयत -**

(क) अनद्यतनभूतार्थकः ................. लकारः ?

(ख) अक्ष्णः परं ...................... भवति ?

(ग) वर्तमाने .......................... भवति ?

(घ) दश ..................... भवन्ति ?

(ङ) गच्छति ................. गच्छन्ति ?

**प्रश्न- 3 सत्यकथनांनां समक्षम् 'आम्' असत्यकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत -**

(क) 'भवामि' इति पदे लोट्लकारोऽस्ति।

(ख) 'पपौ' इत्यत्र पा धातुरस्ति ?

(ग) 'हन्ति' इति पदे एकवचनम् अस्ति ?

(घ) 'मम' इति पदे प्रथमा विभक्तिः ?

(ङ) अष्टविभक्तयः भवन्ति ?

**प्रश्न- 4 युग्ममेलनं कुरुत -**

| | | |
|---|---|---|
| (क) भविता | 1. | लङ्लकारः |
| (ख) मातरि | 2. | लुट्लकारः |
| (ग) नद्यौ | 3. | आत्मनेपद |
| (घ) अगमत् | 4. | सप्तमी |
| (ङ) लभे | 5. | द्वितीया |

**प्रश्न- 5 एकपदेन उत्तरत -**

1. श्रु धातोः लट्लकारस्य प्रथमपुरुषस्य एकवचने रुपं भवति ?
2. कति -विभक्तयः सन्ति ?
3. रमा शब्दस्य षष्ठी विभक्तयौ रूपं भवति ?
4. हसेत् इति पदे लकारः वर्तते ?
5. युष्माभिः इति पदे वचनमस्ति ?

**दीर्घोत्तरीयाः प्रश्नाः**

1. दशलकारान् लिखत ?
2. विधिनिमन्त्रणामन्त्रणा इति सूत्रं प्रतिपादयत ?
3. अधोलिखित शब्दानां सर्वासु विभक्तिषु शब्दरूपाणि लिखत ?
   (राम, रमा, युष्मद्- अस्मद्)
4. अधोलिखित धातूनां रूपाणि निर्देशानुसारं लिखत ?
   भू-लट्लकारः लभ् - लोट्लकारः इत्यादयः।

❖ ❖ ★ ❖ ❖

## षष्ठः अध्यायः

# अव्यय-प्रत्ययः

**अव्ययपरिचयः** -

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्नव्येति तदव्ययम्।।

**परिभाषा** - ''यन्नव्येति तदव्ययम्''

न व्ययम् इति अव्ययम् अर्थात् यत् न परिवर्तते तद् अव्ययम् इति। यस्य त्रिषु लिङ्गेषु, सर्वेषु वचनेषु, सर्वासु विभक्तिषु च समानरूपं भवति तद् अव्ययमिति कथ्यते।

अव्ययसंज्ञाविधायकं सञ्ज्ञासूत्रम्
स्वरादि निपातमव्ययम् 1/1/37//
स्वरादयो निपाताश्च अव्ययसंज्ञाः स्युः।

**स्वरादय :**

| | | |
|---|---|---|
| स्वर् (स्वः) - स्वर्गलोकः | अन्तर् (अन्तः)-आभ्यान्तरे | प्रातर् (प्रातः)-ऊषाकालः |
| पुनर् (पुनः)-बारम्-बारम् | सनुतर् (सनुत) | उच्चैस् (उच्चैः)-उच्चाधिकरणम् |
| नीचैस् (नीचैः) - नीचाधिकरणम् | शनैस् (शनैः)-मन्दम् | ऋधक्-सत्यम् |
| ऋते-बिना | युगपत्-सदैव | आरात्-दूरार्थे समीपार्थे च |
| पृथक्-भिन्नः | ह्यः - गतदिवसः | श्वस् (श्वः)-आगामि दिवसः |
| दिवा-दिनम् | रात्रौ-निशायाम् | सायम्-संध्याकालः |
| चिरम्-अधिकसमयपर्यन्तम् | मनाक्-किञ्चित् | ईषत्-किञ्चित् |
| जोषम्-मौनम् | तूष्णीम्-मौनम् | बहिस् (बहिः) |
| अवस् (अवः)-बहिः | अधस् (अधः)-नीचैः | समया-समीपम् (निकटम्) |
| निकषा-समीपम् | स्वयम्-आत्मनः | वृथा-व्यर्थः |
| नक्तम्-निशा (रात्रिः) | नञ् (न) अस्वीकारोक्तिः | हेतौ-निमित्तौ |
| इद्धा-प्रादुर्भावः (प्राकट्य) | अद्धा-वस्तुतः | सामि-अर्द्धम् |
| वत्-सदृशम् | ब्राह्मणवत्-ब्राह्मणसदृशम् | क्षत्रियवत्-क्षत्रियसदृशम् |
| सना-सदा | | सनात्-सर्वदा |

| | | |
|---|---|---|
| उपधा-भेदः | तिरस् (तिरः)-वक्रः | अन्तरा-मध्यः |
| अन्तरेण-विना | ज्योक्-दीर्घकालात् | कम्-जलम् |
| शम्-सुखम् | सहसा-अकस्मात् | विना-अतिरिक्तम् |
| नाना-अनेकाः, नैकाः | स्वस्ति-कल्याणम् | स्वधा-पिण्डदानार्थे प्रयोगः |
| अलम्-पर्याप्तम् | वौषट्-देवपूजने प्रयोगः | अहित-विद्यमानम् |
| उपांशु-एकान्तः | अन्यत्-अतिरिक्तः | विहायसा-नभः |
| दोषा-निशा, रात्रिः | क्षमा - | मिथ्या-असत्यम् |
| मिथस्-परस्परम् | मृषा-मिथ्या | मिथो-एकान्तम् |
| प्रवाहुकम्-तस्मिन् समये | पुरा-प्राचीनकाले | मुहुस (मुहुः)-पुनःपुनः |
| अभीक्ष्णम्-सत्तम् | प्रायस् (प्रायः)-प्रायसः | आर्यहलम्-बलपूर्वकम् |
| नमस् (नमः)-नमस्कारः | प्रवाहिका-समानकालः | सार्धम्-सह (साकम्) |
| अथ-आरम्भः | साकम्-सह (सार्धम्) | धिक्-धिक्कारः |
| प्रताम्-ग्लानिः | हिरूक्-बिना | आम्-सहमतिः |
| मा-निषेधार्थक | अम्-सत्वरम् (शीघ्रम्) | प्रतान्-तुलनार्थे |
| | प्रशान्-तुलनार्थे | |
| | माङ्-निषोधार्थकः | |

**निपाताः**

| | | |
|---|---|---|
| च-अपि | वा-विकल्पार्थे | ह- |
| अह-आश्चर्यम् | एव-निश्चयार्थे | एवम्-अनेनप्रकारेण (इत्थम्) |
| नूनम्-निश्चितम् | शाश्वत्-सदा (सर्वदा) | युगपत्-सदैव |
| भूयस् (भूयः)-अधिकाधिकम् | कूपत्-प्रशंसनार्थकः शब्दः | कुवित्-बहुः |
| नेत्-एतादृशं न भवेत् | चेत्-तो | चन्-यदि |
| कच्चित्-कुत्रापि एवम् | यत्र-जहाँ | नह्-निश्चित निषेधः |
| हन्त-खेदप्रकटार्थे | माकिः-निषेधार्थकः | माकिम्-निशेषाधार्थकः |
| नकिः - न कोऽपि | न किम्-न कोऽपि | माङ्-निषेधः |
| नञ्-न | यावत्-अवधिः | तावत्-अवधिः (तदापर्यन्तम्) |
| त्वै-वितर्कः | द्वै-विकर्तः | न्वै-वितर्कः |
| रै-अनादरः | वौषट्-देवाराधने प्रयोगः | वौषट्-देवाराधने प्रयोगः |
| तुम्-निरादरे प्रयुक्तः | तथाहि- | खलु-निश्चयवाचकः |
| किल-निश्चयवाचकः | अथो-आरम्भः | अथ-प्रारम्भः |
| सुष्ठु-सुन्दरम् | स्म-भूतकालबोधकः | आदह-हिंसा |

वार्तिकम्-उपसर्गविभक्तिस्वरप्रतिरूपकाश्च।

उपसर्ग-सदृशाः, विभक्ति-सदृशाः, स्वर-सदृशाः शब्दाः चादिगणे स्वीकृताः।

| | | |
|---|---|---|
| अवदत्तम् | अहंयु :- | इ- |
| अ- | आ- | ऊ, ए, ऐ, ओ, औ- सम्बोधनम् |
| ई- | उ- | |
| पशु-सम्यक रूपेण | शुकम्-शीघ्रम् | अङ्ग-सम्बोधनम् |
| पाट्-सम्बोधनम् | प्याट्-सम्बोधनम् | भोः - सम्बोधनम् |
| है-सम्बोधनम् | हे-सम्बोधनम् | एकपदे-एकसह |
| द्य-हिंसा | विषु-नैकः, अनेकः | |
| युत्-घृणा | आतः-येन कारणेन अस्तिक्षीरा- | |

- तद्धितश्चासर्वविभक्तिः 1/1/38/

  यस्मात्सर्वा विभक्तयो न भवन्ति तादृशस्तद्धितान्तशब्दोऽव्ययं स्यात्

  न भवन्ति सर्वा विभक्तयो यस्मात्, स असर्वविभक्तिः।

  तद्धितः प्रथमान्तं, च अव्ययपदम्, असर्वविभक्तिः प्रथमान्तं, त्रिपदमिदं सूत्रम्

- परिगणनं कर्तव्यम् - तसिलादयः प्राक्याशपः।

  शस्प्रभृतयः प्राक्समासान्तेभ्यः। अम्। आम। कृत्वोऽर्थाः। तसिवती। नानाञौ। एतदन्तमप्यव्ययम्।

  उपर्युक्त प्रत्ययन्त योगेन अधोलिखितः शब्दाः निर्मीयन्ते।

- यथा - तसिलप्रत्ययान्ताः शब्दा :-

  अतः, ततः, कुतः, यतः, परितः, अभितः

- त्रल् प्रत्यान्त शब्दा :-

  अत्र, कुत्र, तत्र, अन्यत्र, सर्वत्र, एकत्र

- ह तः पाशप्-प्रत्यय पर्यन्तम् -

  ह-इह (अत्र), कुह (कुत्र)। अत्-क्व (अन्य)।

  दा-सदा (सर्वदा), सर्वदा (चिरकाल), कदा, अन्यदा (द्वितीय दिनम्)

  र्हिल-कर्हि (कदा), यर्हि (यदा), तर्हि (तदा)

  धुना-अधुना (सम्प्रति)।

  दानीम्-इदानीम् (अधुना), तदानीम्-(तस्मिन् समये)।

  थाल्-यथा, तथा, कथा (कथम्) उभयकथा (उभयप्रकारेण)।

  थमु-इत्थम्, कथम्।

  था -

  आस्ताति - पुरस्तात् (अग्रे), परस्तात्-(पृष्ठे)।

अतसुच्-दक्षिणतः, उत्तरतः

रिल्-ऊपरि रिष्टात्-उपरिष्टात्। आति-पश्चात्।

एनप्-उत्तरेण (उत्तरतः) दक्षिणेन (दक्षिणतः)।

आच्-दक्षिणा (दक्षिणदिशि)। आहि-दक्षिणाहि (दक्षिणदिशि)।

असि-पुरः (सम्मुखम्)। धा-एकधा (एकवारम्)।

ध्यमुञ्-ऐकध्यम्-(एकप्रकारेण)।

एधाच्-द्वेधा (द्विप्रकारेण), त्रेधा (त्रिप्रकारेण)।

पाशप्-वैयाकरणपाशः

- शस्प्रभृत्यः प्राक्समासान्तेभ्यः। कृत्वोऽर्थाः। तसितवती। नानाञौ।

  -शस् प्रत्ययात् आरभ्य समासान्त प्रत्ययात् पूर्व-पर्यन्तम् कृत्वार्थे भवितव्याः प्रत्ययाः आ, आम, तसि, वति, ना, नाञ् इत्येतेषां प्रत्ययानां सयोजनानन्तरं निर्मितशब्दाः अपि अव्यय-संज्ञकाः भवन्ति। एतान विहाय अन्योऽपि प्रत्ययाः शस्, तसि, च्वि, साति, त्रा, डाच्, आम्, कृत्वसुच्, सुच, धा, ना, नाञ्-आदयः सन्ति। एतेषां विवेचनम् विस्तारकारणात् न क्रियते।

- कृन्मेजन्तः 1/1/39//

  कृद्यो मान्त एजन्तश्च तदन्तमव्ययं स्यात्।

  स्मारं स्मारम्। जीवसे पिबध्यै।

  कृत्यंज्ञक-प्रत्ययाः ये मान्त-एजन्त-तदन्त-शब्दाः भवन्ति ते अव्यय-संज्ञकाः भवन्ति।

  यथा- पठितुम्, स्मारम्-स्मारम्, वक्षे, एषे, जीवसे, पिबध्यै आदयः।

- क्त्वातोसुन्कसुनः 1/1/40/

  एतदन्तमव्ययम्। क्त्वा। उदेतोः। विसृपः।

  क्त्वा-तोसुन्-कसुन्-प्रत्ययान्त शब्दाः अव्ययसंज्ञकाः भवन्ति।

  यथा - क्त्वा - भूत्वा, लिखित्वा, नीत्वा-आदयः।

  तोसुन् - उदेतोः, प्रवदितो - आदयः।

  कसुन् - विसृपः, आतृदः-आदयः

  (क्त्वा प्रत्ययस्य प्रयोगः लोके, वेदे च भवति, तथा तासुन्-कसुन्-प्रत्ययोः प्रयोगः वेदे भवति)

- अव्ययीभावश्च 1/1/41//

  अव्ययीभाव-समास-युक्ताः शब्दाः अव्ययसंज्ञकाः भवन्ति।

  यथा-अधिहरि, प्रतिदिनम्, यथाशक्तिः, उपकृष्णम् आदयः।

- उपसर्गाः अपि अव्यय-संज्ञकाः भवन्ति। एतेषां गणना अव्ययेषु भवति।

  उपसर्गा : - प्र, पा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप, एते द्वाविंशतिः उपसर्गाः क्रियायोगे अव्ययसंज्ञकाः भवन्ति।

## अभ्यासप्रश्नाः

**वस्तुनिष्ठप्रश्नाः**

**प्रश्न -1 अधोलिखितेषु पदेषु समुचितविकल्पं चित्वा उत्तरत -**

(क) यत् न व्येति तद् भवति -

(I) प्रत्ययः (II) अव्ययम् (III) व्ययः (IV) विभक्तयः

(ख) 'निकषा' पदस्य अर्थः भवति -

(I) समीपम् (II) दूरतः (III) सुखम् (IV) सर्वत्र

(ग) 'स्म्' पदमस्ति -

(I) वर्तमानकालिक (II) आज्ञार्थ (III) भूतकालिक (IV) भविष्यकालिक

(घ) तसिल् प्रत्ययान्तः शब्दः अस्ति -

(I) क्व (II) तत्र (III) अन्यदा (IV) कुतः

(ङ) त्रल्प्रत्ययान्तशब्दाः भवन्ति ?

(I) अव्ययशब्दाः (II) सम्बोधनशब्दाः

(III) सुबन्ताः (IV) तिङन्ताः

**प्रश्न -2 रिक्तस्थानानि पूरयत -**

(क) यस्य त्रिषु लिङ्गेषु, सर्वेषु वचनेषु, सर्वासुविभक्तिषु च समान रूपं भवति तद् ........... कथ्यते?

(ख) स्वराणां नियातानां च ........................संज्ञा भवति ?

(ग) ''भवति'' पदं ................ प्रत्ययान्तः अस्ति ?

(घ) 'क्त्वा प्रत्ययः ................कालिकः भवति ?

(ङ) 'प्रक्षाल्य' पदे ........................ प्रत्ययः भवति ?

**प्रश्न-3 प्रश्नानां उत्तराणि लिखत -**

(क) 'अलम्' पदस्य पर्यायार्थ लिखत।

(ख) 'खलु' पदस्य प्रयोगः कुत्र भवति।

(ग) 'त्रल्' प्रत्ययान्त शब्दानां का संज्ञा भवति ?

**प्रश्न -4 युग्ममेलनं कुरुत -**

| | |
|---|---|
| (क) सायम् | 1. त्रल्प्रत्ययान्त |
| (ख) स्वस्ति | 2. तस्मिन् समये |
| (ग) एकत्र | 3. प्राचीनकाले |
| (घ) तदानीम् | 4. संध्याकालः |
| (ङ) पुरा | 5. कल्याणम् |

## सप्तमः अध्यायः

# कारकपरिचयः

**कारक परिभाषा :-**

- क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्।
- क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्।

1. साक्षात् क्रियान्वयित्वं कारकत्वम् इत्यस्य अयममाशयो यत् यस्य पदस्य क्रियया सह साक्षात् सम्बन्धो वर्तते तत् कारकमित्युच्यते।
2. यस्य पदस्य क्रियया सह साक्षात् सम्बन्धो भवति तत् कारकम्।

कारकाणां संख्या षट्

| | |
|---|---|
| 1. कर्ता | 2. कर्म |
| 3. करणम् | 4. सम्प्रदानम् |
| 5. अपादानम् | 6. अधिकरणम् |

विशेषः - सम्बन्धः विभक्तिरूपेण विद्यते तत्र षष्ठी विभक्तिः भवति।

श्लोकः - कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणे कथ्यन्ते कारकाणि षट्।।

विशेषः - सम्बोधने प्रथमा विभक्तिः भवति
सूत्र - 'संबोधने च' पा.सू. 2/3/47

उदाहरणम् :- हे राम!

**कर्ताकारकम् - (प्रथमा विभक्तिः)**

क्रियां करोति इति कर्ता।

कर्ताकारके प्रथमा विभक्तिः भवति।

यथा :- रमेशः पठति।
उमा नृत्यति।
रामः गच्छति।
सीता गायति।

बालकाः पठन्ति।

बालिकाः क्रीडन्ति।

**कर्मकारकम् ( द्वितीया विभक्तिः )**

कर्ता यम् अत्यधिकम् अभिलषति, तत् कर्मकारकम् इति कथ्यते।

यथा :- देवदत्तः घटं करोति।

रमेशः कटं करोति।

बालकः ग्रामं गच्छति।

रामः पुस्तकं पठति।

सीता मन्दिरं गच्छति।

दिनेशः जलं पिबतिं।

विशेषः - शब्दैः सह विशेषविभक्तीनां यत्र संयोगः भवति सा उपपदविभक्तिः इति।

अभितः परितः-समया-निकषा-हा-प्रति-योगेऽपि। वार्तिक (लघुसिद्धान्तकौमुदी)

एतेषां पदानां योगे द्वितीया विभक्तिः भवति।

यथा :- कृष्णम् अभितः गोपाः सन्ति।

राजानम् अभितः परिचारकाः सन्ति।

रामं परितः वानराः सन्ति।

ग्रामं समया निकषा वा वनम् अस्ति।

छात्रः विद्यालयं प्रति गच्छति।

हा कृष्णस्य अभक्तम्।

विशेषः - धिक्-विना-नाना एतेषां पदानां योगेऽपि द्वितीया विभक्तिः भवति।

यथा :- धिक् ज्ञानहीनम्।

भोजनं विना मानवाः न जीवन्ति।

(पृथक्विनानाभिस्तृतीयाऽन्यतस्याम्) पा.सू. 2/3/32

अनेन सूत्रेण ज्ञायते यत् एतेषां पदानां योगे

तृतीया विभक्तिः पञ्चमीविभक्तिश्चापि भवति।

यथा - ज्ञानं विना, ज्ञानेन विना, ज्ञानात् विना नरः न शोभते।

विशेषः - दुह्-याच्-पच्-दण्ड-रूधि-प्रच्छि-चि-ब्रू-शासु-जि-मथ्-मुषाम्।

कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम्।।

एतेषां धातूनां योगेऽपि कर्म संज्ञा भूत्वा द्वितीया विभक्तिः भवति।

यथा :- गां दोग्धि पयः।

बलिं याचते वसुधाम्।

अवनीतं विनयं याचते।

तण्डुलान् ओदनं पचति।

गर्गान् शतं दण्डयति।

व्रजम् अवरुद्धि गाम्।

बालकं पन्थानं पृच्छति।

तरुम् अवचिनोति फलानि।

माणवकं धर्म ब्रूते शास्ति वा।

शतं जयति देवदत्तन्।

सुधां सागरं मथ्नाति।

रमेशं शतं मुष्णाति

ग्रामं गां नयति, हरति कर्षति वहति वा।

उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु।

द्वितीयाम्रेऽतान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते।। वार्तिक - सि.कै.

अत्र - उभसर्वयोः, तसौ उभसर्वतसौ तस् प्रत्ययान्तौ उभसर्व शब्दौ इत्यर्थः। तयोः युक्तयोः तथा दिक् + आम्रेऽतिशब्दयोः योगेषु द्वितीया भवति।

उदाहरणानि :- उभयतः कृष्णं गोपाः।

सर्वतः कृष्णं गोपाः।

धिक् कृष्णस्य अभक्तम्।

उपर्युपरि लोकं हरिः।

अन्तरान्तरेण युक्ते।। पा.सू. 2/3/4//

आभ्यां योगे द्वितीया स्यात्।

यथा :- अन्तरा त्वां मां हरिः।

अन्तरेण हरिं न सुखम्।

**करणकारकम् ( तृतीया विभक्तिः )**

सूत्र - साधकतमं करणम् - 1/4/42

भावार्थः क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं कारकं करणसंज्ञं स्यात्।

येन साधनेन कर्ता कार्यं सम्पादयति, तत् साधनं करणकारकम् इति कथ्यते।

करणकारके तृतीया विभक्तिः भवति।

सूत्रम् :- कर्तृकरणयोस्तृतीया।। 2/3/18/1

भावार्थः - अनभिहिते कर्तरि करणे च तृतीया विभक्तिः भवति।

यथा :- रामेण बाणेन हतो बाली।

पदेऽस्मिन् रामः अनभिहित-कर्ता विद्यते बाणः साधकस्य करणं विद्यते।

तृतीयाविभक्तेः उदाहरणानि -

यथा :- मोहनः हस्तेन खादति।
बालकः कन्दुकेन क्रीडति।
गोविन्दः हस्ताभ्यां कार्यं करोति।
राधा लेखन्या लिखति।
बालिका नेत्राभ्याम् पश्यति।

वार्तिकः - प्रकृत्यादिभ्यः उपसंख्यानाम् (सि.कौ.)

प्रकृत्यादिशब्देषु योगे अपि तृतीया विभक्तिः भवति।

यथा :- प्रकृत्या चारुः।
प्रायेण याज्ञिकः।
समेन एति।
विषमेण एति।
द्विद्रोणेन धान्यं क्रीणाति।
सुखेन दुःखेन वा गच्छति।

विशेषः - सह, साकम्, सार्धम्, समम्, अलम् एतेषां योगे अपि तृतीया भवति।

सूत्रम (सहयुक्तेऽप्रधाने) 3/2/19

यथा :- मुकुन्द अग्रजेन सह गृहं गच्छति।
सुरेन्द्रेण सह-आगतः श्यामः।
बालकः पित्रा साकम् उज्जयिनीं गच्छति।
दिनेशः मित्रेण सार्धं विद्यालयं गच्छति।
अखण्डः विवेकेन समं क्रोशमेकं धावति।

''येनाङ्गविकारः'' 2/3/20

येनाङ्गेन विकृतेनाङ्गिनो विकारो लक्ष्यते तत् तृतीया विभक्तिः भवति।

यथा :- पुरुषः नेत्रेण काणः।
युवकः कर्णाभ्याम् बधिरः।
सः शिरसा खल्वाटः।
बालकः पादेन खञ्जः।

इत्थंभूतलक्षणे 2/3/21

जाति-स्वभाव-लक्षण-वाचकशब्दानां योगे अपि तृतीया विभक्तिः भवति।

यथा :- सः पुरुषः जटाभिस्तापसः।

भवान् कमण्डलुना पादपं सिञ्चतु अद्राक्षीत्।

एषः प्रकृत्या साधुः।

बालकः शिखया हिन्दुः।

विशेष :- विना नाना योगेऽपि तृतीया विभक्तिः भवति।

**सम्प्रदानकारकम् ( चतुर्थी विभक्तिः )**

सूत्रम् = ''कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (2/4/32)

दानादिकर्मणा यस्य चयनं भवति स सम्प्रदानम्। वा दानस्य कर्मणा यम् अभिप्रैति स सम्प्रदानसंज्ञः स्यात्। सम्प्रदाने चतुर्थी भवति। ''चतुर्थीसम्प्रदाने'' 2/3/13

यथा :- उपाध्याय गां ददाति।

भिक्षुकाय भिक्षां ददाति।

माता बालकाय भोजनं ददाति।

पत्नी पत्ये भोजनं पचति।

रत्नेश अध्ययनाय भोपालनगरं गच्छति।

राधा सीतायै पुस्तकं ददाति।

''नमस्स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च'' 2/3/16

एभियोगेऽपि चतुर्थी विभक्तिः भवति।

यथा :- अग्नये स्वाहा।

पितृभ्यः स्वधा।

दैत्येभ्यो हरिः अलम्।

दुर्गायै नमः।

शारदायै नमः।

प्रजाभ्यः स्वस्ति।

छात्राय स्वस्ति।

''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः''

एतेषां योगेऽपि यं प्रति कोपः भवति तत्र-चतुर्थी भवति।

यथा :- सः हरये क्रुध्यति।

परशुराम लक्ष्मणाय क्रुध्यति।

गणेशः रमेशाय असूयति।

असुराः हरये ईर्ष्यन्ति।

''रुच्यर्थानां प्रीयमाणः'' 1/4/33

रुच्यर्थकधातूनां योगेऽपि चतुर्थी भवति।

यथा :- हरये रोचते भक्तिः।

हनुमते मोदकं रोचते।

बालाय दुग्धं रोचते।

मह्यम् अध्ययनं रोचते।

**अपादानकारकम् (पञ्चमी विभक्तिः)**

''ध्रुवमपायेऽपादानम्'' 1/4/24

यस्मात् स्थानात् वस्तुनः पृथक्करणं लक्ष्यते तत् अपादानकारकम्। अपादानकारके पञ्चमी विभक्तिः भवति।

''अपादाने पञ्चमी'' 2/3/28/

यथा :- वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।

पुरुषः अश्वात् पतति।

प्रासादात् बालकः पतति।

अध्यापकः विद्यालयात् गृहं गच्छति।

भुवः प्रभव :- 1/4/3/1

भू धातुरित्यस्य आविर्भावार्थे उत्पत्तिस्थाने पञ्चमी विभक्तिः भवति।

यथा :- गङ्गा हिमालयात् प्रभवति।

भीत्रार्थानां भयहेतु :- भयार्थानां त्राणार्थानां च प्रयोगे

भयहेतु :- अपादानसंज्ञं भूत्वा पञ्चमी भवति।

यथा :- चौरात् बिभेति बालकः।

मनुष्यः चौरात् त्रायते।

नरः सिंहात् बिभेति।

बालिका सर्पात् बिभेति।

''जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्'' -वार्तिक इत्येतेषां योगेऽपि पञ्चमी भवति।

यथा :- पापात् जुगुप्सते।

पापात् विरमति।

धर्मात् प्रमाद्यति।

पराजेरसोढ :- 1/4/26

पराजेः प्रयोगेऽसह्योऽपादानं स्यात्।

यथा :- बालकः अध्ययनात् पराजयते।

**सम्बन्धः ( षष्ठी विभक्तिः ) ''षष्ठी शेषे'' 2/3/50**

यत्र संज्ञा अथवा सर्वनामरूपेण कस्यापि वस्तुनः सम्बन्धः परिदृश्यते तत्र षष्ठी विभक्तिः भवति।

यथा :- एषः रमेशस्य पुत्रः।
सा गणेशस्य पुत्री।
सः नृपस्य अनुचरः।
राधा कृष्णस्य प्रेयसी।

उपरि, अधः, नीचैः, पश्चात्-इत्यादीनां शब्दानां योगेऽपि षष्ठी विभक्तिः भवति।

यथा :- वृक्षस्य उपरि खगाः सन्ति।
तरोः अधः मनुष्याः सन्ति।

''षष्ठी हेतुप्रयोगे'' 2/3/26

हेतुशब्द-प्रयोगे हेतौ द्योत्ये षष्ठी भवति।

यथा :- अन्नस्य हेतोः वसति।
अध्ययनस्य हेतोः छात्रः विद्यालयं गच्छति।

''षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन'' 2/3/30

एतद्योगे षष्ठी विभक्तिः भवति।

यथा :- ग्रामस्य दक्षिणतः वृक्षाः सन्ति
ग्रामस्य उत्तरतः।
ग्रामस्य अग्रे सरोवरः विद्यते।
ग्रामस्य उपरि भगवतः दृष्टिरस्ति।

''कर्तृकर्मणोः कृति''

कृद्योगे कर्तरि कर्मणि च षष्ठी विभक्तिः भवति।

यथा :- कृष्णस्य कृतिः
(जगतः कर्ता कृष्णः)
अष्टाध्यायी पाणिनेः कृतिः।

''क्तस्य च वर्तमाने''

वर्तमानार्थस्य क्तस्य योगे षष्ठी विभक्ति भवति।

यथा :- राज्ञां मतः।
राज्ञां बुद्धः।
राज्ञां पूजितः।

**अधिकरणकारकम् ( सप्तमी विभक्तिः )**

''आधारोऽधिकरणम्''

कर्तृकर्मद्वारा तन्निष्ठक्रियाया आधारः कारकमधिकरणसंज्ञः भवति।

वस्तुनः क्रियायाः वा आधारः एव अधिकरणम्।

''सप्तम्यधिकरणे च''

अधिकरणे सप्तमी विभक्तिः भवति।

अधिकरणकारके आधारस्त्रिधा।

1. औपश्लेषिकः 2. वैषयिकः 3. अभिव्यापकः

औपश्लेषिकः :- श्लेषः संयोगः। उपसमीपे श्लेषः सम्बन्धः उपश्लेषः। तत्र भवः औपश्लेषिकः। अव्यवहितसामीप्यमेव आधारत्वनियामकं न तु व्यवहितम्।

यथा - कटे आस्ते। खट्वायां शेते।

वैषयिकः :- विषयः प्रतिपाद्योऽर्थः।

विषय एव वैषयिक। संयोग समवायातिरेकसम्बन्धन यदधिकरणं तद् वैषयिकम्।

यथा :- मोक्षे इच्छास्ति।

अध्ययने रुचिरास्ति।

अभिव्यापकः :- अभिसमन्तात् व्यापकः अभिव्यापकः सर्वात्म संयोगः। सर्वावयवावच्छेदेन व्याप्तिस्तदभिव्यापकम्।

यथा :- तिलेषु तैलम्।

सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।

''क्तस्येन्विषयस्य कर्मणि उपसंख्यानम्'' (वार्तिकः)

'क्त' प्रत्ययान्तशब्देषु 'इन' प्रत्ययसंयोजने ये शब्दाः निर्मीयन्ते तेषां कर्मणि सप्तमी भवति।

यथा - अधीती व्याकरणे।

''साधु-असाधुप्रयोगे च'' ''वार्तिक''

'साधुः'-'असाधुः' शब्दानां योगेऽपि यस्मिन्युपरि साधुता-असाधुता, क्रियते तत्र सप्तमी विभक्तिः भवति।

यथा :- साधुः कृष्णो मातरि असाधुः मातुले।

''निमित्तत्कर्मयोगे'' ''वार्तिकः''

निमित्तमिह फलम्।

योगः संयोगसमवायात्मकः।

यथा :- चर्मणि द्वीपिनं हन्ति।

दन्तयोः हन्ति कुञ्जरम्।

केशेषु चमरीं हन्ति।

सीम्नि पुष्कलको हतः।

विशेषः - चर्मणि चर्मार्थं व्याघ्रं हन्ति। अत्र द्वीपिना कर्मणा चर्मणः समवाय एव अवयवावयविनोरयुतसिद्धत्त्वात्। व्याघ्रचर्म मे स्यात् इति हेतोः। दन्तयोः दन्तार्थम्। अत्र कुञ्जरेण कर्मणा दन्तयोसमवाय एव अवयवावयवित्वात्।

गजदन्तं मे स्याताम् इति हेतोः। सीम्नि सीमार्थम्। अत्रापि पुष्कलकेन कर्मणा सीम्नः समवाय एवं सीमा मृगनाभिः गंधद्रवनिव्यशेषो वा मे स्यादिति हेतोः। सर्वत्र कर्ता तेन तेन फलेन युज्यते।

- यस्य च भावेन भावलक्षणम् 2/3/37

  यस्य क्रियया क्रियान्तरं लक्ष्यते ततः सप्तमी स्यात्।

  यथा :- गोषु दुह्यमानासु गतः भावेशः।

- षष्ठी चानादरे 2/3/38

  अनादराधिक्ये भावलक्षणे षष्ठी सप्तम्यौ स्तः।

  यथा :- रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत्।

  (पुत्रस्य) रुदतः प्राव्राजीत्

  (पुत्रे) रुदति प्राव्राजीत्

विशेष :- अत्र रुदन्तं पुत्रादिकमनादृत्य संन्यस्तवानित्यर्थः।

''यतश्चनिर्धारणम्'' 2/3/41

जाति-गुण-क्रिया-संज्ञाभिः समुदायादेकदेशस्य पृथक्करणं निर्धारणं यतस्ततः षष्ठी सप्तम्यौ स्तः।

यथा :- नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः।

गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा।

गच्छतां गच्छत्सु वा धावञ्छीघ्रः।

छात्राणां छात्रेषु वा दीपकः पटुः।

## अभ्यासप्रश्नाः

**वस्तुनिष्ठप्रश्नाः**

**प्रश्न -1 अधोलिखितेषु पदेषु समुचितविकल्पं चित्वा उत्तरत -**

(क) सम्बोधने विभक्तिः भवति -

(I) द्वितीया (II) तृतीया

(III) प्रथमा (IV) कोऽपि नास्ति।

(ख) कारकाणां संख्या भवति -

(I) सप्त (II) षट्

(III) अष्ट (IV) दश

(ग) कर्ताकारके विभक्तिः भवति -

(I) द्वितीया (II) षष्ठी

(III) प्रथमा (IV) सप्तमी

(घ) कर्ता यत् अत्यधिकम् अभिलषति तत् भवति -

(I) कर्मकारकम् (II) करणकारकम्

(III) कर्ताकारकम्　　　　(IV) अपादानकारकम्

(ङ) अभितः योगे विभक्तिः भवति ?

(I) प्रथमा　　　　(II) तृतीया

(III) द्वितीया　　　　(IV) षष्ठी

**प्रश्न -2 रिक्तस्थानानि पूरयत ।**

(क) अभितः परितः समया .................. हा प्रतियोगेऽपि ?

(ख) प्रकृत्यादिभ्यः ............................ ?

(ग) कर्मणा यमभिप्रैति ..................... ?

(घ) नमस्स्वस्तिस्वाहा ..............................?

(ङ) ध्रुवमपाये ............................ ?

**प्रश्न -3 सत्यकथनानां समक्षम् 'आम्' असत्यकथनानां 'न' इति लिखत -**

(क) सह योगे तृतीया विभक्तिः भवति।

(ख) उभयतः योगे चतुर्थी विभक्तिः भवति।

(ग) 'इत्थं भूतलक्षणे' इति सूत्रेण तृतीया विभक्तिः भवति?

(घ) 'स्वधा' योगे षष्ठी विभक्ति भवति ?

(ङ) रुच्यर्थकधातूनां योगे चतुर्थी भवति ?

**प्रश्न -4 युग्ममेलनं कुरुत -**

| | |
|---|---|
| (क) अग्नये | 1. हस्तेन खादति |
| (ख) प्रकृत्या | 2. स्वाहा |
| (ग) मोहनः | 3. चारुः |
| (घ) अलं योगे | 4. पञ्चमी |
| (ङ) अपादाने | 5. चतुर्थी भवति |

**प्रश्न -5 एकपदेन उत्तरत -**

1. ''भुवः प्रभवः'' इत्यनेन सूत्रेण का विभक्तिः भवति ?
2. 'साधकतमं करणम्' इत्यनेन सूत्रेण का विभक्तिः भवति ?
3. मोहनः हस्तेन खादति इत्यत्र केन सूत्रेण तृतीया भवति ?
4. 'नेत्रेण काणः' इति पदे केन सूत्रेण तृतीया अभवत् ?
5. अधिकरणकारके का विभक्तिः भवति ?

**लघुउत्तरीयाः प्रश्नाः**

1. 'निमित्तत्कर्मयोगे' इति वार्तिकं सोदाहरणं प्रतिपादय ?
2. 'यतश्चनिर्धारणं' इति सूत्रस्य उदाहरणानि लिखत ?

3. ''षष्ठी हेतु प्रयोगे'' इति सूत्रं सोदाहरणपूर्वकं प्रतिपादय ?
4. जुगुप्साविराम इति सूत्रं प्रपूरयत ?
5. अभितः परितः समया-निकषा -हा-प्रति- योगेऽपि' इति वार्तिकं सोदाहरणं प्रतिपादयत।

**दीर्घोत्तरीयाः प्रश्नाः**

1. दुह्याच-पच्-दण्ड-रुधि इत्यादि धातूनाम् उदाहरणानि लिखत ?
2. ''ध्रुवमपायेऽपदानम् इति सूत्रं सोदाहरणं परिभाषयत ?

❖ ❖ ★ ❖ ❖

# अष्टमः अध्यायः

# सन्धि-समास-परिचयः

**सन्धिर्नाम किम्?**

**परिभाषा** - वर्णद्वयस्य सम्मेलनेन यत् स्वाभाविकं परिवर्तनं भवति तदेव सन्धिः।

**यथा**-

विद्या + आलयः = विद्यालयः

सत् + चित् = सच्चित्

मनः + रथः = मनोरथः

**भेदाः**

सन्धेः त्रयः भेदाः भवन्ति

**स्वरसन्धिः व्यञ्जनसन्धिः विसर्गसन्धिः**

(अच् सन्धिः) (हल् सन्धिः)

**(अ) स्वरसन्धिः** - स्वरवर्णस्यसम्मेलने यत् स्वाभाविंक परिवर्तनं भवति तदैव स्वरसंधिः

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यण् | दीर्घ | गुण | वृद्धि | पूर्वरूप | अयादि | पररूप |
| सन्धिः | सन्धिः | सन्धिः | सन्धिः | सन्धिः | सन्धिः | सन्धिः |

**1. यण् सन्धिः**

''इको यणचि'' पा.सू. 6/1/77

''इक्'' इत्यस्मिन् स्थाने ''यण्'' इति भवति यदा ''अच्'' परे भवति।

अर्थात् ह्रस्वः अथवा दीर्घः इ, उ, ऋ, लृ इति स्वरपश्चात् कोऽपि असमानः स्वरः आगच्छति, तदा इ, उ, ऋ, लृ इत्येतेषां स्थाने क्रमशः य्, व्, र्, ल् इति भवति।

इ = य् अति + उत्तमम् = अत्युत्तमम्

उ = व् मधु + अरिः = मध्वरिः

ऋ = ल् लृ + अकारः = लकारः

अत्र परिवर्तनं कथं भवति एतद् द्रष्टव्यम्।

1. अस्ति + उत्तरम् = अस्त्युत्तरम्

इ + उ = यु

2. बन्धु + अवदत् = बन्ध्वदत्

उ + अ = व

3. पितृ + अनुमतिः = पित्रनुमतिः

ऋ + अ = र

4. लृ + आकृतिः = लाकृतिः

लृ + आ = ला

## उदाहरणानि

इ + अ = य

इति + अनुसारः = इत्यनुसारः

इति + अलम् = इत्यलम्

इति + अमरः = इत्यमरः

गति + अलम् = गत्यलम्

इ + आ = या

इति + आवश्यकम् = इत्यावश्यकम्

चलति + एषा = चलत्येषा

अस्ति + आशा = अस्त्याशा

इ + उ = यु

अस्ति + उद्यमः = अस्त्युद्यमः

ई + उ = यु

प्रधी + उपास्यः = प्रध्युपास्यः

उ + अ = व

मन्यु + अरिः = मन्य्वरिः

मधु + अरिः = मध्वरिः

उ + आ = वा

साधु + आगच्छति = साध्वागच्छति

सु + आगतम् = स्वागतम्

ऋतु + आगमनम् = ऋत्वागमनम्

उ + ऐ = वै

लिखतु + ऐकः = लिखत्वैकः

ऋ + अ = र

मातृ + अनुनयः = मात्रनुनयः

धातृ = अंश: = धात्रंश:

ऋ + आ = रा

मातृ + आदेश = मात्रादेश:

भ्रातृ + आगमनम् = भ्रात्रागमनम्

ऋ + ई = री

भर्तृ + ई = भर्त्री

दातृ + ई = दात्री

लृ + आ

लृ + आकार: = लाकार:

**2. दीर्घसन्धि:** –

''अक: सवर्णे दीर्घ:'' (पा.सू. – 6.1.101) यदि अ, इ, उ, ऋ स्वराणां संयोग: सवर्णेन 'इत्युक्ते' क्रमश: अ, इ, उ, ऋ इत्येतै: सह भवति, तदा वर्णद्वयस्य स्थाने दीर्घस्वर: भवति ।

अ/आ + अ/आ = आ – देव + आलय: = देवालय:

इ/ई + इ/ई = ई – कवि + इन्द्र: = कवीन्द्र:

उ/ऊ + उ /ऊ = ऊ – गुरु + उपदेश: = गुरूपदेश:

ऋ/ ऋ + ऋ/ ऋ = ॠ – होतृ + ऋकार: =होतॄकार:

**पश्यन्तु कथं परिवर्तनं भवति** –

1. देव + आलय: = देवालय:

   अ+ आ = आ

2. कवि + इन्द्र: = कवीन्द्र:

   इ + इ = ई

3. गुरु + उपदेश: = गुरूपदेश:

   उ + उ = ऊ

4. होतृ + ऋकार: = होतॄकार:

   ऋ + ऋ = ॠ

## उदाहरणानि

कर + अग्रम् = कराग्रम्

अ + अ = आ   चल+ अचल: = चलाचल:

दैत्य + अरि: = दैत्यारि:

परम + आनन्दः = परमानन्दः

तस्य + अपि = तस्यापि

अ + आ = आ

शस्त्र + आगारः =शस्त्रागारः

कृष्ण + आश्रितः = कृष्णाश्रितः

ज्ञान + आत्मा = ज्ञानात्मा

पुस्तक + आदि = पुस्तकादि

आ + अ = आ

शिक्षा + अध्यायः = शिक्षाध्यायः

शिक्षा + अर्थी = शिक्षार्थी

तथा + अपि = तथापि

गीता + अध्ययनम् = गीताध्ययनम्

आ + आ = आ

महा + आशयः = महाशयः

श्रद्धा + आनन्दः = श्रद्धानन्दः

शिक्षा + आलयः = शिक्षालयः

इ + इ = ई

मुनि + इन्द्रः = मुनीन्द्रः

गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः

हरि + इच्छा = हरीच्छा

अभि + इष्टः = अभीष्टः

इ + ई = ई

क्षिति + ईशः = क्षितीशः

कवि + ईश्वरः = कवीश्वरः

कपि + ईश्वरः = कपीश्वरः

गिरि + ईशः = गिरीशः

ई + ई = ई

गौरी + ईशः = गौरीशः

मही + ईशः = महीशः

श्री + ईश्वरः = श्रीश्वरः

नदी + ईदृशी = नदीदृशी

उ + उ = ऊ

इन्दु + उदयः = इन्दूदयः

तरु + उपेतः = तरूपेतः

गुरु + उत्तमः = गुरूत्तमः

उ + ऊ = ऊ

लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः

ऊ + ऊ = ऊ

भू + ऊर्जा = भूर्जा

भू + ऊसरः = भूसरः

ऋ + ऋ = ॠ

होतृ + ऋकारः = होतृकारः

पितृ + ऋणम् = पितृणम्

### 3. गुणसन्धिः

''आद्गुणः - पा.सू.- 6.1.87

यदि 'अ/आ' इत्यस्य संयोगः इ, उ, ऋ, लृ इत्येतैः सह भवति तदा क्रमशः द्वयोः एव स्थाने क्रमेण ए, ओ, अर्, अल् इति भवन्ति। अ/ओ, अर्, अल् इति भवन्ति।

अ/आ+ इ/ई = ए

उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः

देव + ईशः = देवेशः

अ/आ + उ/ऊ = ओ

चन्द्र + उदयः = चन्द्रोदयः

गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्

अ/आ + ऋ = अर्

देव + ऋषिः = देवर्षिः

अ/आ + लृ = अल्

तव + लृकारः = तवल्कारः

मम + लृकारः = ममल्कारः

**उदाहरणानि**

अ + इ = ए

लोक + इन्द्रः = लोकेन्द्रः

गज + इन्द्रः = गजेन्द्रः

नृप + इन्द्रः = नृपेन्द्रः

अ + ई = ए

नर + ईशः = नरेशः

भव + ईत् = भवेत

भाव + ईशः = भावेशः

आ + इ = ए

महा + इन्द्रः = महेन्द्रः

कथा + इति = कथेति

शिवा + इन्द्रः = शिवेन्द्रः

आ + ई = ए

महा + ईशः = महेशः

रमा + ईशः = रमेशः

उमा + ईशः = उमेशः

आ + उ = ओ

शीत + उदकम् = शीतोदकम्

गज + उदरः = गजोदरः

वृक + उदरः = वृकोदरः

सूर्य + उदयः = सूर्योदयः

अ + ऊ = ओ

सूर्य + ऊष्मा = सूर्योष्मा

जल + ऊर्मिः = जलोर्मिः

आ + उ = ओ

यथा + उक्तः = यथोक्तः

तथा + उक्तः = तथोक्तः

दया + उदयः = दयोदयः

आ + ऊ = ओ

महा + ऊर्जा = महोर्जा

महा + ऊर्मिः = महोर्मिः

अ + ऋ = अर्

ब्रह्म + ऋषिः = ब्रह्मर्षिः

शीत + ऋतुः = शीतर्तुः

आ + ऋ = अर्

राजा + ऋषिः = राजर्षिः

महा + ऋषिः = महर्षिः

वर्षा + ऋतुः = वर्षर्तुः

अ + लृ = अल्

तव + लृकारः = तवल्कारः

**4. वृद्धिसन्धिः**

"वृद्धिरादैच्" (पा.सू. 1.1.1)

यदि अ/आ इत्यस्य पश्चात् ए, ऐ अथवा ओ, औ आगच्छन्ति, तदा द्वयोः स्थाने क्रमशः ऐ, औ च भवति।

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अत्र + एकः = अत्रैकः

तदा+ एव = तदैव

अ/आ + ओ/औ = औ

देव + औदार्यम् = देवौदार्यम्

गङ्गा + ओघः = गङ्गौघः

कथं परिवर्तनं भवति - पश्यन्तु

अत्र + एकः = अत्रैकः

अ + ए = ऐ

तदा + एव = तदैव

आ + ए = ऐ

देव + औदार्यम् = देवौदार्यम्

अ + औ = औ

महा + औषधिः = महौषधिः

**उदाहरणानि**

अ + ए = ऐ

तत्र + एव = तत्रैव

एक + एकम् = एकैकम्

न + एकः = नैकः

देव + एकत्वम् = देवैकत्वम्

आ + ए = ऐ

विद्या + एव = विद्यैव

सा + एव = सैव

सा + एषा = सैषा

सदा + एव = सदैव

अ + ऐ = ऐ

नगर + ऐश्वर्यम् = नगरैश्वर्यम्

देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्

इन्द्र + ऐरावतः = इन्द्रैरावतः

एध + ऐ = एधै

आ + ऐ = ऐ

महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम्

विद्या + ऐश्वर्यम् = विद्यैश्वर्यम्

कला + ऐहिक = कलैहिक

अ + ओ = औ

जल + ओघः = जलौघः

मम + ओकः = ममौकः (ओकः = गृहम्)

उष्ण + ओदनम् = उष्णौदनम्

जल + ओष्णम् = जलौष्णम् (ओष्ण = अल्प-ऊष्णम्)

पुत्र + ओरसः = पुत्रौरसः

आ + ओ = औ

गङ्गा + ओघः = गङ्गौधः

दुर्लभा + ओषधिः = दुर्लभौषधिः

आ + औ = औ

महा + औदार्यम् = महौदार्यम्

कन्या + औरसी = कन्यौरसी

लता + औदकी = लतौदकी (औदकी = जलीय)

महा + औत्सुक्यम् = महौत्सुक्यम्

## 5. पूर्वरूपसन्धिः

"एङः पदान्तादति" (पा.सू. 6.1.109)

पदान्तात् एङोति परे पूर्वरूपम् एकादेशः स्यात्। यदि पदस्य अन्ते विद्यमानः एङ् ('ए', 'ओ') अनन्तरम् अत् (ह्रस्व'अ') विद्यमानः स्यात्, तदा पूर्व ('ए', 'ओ', वा) पर ('अ') च स्थाने पूर्वरूपः ऽ अर्थात् पूर्वस्य समानः वर्ण एकादेश (ए/ओ) भवति। यथा –

हरे + अत्र = हरेऽत्र

ए + अ = ऽ

विष्णो + अव = विष्णोऽव

ओ + अ = ऽ

**6. अयादिसन्धिः**

"एचोऽयवायावः" (पा.सू. 6.1.78)

यदि ए, ऐ, ओ, औ इत्येतेषां पश्चात् कोऽपि असमानस्वरः आगच्छति , तदा तेषां स्थाने क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् इति भवति।

यदि असमानस्वरः अग्रे आगच्छति, तदा

| | |
|---|---|
| ए = अय् | ने + अनम् = नयनम् |
| ऐ = आय् | नै + अकः = नायकः |
| ओ = अव् | भो + अन्ति = भवन्ति |
| औ = आव् | पौ + अकः = पावकः |

**इत्युक्ते**

ए + असमानस्वरः = अय्

ऐ + असमानस्वरः = आय्

ओ + असमानस्वरः = अव्

औ + असमानस्वरः = आव्

असमानस्वरे किमपि परिवर्तनं न भवति इति ध्यातव्यम् । पश्यन्तु कथम् असमानस्वरः तद्वदेव भवति।

ने + अनम् = नयनम्

ए + अ = अय्

नै + अकः = नायकः

ऐ + अ = आय्

भो + अन्ति = भवन्ति

ओ + अ = अव्

पौ + अकः = पावकः

औ + अ = आव्

## उदाहरणानि

ए + अ = अय्

शे + अनम् = शयनम्

(असमानस्वरः) चे + अनम् = चयनम्

हरे + ए = हरये

मुने + ए = मुनये

ऐ + अ = आय्

गै + अति = गायति

(असमानस्वरः) दै + अकः = दायकः

नै + इका = नायिकाः

ओ + अ = अव्

पो + अनः = पवनः

(असमानस्वरः) भानो + ए = भानवे

गुरो + ए = गुरवे

औ + अ = आव्

धौ + अकः = धावकः

(असमानस्वरः) शौ + अकः = शावकः

द्वौ + अपि = द्वावपि

**7. पररूपसन्धिः**

"एङि पररूपम्" (पा. सू. - 6.1.94)

आदुपसर्गा, एङादौधातौ परे पररूपमेकादेशः स्यात् अर्थात् यदि अवर्णान्त परे एङादि (एकारः ओकारः वा) पदम् आगच्छति। तदा पूर्वयोः स्थाने पररूपमेकदेशः स्यात्।

यथा -

प्र + एजते = प्रेजते

अ + ए = ए

उप + ओषति = उपोषति

अ + ओ = ओ

**( ब ) व्यञ्जनसन्धिः ( हल् सन्धिः )**

(व्यञ्जन) हल्वर्णद्वयस्य सम्मेलनेन यत् स्वाभाविकं परिवर्तनं भवति तदेव हल्सन्धिः (व्यञ्जन सन्धिः)

**1. श्चुत्वसन्धि :**

''स्तोः श्चुनाश्चुः'' (पा.सू.- 8.4.40)

'स' अथवा तवर्गात् (त, थ, द, ध, न) पूर्वम् उत्तरं वा 'श' अथवा त वर्गः (त, थ, द, ध, न) अस्ति चेत् तदा 'स' वर्णः 'श', तवर्गः (त, थ, द, ध, न), चवर्गः (च, छ, ज, झ, ञ) भवति।

**यथा :-**

दुस् + चरित्रः = दुश्चरित्रः

उत् + चारणम् = उच्चारणम्

सद् + जनः = सज्जनः

उद् + ज्वलः = उज्ज्वलः

सत् + चित् = सच्चित्

हरिस् + शेते = हरिश्शेते

याच् + ना = याच्ञा

शाङ्र्गिन + जयः = शाङ्र्गिञ्जयः

**2. ष्टुत्व सन्धि :**

''ष्टुना ष्टुः'' (पा.सू. 8.4.41)

''ष्टु'' इत्यस्य अर्थः षकार, ('ष') ट वर्गः (ट, ठ, ड, द, ण)

'स' वा तवर्गात् पूर्वे, उत्तरे वा 'ष' वा ट वर्गः स्यात्, तदा 'स' वर्णः - 'ष' त वर्गः - ट वर्गः भवति।

यथा -

रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः

तत् + टीका = तट्टीका

उद् + डीनः = उड्डीनः

कृष् + नः = कृष्णः

पेष् + ता = पेष्टा

विष् + नुः = विष्णुः

दुष् + टः = दुष्टः

उष् + त्रः = उष्ट्र

**3. जश्त्व सन्धिः**

(क) '' झलां जशोऽन्ते'' (पा.सू. 8.2.39)

वर्गस्य प्रथमं, द्वितीयं, तृतीयं, चतुर्थ वर्ण तस्य वर्गस्य तृतीयवर्णः भवति पदस्य अन्ते स्वर परे च।

वस्तुतः पदान्त झल् प्रत्याहारस्थाने जश् प्रत्याहारः भवति। 'जशत्व' इत्यर्थः स्ववर्गस्य तृतीयाक्षरः भवति।

**यथा**–

सुप् + अन्तः = सुबन्तः

चित् + आनन्दः = चिदानन्दः

षट् + आननः = षडाननः

षट् + एव = षडेव

दिक् + गजः= दिग्गजः

जगत् + ईशः = जगदीशः

अच् + अन्तः = अजन्तः

वाक् + दानम् = वाग्दानम

(ख) ''झलां जश् झशि'' पा.सू. 8.4.53

वर्गस्य प्रथमः, द्वितीयः, तृतीयः, चतुर्थः वर्णः तृतीयवर्णः भवति। अन्ते वर्गस्य तृतीयः, चतुर्थः वर्णः वा स्यात् तदा एषः नियमः पाठमध्ये भवति।

**यथा** -

बुध् + धिः = बुद्धि

लभ् + धः = लब्धः

बोध + धा = बोद्धा

व्यध + धा = व्यद्धा

रुणध् + धि= रुणद्धि

आरम् + धम् = आरब्धम्

युध + धः = युद्धः

**4. चर्त्वसन्धि :**

''खरि च।'' (पा.सू. 8.4.55)

वर्गस्य प्रथमं, द्वितीयं, तृतीयं,चतुर्थ वर्ण तस्य वर्गस्य प्रथमः वर्णः भवति। अन्ते यदि प्रथमः, द्वितीयः तथा श् ष् स् एते वर्णाः स्युः तदा।

अर्थात्

झल्–प्रत्याहारवर्णानां परे स्वर–प्रत्याहारवर्णाः भवन्ति तदा झल्–प्रत्याहारस्थाने चर् - प्रत्याहार

वर्णाः भवन्ति।

तद् + परः = तत्परः

यद् + परः = यत्परः

सद् + कारः = सत्कारः

उद् + पन्नः = उत्पन्नः

सद् + पुत्रः = सत्पुत्रः

उद् + साहः = उत्साहः

दिग् + पालः = दिक्पालः

अद् + ता = अत्ता

आप् + स्यति = आप्स्यति

रभ् + स्यते = रप्स्यते

क्षोद् + ता = क्षोत्ता

**5. अनुस्वारसन्धिः**

''मोऽनुस्वारः'' (पा.सू. 8.2.23)

शब्दस्य अन्तिम मकारात् परं कोऽपि व्यञ्जनः वर्णः स्यात्, तदा 'म' वर्णः अनुस्वारः ( ं ) भवति, किन्तु अन्ते स्वरः अस्ति तदा एषः नियमः न युक्तः भवति।

**यथा** -

धर्मम् + चर = धर्मं चर

गृहम् + गच्छ = गृहं गच्छ

हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे

देवम् + नमामि = देवं नमामि

**6. लत्व सन्धिः**

''तोर्लिः'' (पा.सू. 8.4.60)

यदि 'त' वर्गस्य पश्चात् 'ल' वर्णस्य प्रयोगः भवति यदा 'त' वर्गस्य स्थाने 'ल्' वर्णः भवति।

यथा -

तत् + लयः = तल्लयः

उद् + लेखः = उल्लेखः

महान् + लाभः = महाँल्लाभः

उत् + लासः = उल्लासः

पद् + लवः = पल्लवः

तत् + लीन = तल्लीनः

7. **परसवर्णसन्धिः**

"अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः" (पा.सू. 8.4.58)

यय् प्रत्याहारः यदि परे भवति चेत् अनुस्वारस्थाने परसवर्ण भवति।

यथा –

अंकः = अङ्कः

गंगा = गङ्गा

मंचः = मञ्चः

खंजः = खञ्चः

घंटा = घण्टा

कांडम् = काण्डम्

मंथनम् = मन्थनम्

मंदः = मन्दः

कंपनम् = कम्पनम्

स्तंभः = स्तम्भः

**(स) विसर्ग सन्धिः**

"विसर्जनीयस्य सः" (पा.सू. – 8.3.34)

विसर्गेण सह स्वरस्य अथवा व्यञ्जनस्य मेलनेन यः विकारः भवति तं विसर्गसन्धिः इति कथ्यते।

**यथा** –

मनः + हरः = मनोहरः

मनः + रथः = मनोरथः

(अ) विसर्गात् पश्चात् 'च' अथवा 'छ' स्यात् तदा विसर्गस्य 'श्' भवति ।

**यथा**–

बालः + चलति = बालश्चलति

भानुः + चलति = भानुश्चलति

प्रियः + छात्रः = प्रियश्छात्रः

(ब) विसर्गात् पश्चात् 'त' अथवा 'थ' स्यात् तदा विसर्गस्य 'स' भवति।

**यथा**–

नम्राः + तरवः = नम्रास्तरवः

देवः + त्वम् = देवस्त्वम्

दुर्गः + तरति = दुर्गस्तरति

निः + तारः = निस्तारः

दुः + थलः = दुस्थलः

(स) यदि विसर्गात् पूर्वम् अथवा अनन्तरम् 'अ' स्यात् तदा अकारविसर्गयोः स्थाने 'ओ' भवति। तथा अनन्तरं यः अकारः तस्य पूर्वरूपं (ऽ) भवति।

सः + अपि = सोऽपि

कः + अस्ति = कोऽस्ति

शिवः + अर्च्य = शिवोऽर्च्यः

देशः + अयम् = देशोऽयम्

(द) यदि विसर्गात् पूर्वम् 'अ' तथा अनन्तरम् 'अ' वर्ण विहाय अन्यः कोऽपि स्वरवर्णः स्यात् तदा विसर्गस्य लोपः भवति यथा -

सूर्यः + उदेति = सूर्य उदेति

एकः + एव = एक एव

बालः + आगच्छति = बाल आगच्छति

(इ) यदि विसर्गात् पूर्वम् 'अ' अनन्तरं च कोऽपि व्यञ्जनवर्णः अर्थात् ( वर्गाणां तृतीयः, चतुर्थः, पञ्चमः वर्णः य, र, ल, व, ह) भवति तदा पूर्व - अकारविसर्गयोः स्थाने 'ओ' भवति।

पुरः + हितः = पुरोहितः

वयः + वृद्धः= वयोवृद्ध

बालः + नमति = बालो नमति

रामः + गच्छति = रामो गच्छति

(फ) यदि विसर्गात् पूर्वम् आ अनन्तरं 'कोऽपि' स्वरः अथवा कोऽपि व्यञ्जनवर्णः अर्थात् वर्गाणां तृतीयः, चतुर्थः पञ्चमः वर्णः य, र, ल, व, ह भवति। तदा विसर्गस्य लोपः भवति।

बालाः + आगच्छन्ति = बाला आगच्छन्ति

बालकाः + गच्छन्ति = बालका गच्छन्ति

नराः + हसन्ति = नरा हसन्ति

देवाः + यान्ति = देवा यान्ति

(ज) विसर्गात् पूर्वम् 'अ' /'आ' वर्ण त्यक्त्वा कोऽपि अन्यस्वरः भवति तथा विसर्गात् अनन्तरं कोऽपि स्वरः अथवा मृदुव्यञ्जनवर्णः अर्थात् (वर्णानां तृतीयः, चतुर्थः, पञ्चमः वर्ण तथा य्, र्,ल्,व्, ह्) भवति तदा विसर्गस्य स्थाने 'र' भवति। यदि पश्चात् स्वरः भवति तदा 'र' स्वरेण सह मिलति, तथा पश्चात् व्यञ्जनवर्णः भवति तदा 'र' वर्णस्य (रेफ) भवति।

**यथा** -

दुः + आत्मा = दुरात्मा

हरिः + अवदत् = हरिरवदत्

वधूः + एषा = वधूरेषा

भानुः + उदेति = भानुरुदेति

कवेः + गमनम् = कवेर्गमनम्

गुरो + आदेशः = गुरोरादेशः

# समासः

**'समसनं समासः'**

अनेकस्य पदस्य एकपदीभवनं समासः । समसनं इत्युक्ते संक्षेपीकरणम्। पदद्वयोः बहूनां पदानां वा मेलनं समासः । समासे पदविभक्तीनां लोपः भवति।

यथा–

राज्ञः पुरुषः

– राजन् + ङस् + पुरुष + सु = राजपुरुषः

**समासभेदविवेचनम्**

(समासः पञ्चधा)

1. अव्ययीभाव समासः
2. तत्पुरुषसमासः
   - सामान्यः
   - कर्मधारयः
   - नञ्
3. द्विगुः
4. बहुव्रीहिसमासः
5. द्वन्द्वसमासः

**1. अव्ययीभावसमासः –**

(प्रायेण – पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः) यत्र प्रथमपदं प्रधानं भवति तथा च प्रथमपदं अव्ययं भवति, द्वितीयपदं संज्ञावाचकं भवति सः अव्ययीभावसमासः।

**यथा –**

शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्तिः

गङ्गायाः समीपम् = उपगङ्गम्

अव्यवीभावसमासः प्रसिद्धः केचन भेदाः प्रदशर्यन्ते

| | | |
|---|---|---|
| 1. समीपार्थकः | कृष्णस्य समीपम् | उपकृष्णम् |
| 2. अभावार्थकः | मक्षिकाणाम् अभावः | निर्मक्षिकम् |
| 3. योग्यतार्थकः | रूपस्य योग्यम् | अनुरूपम् |
| 4. वीप्सार्थकः | दिनं दिनं प्रति | प्रतिदिनम् |
| 5. पदार्थानतिवृत्त्यर्थकः | शक्तिम् अनतिक्रम्य | यथाशक्तिः |
| 6. मर्यादार्थः | आ मुक्तेः | आमुक्तिः (संसारः) |
| 7. अभिविध्यर्थकः | आ बालेभ्यः | आबालम् (हरिभक्तिः) |

| | | |
|---|---|---|
| 8. अभिमुख्यार्थकः | अग्रिम अभि | अभ्यग्नि |
| 9. मात्रार्थकः | शाकस्यलेशः | शाकप्रति |
| 10. अवधारणार्थकः | यावन्तः श्लोकाः | यावच्छलोकम् |
| 11. पारेशब्दयुक्तः | पारे समुद्रस्य | पारेसमुद्रम् |
| 12. मध्येशब्दयुक्तः | मध्ये गङ्गायाः | मध्यगङ्गम् |

**उदाहरणानि**

रामस्य समीपम् = उपरामम्

मद्राणां समृद्धिः = समुद्रम्

यवनानां वृद्धिः = दुर्यवनम्

मक्षिकाणाम् अभावः = निर्मक्षिकम्

हिमस्य अत्ययः = अतिहिमम्

निद्रा सम्प्रति न युज्यते = अतिनिद्रम्

हरिशब्दस्य प्रकाशः = इतिहरिः

विष्णोः पश्चाद् = अनुविष्णुः

रूपस्य योग्यम् = अनुरूपम्

अर्थम् अर्थ प्रति = प्रत्यर्थम्

हरेः सादृश्यं = सहरिः

ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण = अनुज्येष्ठम्

चक्रेण युगपत् = सचक्रम

सदृशः सख्या = ससखि

क्षत्राणां सम्पत्तिः = सक्षत्रम्

तृणमपि परित्यज्य = सतृणम्

अग्निग्रन्थपर्यन्तमधीते = साग्नि

**2. तत्पुरुषसमासः**

''प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः'' –

यत्र पूर्वपदं द्वितीया विभक्तितः सप्तमी विभक्तिपर्यन्तम् भवति तथा उत्तरपदं प्रथमाविभक्तौ भवति तत्र तत्पुरुषसमासः।

**द्वितीयातत्पुरुषः** – यदा तत्पुरुषसमासस्य पूर्वपदं द्वितीयान्तं भवति तद द्वितीया तत्पुरुषः भवन्ति

कूपं पतितः = कूपपतितः

ग्रामं गतः = ग्रामगतः

कृष्णम् आश्रितः = कृष्णाश्रितः

दु:खम् अतीत: = दु:खातीत:

मेघम् अत्यस्त: = मेघात्यस्त:

सुखं प्राप्त: = सुखप्राप्त:

भयम् आपन्न: = भयापन्न:

ग्रामं गमी = ग्रामगमी

अन्नं बुभुक्षु: = अन्नबुभुक्षु:

मासं प्रमित: = मासप्रमित:

क्षणं स्थायी = क्षणस्थायी

मुहूर्त सुखम् = मुहूर्तसुखम्

मुहूर्त व्यापी = मुहूर्तव्यापी

**तृतीयातत्पुरुषः** –

यदा तत्पुरुषसमासस्य पूर्वपदं तृतीयान्तं भवति तदा तृतीया तत्पुरुषसमास: भवति।

मासेन पूर्व: = मासपूर्व:

मात्रा सदृश: = मातृसदृश:

पित्रा सम: = पितृसम:

धान्येन ऊनम् : = धान्योनम्

वाचा कलह: = वाक्कलह:

आचारेण निपुण: = आचारनिपुण:

शर्करया-मिश्रम् = शर्करामिश्रम्

गुडेन युक्तम् = गुडयुक्तम्

मासेन अवर: = मासावर:

हरिणा त्रात: = हरित्रात:

नखै: भिन्न: = नखभिन्न:

धनेन हीन: = धनहीन:

**चतुर्थीतत्पुरुषः** –

यूपाय दारु: = यूपदारु:

कुम्भाय मृत्तिका = कुम्भमृत्तिका

द्विजाय अयम् इति = द्विजार्थ:

भूतेभ्य: बलि: = भूतबलि:

गवे रक्षितम् = गोरक्षितम्

गवे सुखम् = गोसुखम्

यज्ञाय शाला = यज्ञशाला

भिक्षायै अटनम् = भिक्षाटनम्

**पञ्चमीतत्पुरुषः** –

चौरात् भयम् = चौरभयम्

व्याघ्रात भीतः = व्याघ्रभीतः

सिंहात् भीतिः = सिंहभीतिः

अपयशः भीः = अपयशोभीः

आलस्यात् मुक्तः = आलस्यमुक्तः

सुखात् अपेतः = सुखापेतः

स्वर्गात् पतितः = स्वर्गपतितः

धर्मात् भ्रष्टः = धर्मभ्रष्टः

**षष्ठीतत्पुरुषः** –

राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः

रामस्य भक्तिः = रामभक्तिः

बुद्धेः नाशात् = बुद्धिनाशात्

स्मृतेः विभ्रमः = स्मृतिविभ्रमः

तस्य पुरुषः = तत्पुरुषः

गुरोः वचनम् = गुरुवचनम्

वानराणां यूथम् = वानरयूथम्

भुवः पतिः = भूपतिः

**सप्तमीतत्पुरुषः** –

क्रीडायां प्रवीणः = क्रीडाप्रवीणः

कार्ये पटुः = कार्यपटुः

शास्त्रेषु पण्डितः = शास्त्रपण्डितः

व्यवहारे कुशलः = व्यवहारकुशलः

वाचि निपुणः = वक्निपुणः

आतपे शुष्कः = आतपशुष्कः

चक्रे बन्धः = चक्रबन्धः

जले मग्नः = जलमग्नः

सभायां पण्डितः = सभापण्डितः

व्यापारे धूर्तः = व्यापारधूर्तः

**नञ्तत्पुरुषसमासः** –

यदि तत्पुरुषसमासे प्रथमशब्दः 'न' इति भवति द्वितीयः संज्ञा अथवा विशेषणं भवति तथा नञ्तत्पुरुषसमासः भवति।

यदि 'न' स्वरवर्णात् पूर्वं भवति तदा 'न' इत्यस्थाने 'अन्' इति भवति। यथा –

न आदरः = अनादरः

न अश्वः = अनश्वः

न इच्छा = अनिच्छा

न एकः = अनेकः

न उपदेशः = अनुपदेशः

न ऐश्वर्यम् = अनैश्वर्यम्

न औषधः = अनौषधः

न अङ्गम् = अनङ्गम्

यदि 'न' इति व्यञ्जनवर्णात् पूर्वं भवति तदा 'न' इत्यस्थाने 'अ' भवति। **यथा**–

न कार्यम् = अकार्यम्

न पवित्रः = अपवित्रः

न खण्डः = अखण्डः

न हिंसा = अहिंसा

न धर्मः = अधर्म

न ब्राह्मणः = अब्राह्मणः

**कर्मधारयसमासः** (स चासौ कर्मधारयः)

यत्र प्रथमं पदं विशेषणम्, उपमानं वा तथा द्वितीयं पदं विशेष्यम् उपमेयं वा भवति तत्र कर्मधारयसमासः भवति।

**यथा** –

वीरः पुरुषः = वीरपुरुषः

महान् वीरः = महावीरः

पीतम् अम्बरम् = पीताम्बरम्

चपलः वानरः = चपलवानरः

जीर्णम् उद्यानम् = जीर्णोद्यानम्

महान् ऋषिः = महर्षिः

अत्र प्रथम पदं विशेषणम् अस्ति

अग्रे प्रथमं पदम् उपमानं भवति तेषाम् उदाहरणम्।

**यथा** -

घन इव श्याम: = घनश्याम:

चन्द्र इव आह्लादक: = चन्द्राह्लादक:

नवीनतम् इव कोमलम् = नवनीतकोमलम्

कमलम् इव नेत्रम् = कमलनेत्रम्

चन्द्र इव मुखम् = चन्द्रमुखम्

**3. द्विगुसमासः** -

"संख्यापूर्वो द्विगु:"

यत्र प्रथमं पदं सङ्ख्यावाची भवति तथा च उत्तरपदस्य विशेषतां ज्ञापयति स: द्विगुसमास: भवति। द्विगुसमासे समूहवाचक: अर्थ: भवति-

चतुर्णा युगानां समाहार: = चतुर्युगम्

पञ्चानां गवां समाहार: = पञ्चगवम्

नवानां ग्रहाणां समाहार: = नवग्रहम्

पञ्चानां वटानां समाहार: = पञ्चवटी

त्रयाणां लोकानां समाहार: = त्रिलोकी

पञ्चानां मूलानां समाहार: = पञ्चमूली

**4. बहुव्रीहिसमासः** -

"प्रायेण- अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहि:"

यत्र सामासिकपदेभ्य: अन्यस्य बोध: भवति स: वहुव्रीहि:।

बहुव्रीहिसमासस्य अन्ते यस्य स: अथवा येन इति शब्द: भवति।

पीतम् अम्बरं यस्य स: (विष्णु) - पीताम्बर:

चन्द्रशेखरे यस्य स: (शिव:) - चन्द्रशेखर:

दश आननानि यस्य स: (रावण:) - दशानन:

लम्बम् उदरं यस्य स: (गणेश:) - लम्बोदर:

उपहृत: पशु: यस्मै स: (रुद्र:) - उपहृतपशु:

अविद्यमान: पुत्र: यस्य स: (विष्णु) - अपुत्र:

**5. द्वन्द्वसमासः**

"प्रायेणोभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्व:"

अर्थात् यत्र समेषां पदानां प्राधान्यं भवति तत्र द्वन्द्वसमास:।

रामलक्ष्मणौ = रामश्च लक्ष्मणश्च

हरिहरौ = हरिश्चहरश्च

पितरौ = माता च पिता च

हेमन्तशिशिरवसन्ताः = हेमन्तश्च शिशिरश्च वसन्तश्च

शिवकेशवौ = शिवश्च केशवश्च

ईशकृष्णौ = ईशश्च कृष्णश्च

पाणिपादौ = पाणी च पादौ च

**अभ्यासप्रश्नाः**

**वस्तुनिष्ठप्रश्नाः**

**प्रश्न -1 अधोलिखितेषु पदेषु समुचितविकल्पं चित्वा उत्तरत -**

(क) सन्धिः भवति -

(I) शब्दसम्मेलनेन (II) वर्णसम्मेलनेन

(III) अर्थसम्मेलनेन (IV) वाक्यसम्मेलनेन

(ख) सन्धेः भेदाः भवन्ति -

(I) त्रयः (II) चत्वारः

(III) पञ्च (IV) षड्

(ग) स्वरसन्धेः अपरनाम वर्तते -

(I) 'अच्' सन्धिः (II) 'विसर्ग' सन्धिः

(III) 'हल्' सन्धिः (IV) 'चय्' सन्धिः

(घ) ''श्चुत्वसन्धिः'' भेदः अस्ति-

(I) अच् सन्धेः (II) स्वरसन्धेः

(III) व्यञ्जनसन्धे (IV) विसर्गसन्धिेः

(ङ) एतस्मिन् समासे पूर्वपदं प्रधानं भवति ?

(I) तत्पुरुषसमासे (II) बहुव्रीहिसमासे

(III) अव्ययीभावसमासे (IV) द्विगुसमासे

**प्रश्न -2 रिक्तस्थानानि पूरयत -**

(क) सन्धेः ..................... भेदाः वर्तन्ते ?

(ख) गुणसन्धि ..................भेदः अस्ति ?

(ग) 'भानु श्चलति' ......................... सन्धेः उदाहरणमस्ति?

(घ) तत्पुरुषसमासे ...................... प्रधानं भवति ?

(ङ) पीताम्बरः .................समासस्य उदाहरणमस्ति ?

**प्रश्न -3 सत्यकथनानां पुरतः 'आम्' असत्यकथनानां पुरतः 'न' इति लिखत -**

(क) 'हल' सन्धेः अपरनाम विसर्गसंधिः अस्ति।

(ख) 'घनश्यामः' कर्मधारयसमासस्य उदाहरणम् अस्ति।

(ग) द्वन्द्वसमासस्य प्रथमं पदं संख्यावाची भवति।

(घ) पदानां सम्मेलनं समासे भवति।

(ङ) ''अनादर:'' नञ्तत्पुरुषसमासस्य उदाहरणमस्ति।

**प्रश्न - 4 युग्ममेलनं कुरुत -**

| | |
|---|---|
| (क) अन्ययपदप्रधानम् | 1. अयादिसंधि: |
| (ख) पितरौ | 2. चर्त्वसन्धि: |
| (ग) भूतपूर्व: | 3. द्वन्द्व समास: |
| (घ) नायक: | 4. केवल समास: |
| (ङ) 'खरि च।' | 5. बहुव्रीहि समास: |

**प्रश्न - 5 एकपदेन उत्तरत -**

(क) 'देवालय:' इत्यस्मिन् पदे क: सन्धि: ?

(ख) 'इक' इत्यस्मिन् स्थाने 'यण्' कस्यां सन्धौ भवति ?

(ग) 'एचोऽयवायाव:'' कस्य सन्धे: सूत्रं वर्तते ?

(घ) ''चतुर्युगं'' कस्य समासस्य उदाहरणमस्ति ?

(ङ) समेषां पदानां प्राधान्यं कस्मिन् समासे वर्तते ?

**प्रश्न - 6 एकवाक्येन उत्तराणि लिखत-**

1. ''कवीन्द्र:' इत्यस्य पदस्य संधिविच्छेदं कृत्वा सन्धेर्नाम लिखत ?
2. वृद्धिसन्धे: एकमुदाहरणं दत्वा सन्धिविग्रहं कुरुत ?
3. ''लत्वसन्धिं'' परिभाषयत ?
4. ''हरिहरौ'' पदस्य समासविग्रहं कृत्वा समासस्य नाम लिखत ?
5. केवलसमासस्य उदाहरणं दत्वा समासविग्रहं कुरुत ?

**प्रश्न - 7 लघूत्तरीया: प्रश्ना:**

1. ष्टुत्व सन्धिं सोदाहरणं परिभाषयत ?
2. जशत्वसन्धे: उदाहरणं दत्वा परिभाषयत ?
3. ''विसर्जनीयस्य स:'' सूत्रं सोदाहरणं प्रतिपादयत ?
4. ''बहुव्रीहिसमासं'' सोदाहरणं परिभाषयत ?
5. द्विगुसमासस्य उदाहरणं दत्वा परिभाषां लिखत ?

**प्रश्न 8 - दीर्घोत्तरीया: प्रश्ना:**

1. स्वरसन्धे: भेदोपभेदं सोदाहरणं प्रतिपादयत ?
2. तत्पुरुषसमासस्य भेदान् सोदाहरणं परिभाषयत ?

❖ ❖ ★ ❖ ❖

# नवमः अध्यायः

# वाक्यरचना-अनुवादः

**''सुप्तिङन्तं पदं''**

❉ संस्कृतभाषायां पदद्वयं भवति

1. सुबन्तपदम्
2. तिङन्तपदम्

❉ 'सुबन्तपद' इत्यस्य आशयः शब्दपदम्।

❉ 'तिङन्तपद' इत्यस्य आशयः धातुपदम्।

यथा-

बालकः गच्छति

❉ अत्र 'बालकः' शब्दपदं, 'गच्छति' धातुपदमस्ति। वस्तुतः 'बालकः' कर्तृपदं, 'गच्छति' क्रियापदं।

❉ कर्तृपदानुसारं क्रियायां तिङन्तप्रत्ययानां प्रयोगः भवति।

अत्र 'बालक' इति शब्दः प्रथमा- (एकवचने) अस्ति, अतः क्रिया अपि प्रथमपुरुषे एकवचने भवति।

वाक्यनिर्माणाय पुरुषवचनयोः ज्ञानम् अपि आवश्यकम्।

वचनम् - वचनस्य अर्थः 'संख्या' इति भवति। यानि शब्दरूपाणि धातुरूपाणि च भवन्ति। तेषु प्रत्येकेषु वचनत्रयं भवति।

एकवचनम्, द्विवचनम्, बहुवचनम् च

एकवस्तुम् एकव्यक्तिम् एकवचने एव वक्तव्यं।

यथा -

एकवचने बालकः (एकः बालकः)

द्विवचने बालकौ (द्वौ बालकौ)

बहुवचने बालकाः (बहवः बालकाः)

यथा 'बालक शब्दः यस्मिन् वचने भवति तदनुसारेण क्रियायाः प्रयोगः अपि तस्मिन् वचने एव भवति

एकवचने बालकः गच्छति।

द्विवचने बालकौ गच्छतः।

बहुवचने बालकाः पठन्ति।

''पुरुषः'' पुरुषाः अपि त्रिधा भवन्ति।

उत्तमपुरुषः

मध्यमपुरुषः

प्रथमपुरुषः

उत्तमपुरुषः 'अस्मद्' शब्दः उत्तमपुरुषः भवति। अहं (मैं), आवां (हम दोनों) वयं (हम सब) इत्यादयः प्रयोगाः उत्तमपुरुषे भवन्ति।

मध्यमपुरुषः युष्मद् शब्दाः मध्यपुरुषः भवति। त्वं (तुम), युवां (तुम दोनों), यूयं (तुम सब), इत्यादयः प्रयोगाः मध्यमपुरुषे भवन्ति।

प्रथमपुरुषः – 'अस्मद्' 'युष्मद्' शब्दौ विहाय, ये शेष शब्दाः भवन्ति। ते सर्वे शब्दाः प्रथमपुरुषे भवन्ति।

यथा, भवत्, रामः, बालकः राधा, इत्यादयः अवशिष्टाः सर्वे शब्दाः प्रथमपुरुषे एव भवन्ति।

## (अ) कारकाधारिता वाक्यरचना

### कर्ताकारकम् (प्रथमा विभक्तिः)

| क्रमांक | हिन्दीवाक्यानि | संस्कृत-अनुवादः |
|---|---|---|
| 1. | बालक रोता है। | शिशुः रोदिति। |
| 2. | मेरे द्वारा जल पिया जाता है। | मया जलं पीयते। |
| 3. | प्रभु! क्षमा करो। | प्रभो ! क्षमस्व। |
| 4. | एक दोना चावल। | द्रोणो व्रीहिः। |
| 5. | दुष्यन्त नामक प्रसिद्ध राजा। | दुष्यन्त इति विख्यातः नृपः। |
| 6. | अशोक नामक राजा था। | अशोकः नाम राजा आसीत्। |
| | **कर्मकारकम् (द्वितीया विभक्तिः)** | |
| 7. | हरि को भजता है। | हरिं भजति। |
| 8. | गाय से दूध दुहता है। | गां दोग्धि पयः। |
| 9. | बलि से पृथ्वी मांगता है। | बलिं याचते वसुधाम्। |
| 10. | चावल से भात पकाता है। | तण्डुलान् ओदनं पचति। |
| 11. | गाय को बाड़े में रोकता है। | व्रजं अवरुणद्धि गाम्। |
| 12. | बालक से मार्ग पूछता है। | बालं मार्गं पृच्छति। |
| 13. | वृक्ष से फल चुनता है। | वृक्षात् फलानि अवचिनोति। |

| | | |
|---|---|---|
| 14. | राम से सौ रुपये जीतता है। | रामं शतं जयति। |
| 15. | गांव में बकरी ले जाता है। | ग्रामं अजां नयति। |
| 16. | महीने भर पढ़ता है। | मासं अधीते। |
| 17. | शत्रुओं को स्वर्ग भेजा । | शत्रून् आगमयत् स्वर्गम्। |
| 18. | हरि वैकुण्ठ में रहते हैं। | अधिशेते वैकुण्ठं हरिः। |
| 19. | हरि वैकुण्ठ में बसते है। | उपवसति वैकुण्ठं हरिः। |
| 20. | पर्वत के सब ओर वृक्ष हैं। | सर्वतः पर्वतं वृक्षाः। |
| 21. | कृष्ण के दोनों ओर ग्वाल हैं। | उभयतः कृष्णं गोपाः। |
| 22. | मूर्ख होकर जीना पाप है। | धिक् पापं मूर्खजीवनं। |
| 23. | तेरे-मेरे बीच में हरि हैं। | अन्तरा त्वां मां हरिः। |
| 24. | दीनों पर दया करो। | दीनान् प्रति दयां कुरु। |

**करणकारकम् ( तृतीया विभक्तिः )**

| | | |
|---|---|---|
| 25. | राम के बाण से बाली मारा गया। | रामेण बाणेन बालिः हतः। |
| 26. | स्वभाव से कोमल है। | प्रकृत्या मृदुः। |
| 27. | मेरा कश्यप गोत्र है। | गोत्रेण कश्यपोऽहम्। |
| 28. | पासों से खेलता है। | अक्षैः (अक्षान् वा) दीव्यति। |
| 29. | जटाओं से वह तपस्वी लगता है। | जटाभिः तापसः। |
| 30. | बारह वर्ष तक व्याकरण पढ़ा। | द्वादशवर्षैः व्याकरणं अधीतम्। |
| 31. | पुत्र के साथ पिता आया। | पुत्रेण सह आगतः पिता। |
| 32. | आंख से काणा है। | अक्ष्णा काणः। |
| 33. | किसलिए यहां रहता है? | केन हेतुना अत्र वसति? |
| 34. | परिश्रम व्यर्थ है। | अलं श्रमेण। |
| 35. | श्रम के बिना विद्या नहीं रहती। | श्रमेण विना विद्या न लभ्यते। |
| 36. | साहित्य के बिना नर पशु है। | साहित्येन विहीनः नरः पशुः |

**सम्प्रदानकारकम् ( चतुर्थी विभक्तिः )**

| | | |
|---|---|---|
| 37. | कृष्ण ब्राह्मण को गाय देता है। | कृष्णः विप्राय गां ददाति। |
| 38. | गणेश को लड्डू अच्छे लगते हैं। | गणेशाय मोदकं रोचते। |
| 39. | विद्या ज्ञान के लिए है। | विद्या ज्ञानाय। |
| 40. | राम मेरा सौ रुपये का कर्जदार है। | रामः मह्यं शतं धारयति। |
| 41. | गुरु शिष्य पर क्रोध करता है। | गुरुः शिष्याय कुप्यति। |

| | | |
|---|---|---|
| 42. | ब्राह्मण को गाय देने को कहता है। | विप्राय गां प्रति शृणोति। |
| 43. | श्याम का कल्याण हो। | श्यामाय स्वस्ति। |
| 44. | राम को नमस्कार है। | रामाय नमः। |
| 45. | वह गांव जाता है। | स ग्रामाय (ग्रामं) गच्छति। |

## अपादानकारकम् (पञ्चमी विभक्तिः)

| | | |
|---|---|---|
| 46. | ग्राम से आता है। | ग्रामात् आयाति। |
| 47. | पाप से घृणा करता है। | पापात् जुगुप्सते। |
| 48. | धर्म से प्रमाद करता है। | धर्मात् प्रमाद्यति। |
| 49. | चोर से डरता है। | चौरात् विभेति। |
| 50. | चोर से रक्षा करता है। | चौरात् रक्षति। |
| 51. | अध्ययन से हार मानता है। | अध्ययनात् पराजयते। |
| 52. | अग्नि से बालक को हटाता है। | अग्नेः बालं वारयति। |
| 53. | उपाध्याय से पढ़ता है। | उपाध्यायात् अधीते। |
| 54. | ब्रह्मा से प्रजा उत्पन्न होती है। | ब्रह्माः प्रजाः जायन्ते। |
| 55. | हिमालय से गंगा निकलती है। | हिमालयात् गंगा प्रभवति। |
| 56. | तुम कहाँ हो ? | कस्मात् त्वम् ? |
| 57. | वन से ग्राम एक योजन है। | वनात् ग्रामो योजनम्। |
| 58. | ज्ञान के बिना सुख नहीं। | ज्ञानात् ऋते सुखं नास्ति। |
| 59. | ग्राम के बाहर | ग्रामात् बहिः। |
| 60. | राम से अलग। | (रामं, रामेण) रामात् वा पृथक्। |

## सम्बन्धकारकम् (षष्ठी विभक्तिः)

| | | |
|---|---|---|
| 61. | राजा का पुरुष। | राज्ञः पुरुषः। |
| 62. | पाणिनी का शिष्य। | पाणिनेः शिष्य। |
| 63. | माता का स्मरण करता है। | मातुः (मातरं) स्मरति। |
| 64. | राम के बराबर कृष्ण है। | रामस्य समानः कृष्णः। |
| 65. | कृष्ण की तुलना नहीं है। | कृष्णस्य उपमा नास्ति। |
| 66. | नगर से दूर (समीप)। | नगरस्य दूरं (समीपं वा)। |
| 67. | नगर के उत्तर में। | नगरस्य उत्तरतः। |
| 68. | पढ़ने के लिए। | पठनस्य कृते। |
| 69. | गुरु के समक्ष। | आचार्यस्य समक्षम्। |

| | | |
|---|---|---|
| 70. | बालकों के बीच। | बालकानाम् मध्ये। |
| 71. | घर के अंदर। | गृहस्य अन्ते (अन्तः वा)। |
| 72. | माता रोते बच्चे के पास से गई। | रुदतः शिशोः माता ययौ। |
| 73. | अन्न के लिए रहता है। | अन्नस्य हेतोः वसति। |
| 74. | सौ का दांव लगाता है। | शतस्य दीव्यति। |

**अधिकरणकारकम् ( सप्तमी विभक्तिः )**

| | | |
|---|---|---|
| 75. | देवदत्त चटाई पर सोता है। | देवदत्तः कटे शेते। |
| 76. | मेरी व्याकरण में इच्छा है। | मम व्याकरणे इच्छास्ति। |
| 77. | तिलों में तेल। | तिलेषु तैलम्। |
| 78. | गायें दुहते समय श्याम गया। | गोषु दुह्यमानासु श्यामः गतः। |
| 79. | मेरे भोजन के समय पानी बरसा। | मयि भोक्ष्यमाणे मेघः अवर्षत्। |
| 80. | मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है। | नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः। |
| 81. | गायों में काली गाय बहुत दूध देती है। | गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा। |
| 82. | चलने में दौड़ने वाला तेज होता है। | गच्छतां गच्छत्सु वा धावन् शीघ्रः। |
| 83. | छात्रों में श्याम चतुर है। | छात्राणां छात्रेषु वा श्यामः पटुः। |
| 84. | आपका हमारे पास क्या है ? | अस्मासु भवतां किं अधीनतम् ? |
| 85. | सूर्य उदय होने पर कमल खिलता है। | सूर्ये उदिते कमलं विकसति। |
| 86. | कार्य में तत्पर। | कार्ये तत्परः । |
| 87. | चर्म के लिए व्याघ्र को मारता है। | चर्मणि द्वीपिनं हन्ति। |
| 88. | रात को पढ़ता है। | रात्रौ पठति। |

**( ब ) शब्दरूप आधारित-वाक्यरचना**

| क्रमांक | वाक्य | अनुवादः |
|---|---|---|
| 1. | फल आने पर पेड़ झुक जाते हैं। | भवन्ति नम्राः तरवः फलागमे। |
| 2. | चन्द्रमा मन से उत्पन्न हुआ। | चन्द्रमा मनसः जातः। |
| 3. | कुछ बातचीत सुनाई देती है। | आलाप इव श्रूयते। |
| 4. | आपकी विजय हो। | विजयतु भवान्। |
| 5. | मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं। | अहं त्वां प्रार्थये। |
| 6. | गंगा के किनारे हरिद्वार है। | गंगा तटे हरिद्वारम्। |
| 7. | नदी के दोनों ओर खेत हैं। | नदीम् उभयतः क्षेत्राणि। |
| 8. | क्यों मुझे धोखा देते हो ? | कि माम् विप्रलभसे ? |

| | | |
|---|---|---|
| 9. | हरि वैकुण्ठ में रहते हैं। | अधिवसति वैकुण्ठं हरिः। |
| 10. | भूखे को कुछ भी अच्छा नहीं लगता । | बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित्। |
| 11. | तुम्हारे और मेरे बीच में कमण्डल है। | अन्तरा त्वां च मां च कमण्डलु। |
| 12. | वह गाय का दूध दुहता है। | सः धेनुं पयो दोग्धि। |
| 13. | देवदत्त से भात पकवाता है। | देवदत्तेन ओदनं पाचयति। |
| 14. | राम को ग्राम भेजता है। | रामं ग्रामं प्रेषयति। |
| 15. | किस दाम पर पुस्तक खरीदी ? | कियत् मूल्येन क्रीतं पुस्तकम्। |
| 16. | वह खाते हुए चलता है। | सः गच्छन् चरति। |
| 17. | दान में कुबेर है। | धनदेन समत्यागे। |
| 18. | घोड़े से बाज आए। | कृतम् अश्वेन। |
| 19. | उलट-पुलटा न समझो। | अलम् अन्यथा गृहीत्वा। |
| 20. | वह पांसे से खेलता है। | अक्षैः (अक्षान् वा) दीव्यति। |
| 21. | यज्ञदत्त को मालपुआ अच्छा लगता है। | यज्ञदत्ताय रोचते अपूपः। |
| 22. | वन के लिए गाय को छोड़ दी। | वनाय गां अमुञ्चन। |
| 23. | आपका कल्याण हो। | स्वस्ति भवते। |
| 24. | श्री गणेशजी को नमस्कार। | श्री गणेशाय नमः। |
| 25. | देवी का स्वागत। | स्वागतं दैव्यै। |
| 26. | मैं तुम्हें तिनके के बराबर समझता हूं। | न त्वं तृणाय (तृणं वा) मन्ये। |
| 27. | सौ रुपये में नौकर रखा। | (शतेन) शताय वा परिक्रीतो। |
| 28. | महल से देखता है। | प्रासादात् प्रेक्षेते। |
| 29. | पाटलीपुत्र से आ रहा है। | पाटलीपुत्रात् आगच्छति। |
| 30. | पाप से घृणा करता है। | पापात् जुगुप्सते। |
| 31. | काम से क्रोध उत्पन्न होता है। | कामात् क्रोधोऽभिजायते। |
| 32. | हिमालय से गंगा निकलती है। | हिमालयात् गंगा प्रभवति। |
| 33. | मैं मृत्यु से नहीं डरता। | न भीतो मरणादस्मि। |
| 34. | पाप से रोकता है। | पापात् निवारयति। |
| 35. | प्रयाग से प्रतिष्ठानपुर एक कोस है। | प्रयागात् प्रतिष्ठानपुरं क्रोशोऽस्ति। |
| 36. | चैत से पहले फाल्गुन आता है। | चैत्रात् पूर्वः फाल्गुनः। |
| 37. | राम के बिना मैं नहीं जी सकता । | रामं रामेण रामात् वा विना जीवितुं नोत्सहे। |
| 38. | कृष्ण माता से छिपता है। | मातुर्निलीयते कृष्णः। |
| 39. | ये हमारे घर हैं। | इमानि अस्माकं गृहाणि। |

| | | |
|---|---|---|
| 40. | द्विजों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है। | द्विजानां ब्राह्मणः श्रेष्ठः। |
| 41. | राम को सीता स्वभाव से प्रिय थी। | रामाय प्रकृत्यैव प्रिया सीता। |
| 42. | यह क्यों भुला दिया गया ? | कस्य हेतोः विस्मृते। |
| 43. | संसार की रचना विचित्र है। | विचित्रा जगतः कृतिः। |
| 44. | कृष्ण को सुख होवे। | कृष्णस्य (कृष्णाय) कुशलं भूयात। |
| 45. | कुबेर के घर के उत्तर में। | धनपति गृहात् उत्तरेण। |
| 46. | राजा पूजा जाता है। | राज्ञः पूजितः। |
| 47. | आसन पर बैठता है। | आसने उपविशति। |
| 48. | हाथी को दांत के लिए मारता है। | कुञ्जरं दन्तयोः हन्ति। |
| 49. | बाल पकड़कर । | केशेषु गृहीत्वा। |
| 50. | घर के काम से लगा हुआ। | गृह-कर्मणि संलग्नः। |
| 51. | वह एक प्रकार से पढ़ता है। | सः एकधा पठति। |
| 52. | एक लड़की आई। | एका बालिका आगता। |
| 53. | वह स्वयं वहां गई। | सा स्वमेव तत्र आगच्छत्। |
| 54. | वह दो बार खाता है। | सः द्विवारं भुङ्क्ते। |
| 55. | क्षण-क्षण करके विद्या का संचय करो। | क्षणशः विद्याम् संचयेत्। |
| 56. | मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ। | अहं त्वां प्रार्थये। |
| 57. | मेरी पुत्री क्या करें ? | किं वा मे पुत्री करोतु ? |
| 58. | पंचवटी का वन वहीं है। | तदेव पंचवटी वनम्। |
| 59. | वह प्रसिद्ध रमणीय नगरी। | सा रम्या नगरी। |
| 60. | जहां कहीं सो जाता है। | यत्र कुत्रापि स्वपिति। |
| 61. | एक करता है, दूसरा भोगता है। | अन्यः करोति, अन्यो भुङ्क्ते। |
| 62. | अपना नाम बताओ। | स्व नाम कथय। |

**(स) सूक्तयः**

| | | |
|---|---|---|
| 65. | मुझे बहुत सरदर्द है। | बलवती शिरोवेदना मां बाधते। |
| 66. | परिस्थितियों के अनुसार चलो। | यथाकालं व्यवहार। |
| 67. | ऐसी अफवाह फैली थी। | इतिवार्ता प्रसूता। |
| 68. | हरिण, हरिणों के साथ रहते हैं। | मृगाः मृगैः संगमनुव्रजन्ति। |
| 69. | मुझे पूरा विश्वास है। | इति मे निश्चयः। |
| 70. | लक्ष्मी वीर पुरुष पर कृपा करती है। | साहसे श्रीः प्रतिवसति। |
| 71. | स्वभाव नहीं बदलता है। | स्वभावे दुरतिक्रमः। |

| | | |
|---|---|---|
| 72 | बहुत विस्तार मत करो। | अलं अति विस्तरेण। |
| 73. | अपना नाम छोड़ दूं। | स्वनाम त्यागं करोमि। |
| 74. | वह आपको बहुत मानते हैं। | स त्वां बहु मन्यते। |
| 75. | मनुष्य से गलती होती है। | मनुष्या: स्खलन शीला:। |
| 76. | पीली पड़ गई है। | विवर्ण भावं प्रपेदे। |
| 77. | नदियां सागर में विलीन हो जाती हैं। | सागरे नद्या: विलीयन्ते। |
| 78. | मेरा हृदय बैठा जाता है। | सीदति मे हृदयम्। |
| 79. | मुंह पर चांटा मारता है। | मुखे चपेटं ददाति। |
| 80. | लोगों की पसंद अलग-अलग है। | भिन्नरुचिर्हि लोक:। |
| 81. | आपका प्रश्न ठीक है। | स्थाने भवत: प्रश्न:। |
| 82. | प्रभात में पक्षी चहचहाते हैं। | प्रभाते पक्षिण: कूजन्ति। |
| 83. | तीन लड़के और चार लड़कियाँ इधर आ रहे है। | त्रय: बालका: चतस्र: बालिका: च अत्र आगच्छन्ति। |
| 84. | तीन दिन से पानी बरस रहा है। | त्रिदिवसं जलं वर्षति। |
| 85. | पुत्र पिता के साथ जाता है। | पुत्र: जनकेन सह गच्छति। |
| 86. | मैं प्रतिदिन घूमता हूँ। | अहं प्रतिदिनं भ्रमणार्थं गच्छामि। |
| 87. | वे राष्ट्रगीत गाते है। | ते राष्ट्रगीतं गायन्ति। |
| 88. | आज का काम आज करो। | अद्यतन कार्यं अद्यैव सम्पादयेत्। |
| 89. | सुबह हो गई। | प्रात: अभवत्। |
| 90. | दिन ढल चुका। | परिणतो दिवस:। |

## (द) धातुरूप आधारित-वाक्य-रचना

### भ्वादिगण:

| क्र. | वाक्य | अनुवाद |
|---|---|---|
| 1. | हम दोनों होते हैं। | आवां भवाव:। |
| 2. | आप जाते हैं। | भवान् गच्छति। |
| 3. | राम शत्रु को परास्त करता है। | राम: शत्रून् पराभवति। |
| 4. | मैं देवदत्त की जमानत देता हूं। | अहं देवदत्तं प्रतिभवामि। |
| 5. | गुरु शिष्य से पराजय चाहता है। | गुरु: शिष्यात् पराजयम् इच्छेत्। |
| 6. | वह प्रस्थान करता है। | स: प्रतिष्ठते। |
| 7. | हरि विद्यालय में उपस्थित होता है। | हरि: विद्यालयम् उपतिष्ठति। |

| | | |
|---|---|---|
| 8. | एकादशी को उपवास करता है। | एकादशीम् उपवासं करोति। |
| 9. | वह परिहास करता है। | सः उपहसति (परिहसति)। |
| 10. | वह आता है | सः आगच्छति। |
| 11. | गुरु विद्या देता है। | गुरुः विद्यां वितरति। |
| 12. | वह प्रसन्न होता है। | सः प्रसीदति। |
| 13. | पक्षी उड़ता है। | खगः उड्डयति। |
| 14. | अध्ययन चल रहा है। | अध्ययनं प्रवर्तते। |
| 15. | महाराज इसी ओर आ रहे है। | महाराजः इत एव अभिवर्तते। |
| 16. | ठग धोखा देता है। | वञ्चको विप्रलभते। |
| 17. | मैं अध्ययन समाप्त करता हूं। | अध्ययनात् विरमामि। |
| 18. | नौकर भार ढोता है। | किंकरः भारं वहति। |

**अदादिगणः**

| | | |
|---|---|---|
| 19. | उद्योगी पुरुष के पास लक्ष्मी आती है। | उद्योगिनं पुरुषं समीपे लक्ष्मीं आगच्छति। |
| 20. | सेवक स्वामी के पीछे जाता है। | अनुचरः प्रभुम् अन्वेति। |
| 21. | सूर्य लाल रंग का उगता है। | सविता रक्तः उदेति। |
| 22. | भक्त कृष्ण की उपासना करता है। | भक्तः कृष्णम् उपासते। |
| 23. | मूर्ख संशय करता है। | अज्ञः संशेते। |

**जुहोत्यादिगणः**

| | | |
|---|---|---|
| 24. | शिव का ध्यान करता है। | शिवं प्रणिदधाति। |
| 25. | दरवाजा बंद करता है। | द्वारं पिदधाति। |
| 26. | मुख फैलाता है। | मुखं प्रसारयति। |

**दिवादिगणः**

| | | |
|---|---|---|
| 27. | पक्षी घोंसले में जाते है। | खगाः निलीयन्ते। |
| 28. | सोना पिघलता है। | स्वर्णः विलीयते। |
| 29. | कार्य सिद्ध होता है। | कार्य निष्पद्यते। |
| 30. | अर्जुन युद्ध के लिए तैयार होता है। | अर्जुनो युद्धय सन्नद्धः। |

**स्वादिगणः**

| | | |
|---|---|---|
| 31. | धूल आकाश में उड़ती है। | रेणुः आकाशं व्याप्नोति। |
| 32. | भीष्म प्रतिज्ञा करता है। | भीष्मः प्रति शृणोति। |
| 33. | वह धन प्राप्त करता है। | सः धनं प्राप्नोति। |

| | | |
|---|---|---|
| 34. | हम गाना सुनते है। | वयं गानं शृणुमः। |

**तुदादिगणः**

| | | |
|---|---|---|
| 35. | बालक ने गेंद फेंकी। | बालः कन्दुकम् अक्षिपत्। |
| 36. | किसान खेत जोतता है। | कृषकः क्षेत्रं कर्षयति। |
| 37. | वृक्षों को सींचती है। | वृक्षान् सिञ्चति। |
| 38. | पिता पुत्र को उपदेश देता है। | पिता पुत्रम् उपदिशति। |

**रुधादिगणः**

| | | |
|---|---|---|
| 39. | राजा पृथ्वी का पालन करता है। | नृपः महीं भुनक्ति। |
| 40. | ब्राह्मण लड्डू खाता है। | विप्रो मोदकं भुङ्क्ते। |
| 41. | चूहा पुस्तक काटता है। | मूषकः पुस्तकम् छिनत्ति। |

**तनादिगणः**

| | | |
|---|---|---|
| 42. | सोनार सुवर्ण साफ करता है। | स्वर्णकारः सुवर्णं संस्करोति। |
| 43. | बालक नकल करता है। | बालः अनुकरोति। |
| 44. | सौ रुपये चंदा देता है। | शतं प्रकुरुते। |
| 45. | शाक को हींग से बघार लगाता है। | शाकं हिंगुदेन उपस्कुरुते। |
| 46. | वह आविष्कार करता है। | सः आविष्करोति। |
| 47. | वह साफ करता है। | सः परिष्करोति। |
| 48. | धनुष को खींचता है। | धनुः आतनोति। |
| 49. | धनुष उतारता है। | धनुः अवतनोति। |
| 50. | कीर्ति फैलाता है। | कीर्तिं वितनोति। |

**क्रयादिगणः**

| | | |
|---|---|---|
| 51. | सेठ पुस्तकें बेचता है। | पुस्तकानि विक्रीणाति श्रेष्ठी। |
| 52. | कुत्ता स्वामी को पहचानता है। | सारमेयः स्वामिनं संजानीते। |
| 53. | ईश्वर भक्त पर कृपा करता है। | ईश्वरः भक्तं अनुग्रहणाति। |

**चुरादिगणः**

| | | |
|---|---|---|
| 54. | राम ने धनुष तोड़ा। | रामः धनुषम् अखण्डयत्। |
| 55. | बर्तन मांजता है। | पात्राणि मार्जयति (मार्जयते)। |
| 56. | शिव को पूजती है। | शिवं पूजयति (पूजयते)। |

| कर्त्तवाच्यं-कर्मवाच्यम् | | |
|---|---|---|
| 57. | राम पुस्तक पढ़ता है। | रामः पुस्तकं पठति। |
| 58. | राम के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है। | रामेण पुस्तकं पठ्यते। |
| 59. | तुझसे सोया जाता है। | त्वया शय्यते। |
| **सूक्तयः** | | |
| 60. | नीच कहता है, करता नहीं। | नीचो वदति न करोति |
| 61. | सोये सिंह के मुख में मृग स्वयं नहीं प्रवेश करते हैं। | न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः। |
| 62. | भूखा कौन-सा पाप नहीं करता है। | बुभुक्षितः किन्न करोति पापम्। |
| 63. | मन से विचारकर कार्य करना चाहिए। | मनः पूतं समाचरेत्। |
| 64. | कुछ न कुछ तो होगा ही। | यदा तदा भविष्यति। |
| 65. | मनुष्य को किसी भी प्रकार प्रसिद्ध होना चाहिए। | मनुष्यः केनापि प्रकारेण प्रसिद्धः भवितव्यः। |
| 66. | विद्या से नम्रता आती है। | विद्या ददाति विनयम्। |
| 67. | विद्वान की सर्वत्र पूजा होती है। | विद्वान् सर्वत्र पूज्यते। |
| 68. | सज्जनों की संपत्ति परोपकार के लिए होती है। | परोपकाराय सतां विभूतयः। |
| 69. | योग्य होने पर धन मिलता है। | पात्रत्वात् धनमाप्नोति। |
| **वार्तालापः** | | |
| 71. | तुम सावधान रहना। | अवहितेन त्वया भवितव्यम्। |
| 72. | दो-तीन दिन प्रतीक्षा कीजिए। | द्वित्रीणि दिनानि प्रतीक्षां करोतु। |
| 73. | कृपया अन्यथा न सोचें। | अलम् अन्यथा गृहीत्वा। |
| 74. | तुम चलो, मैं भी पीछे-पीछे आया। | गच्छ त्वम्, अहमपि अनुपदम् आगत एव। |
| 75. | आपका कहना ठीक है। | तव कथनं युज्यते। |
| 76. | आपको बधाई। | दिष्ट्या वर्धते भवान्। |
| 77. | मेरे शरीर में कंपकंपी हो रही है। | मम देहे कम्पनं जायते। |
| 78. | मेरे शरीर से पसीना छूट रहा है। | मम शरीरं स्विद्यते। |
| 79. | मेरे सिर में वेदना है। | शिरो वेदना मां बाधते। |
| 80. | परेशान मत करो। | अलं उद्वेगेन। |
| 81. | पानी लाओ। | जलम् आनय। |
| 82. | हाथ धो लो। | हस्तौ प्रक्षालय। |

| | | |
|---|---|---|
| 83. | सुरेश पढ़ने विदेश गया। | सुरेशः पठितुं विदेशं गतः। |
| 84. | बालक आंख से काणा है। | बालः अक्ष्णा काणः। |
| 85. | सन्देह की आवश्यकता नहीं। | अलं संशयेन। |
| 86. | गांव में बकरी ले जाता है। | अजां ग्रामं नयति। |
| 87. | वह घोड़े से गिरता है। | अश्वात् पतति। |
| 88. | गॉव के दोनों ओर बगीचा है। | ग्रामम् उभयतः उद्यानम्। |
| 89. | परिश्रम के बिना विद्या प्राप्त नहीं होती। | परिश्रमेण विना विद्या न प्राप्तं भवति। |
| 90. | वह पानी से मुंह धोता है। | सः जलेन मुखं प्रक्षालयति। |
| 91. | राजा ब्राह्मण को धन देता है। | नृपः ब्राह्मणाय धनं ददाति। |
| 92. | मृग तेजी से दौड़ता है। | मृगः वेगेन धावति। |
| 93. | विष्णु वैकुण्ठ में निवास करते है। | विष्णुः वैकुण्ठं उपवसति/अनुवसति वा। |
| 94. | शिशु को खिलौना अच्छा लगता है। | क्रीडनकम् बालाय रोचते। |
| 95. | शहर के समीप एक मंदिर है। | नगरं समीपे (निकषा वा) मन्दिरम्। |
| 96. | विष्णु के लिए नमस्कार । | विष्णवे नमः। |
| 97. | माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है। | जननी जन्मभूमिश्च स्वार्गदपि गरीयसी। |
| 98. | क्या गोपाल स्कूल गया ? | किं गोपालः विद्यालयं गतवान् ? |
| 99. | मैंने आज भी भोजन नहीं किया। | अहं अद्यापि भोजनं न कृतम्। |
| 100. | तुम दोनों वहाँ कब जाओगे ? | युवाम् तत्र कदा गमिष्यथः । |
| 101. | सभी छात्र कक्षा में उपस्थित हों। | सर्वे छात्राः कक्षायाम् उपतिष्ठन्तु। |
| 102. | आप मेरे प्रश्न का उत्तर दें। | भवान् मम प्रश्नस्य उत्तरं यच्छतु। |
| 103. | सभी सुखी होवें। | सर्वे भवन्तु सुखिनः। |
| 104. | आप क्या देख रहे हो ? | किं पश्यति भवान्। |
| 105. | हम चित्र देख रहे हैं। | वयं चित्राणि पश्यामः। |
| 106. | धनवान गरीबों को धन नहीं देते। | धनिकाः निर्धनेभ्यः धनं न यच्छति। |
| 107. | हे प्रभु ! हमारा अज्ञान नष्ट होवे। | हे प्रभो! अस्माकं अज्ञानं नश्येत्। |
| 108. | बीज से वृक्ष उत्पन्न होता है। | बीजात् वृक्षः प्रभवति। |
| 109. | मैं अपनी किताब पढ़ता हूं। | अहं स्वपुस्तकं पठामि। |
| 110. | वृक्ष से फल गिरता है। | वृक्षात् फलं पतति। |
| 111. | उमा की बहिन कल वाराणसी जायेगी। | उमायाः भगिनी श्वः वाराणसीं गमिष्यति। |
| 112. | हिमालय से गंगा निकलती है। | हिमालयात् गंगा प्रभवति। |
| 113. | आकाश में चन्द्रमा उदित हो रहा है। | आकाशे चन्द्रमा उदेति। |

| | | |
|---|---|---|
| 114. | आप कक्षा में उपस्थित नहीं थे। | भवान् कक्षायां उपस्थितः न आसीत। |
| 115. | मेरी बहन चावल पका रही है। | मम भगिनी ओदनं पचति। |
| 116. | सब लड़के खेल रहे हैं। | सर्वे बालाः खेलन्ति। |
| 117. | मैं प्रतिदिन घूमने जाता हूं। | अहं प्रतिदिनम् अटामि। |
| 118. | वह छात्र को पुस्तक देता है। | सः छात्राय पुस्तकं ददाति। |
| 119. | श्याम मेरी लेखिनी से लिखता है। | श्यामः मम लेखिन्या लिखति। |
| 120. | शहर के समीप एक मंदिर है। | नगरं निकषा मन्दिरम्। |
| 121. | उसने मुझसे एक प्रश्न पूछा। | सः मां प्रश्नं अपृच्छत्। |
| 122. | मै रविवार को आऊँगा। | अहं रविवासरे आगमिष्यमि। |
| 123. | कहिये, राम कब आवेगा ? | कथय, रामः कदा आगमिष्यति ? |
| 124. | राम ने यह किताब मुझे दी। | रामः इदं पुस्तकं मह्यं अयच्छत्। |
| 125. | अपना पाठ अच्छी तरह पढ़ो। | स्वपाठम् सुष्ठु-पठ। |
| 126. | मैंने एक वृद्ध आदमी को देखा। | अहं एकं वृद्धं अपश्यम्। |
| 127. | उसने पत्र लिख लिया है। | तेन पत्रं लिखितम्। |
| 128. | हम संस्कृत पढ़ना चाहते हैं। | वयं संस्कृतं पठितुम् इच्छामः। |
| 129. | मोहन घर पर नहीं गया। | मोहनः गृहं न अगच्छत् (गतः)। |
| 130. | कृपया मुझे अपनी किताब दिखाइए। | कृपया स्वपुस्तकं दर्शय। |
| 131. | मैं फिर कभी विलम्ब से नहीं आऊँगा। | अहं कदापि विलम्बेन न आगमिष्यामि। |
| 132. | हमें शुद्ध, स्वच्छ और शीघ्र लिखना चाहिए। | वयम् शुद्धं, स्वच्छं, शीघ्रं च लिखेम। |
| 133. | उसने मुझसे कहा, यहां बैठ जाओ। | सा मां अकथयत् 'अत्र उपविश'। |

## संस्कृतवाग्व्यवहारः

## शिष्टाचारः

| **नमस्ते/नमस्कार** | **नमस्ते/नमस्कारः/नमोनमः** |
|---|---|
| सुबह का नमस्कार | सुप्रभातम् |
| रात में नमस्कार | शुभरात्रिः |
| जी | श्रीमन् |
| जी, हां | आम् श्रीमन् |
| कृपया | कृपया |
| धन्यवाद | धन्यवादः |
| क्षमा कीजिए | क्षन्तव्यम् |
| चिंता मत करो | चिंता मास्तु |

| | |
|---|---|
| स्वागत है | स्वागतम् |
| कोई बात नहीं | काऽपि वार्ता |
| मङ्गलकामना | शुभेच्छा |
| फिर मिलेंगे | पुनर्मिलामः, पुनर्दर्शनाय |
| हे ! अरे! ए ! अजी! | हे!/अहो!/अयि!/भोः |
| दुर्भाग्य | दौर्भाग्यम् |

## गृहे परस्परमेलनम्

| | |
|---|---|
| नमस्कार | नमस्कारः/नमस्ते/नमोनमः। |
| आइए | आगच्छतु। |
| बैठिए | उपविशतु। |
| क्या सब अच्छा है/कुशल है? | अपि सर्वं कुशलम्? |
| और क्या समाचार है ? | कः समाचारः ? |
| सब ठीक तो है ? | किं सर्व समीचीनम् ? |
| हाँ । | आम्। |
| आपका क्या हाल है ? | भवतः कः समाचारः ? |
| यों ही चल रहा है। | एवमेव प्रचलति। |
| कहिए/बोलिए | कथयतु |
| बहुत दिनों से दर्शन नहीं हुए हैं | बहु -दिनात् दर्शनं नास्ति। |
| अब (आप) कहां है | अधुना कुत्र ? |
| अजमेर में/दिल्ली में | अजमेरे/ दिल्ल्याम्। |
| इधर कैसे ? | अत्र कथम् ? |
| कुछ काम था | किंचित् कार्य आसीत्। |
| क्या चाय या कॉफी | किं चायं, कॉफी वा। |
| नहीं, रहने दीजिए | मास्तु। |
| सुयोग देखकर फिर आइए | अवसरे पुनः आगच्छतु। |
| अच्छा, आऊँगा | भवतु, आगमिष्यामि। |
| फिर मिलेंगे | पुनर्दर्शनाय/पुनर्मिलामः |

## मार्गे वार्त्तालापः

| | |
|---|---|
| ए/हे/अरे | अहो/हे |
| कहाँ से आए हो ? | कुतः आगमनम् ? |

| | |
|---|---|
| स्कूल से /घर से/खेल के मैदान से | विद्यालयात्/गृहात्/क्रीडाङ्गणात् |
| दुकान से/बाजार से | आपणात्/विपणितः |
| मंदिर से आ रहा हूं | मन्दिरात् आगच्छामि |
| कहाँ जा रहे हो ? | कुत्र गच्छति ? |
| घर/खेल का मैदान/ | गृहं/क्रीडाङ्गणम्/ |
| स्कूल/ऑफिस | विद्यालयं/कार्यालयम् |
| दुकान/मंदिर/ | आपणं/मन्दिरम्/ |
| जा रहा हूं। | गच्छामि |
| पढ़ाई कैसे चल रही है | अध्ययनं कथं प्रचलति ? |
| ठीक है/ अच्छी | उत्तमम् |
| तबीयत कैसी है ? | स्वास्थ्यं कथमस्ति ? |
| पेट में दर्द है। | उदरे पीड़ा अस्ति। |
| कल का पेपर देखा ? | ह्यस्तनं वृत्तपत्रं दृष्टम् ? |
| क्या हुआ ? | किं जातम् ? |
| पाठ्यपुस्तक खरीद ली ? | पाठ्यपुस्तकानि क्रीतानि किम् ? |
| नहीं, मिलती नहीं | नहि, न मिलति |
| आओ, खेलते हैं। | आगच्छ भो! खेलामः |
| अच्छा चलिए | भवतु, चलतु |

## नित्यकर्मसमये वार्त्तालापः

| | |
|---|---|
| मुंह धो लिया | मुखं क्षालितं किम्। |
| मुंह धो लिया, दूधा दो | मुखं क्षालितवान्, क्षीरं ददातु। |
| दूध पीकर पढूंगा | क्षीरं पीत्वा पठिष्यामि। |
| अच्छा, लो | भवतु, गृह्णातु। |
| नाश्ता करके पढो | अल्पाहारं कृत्वा पठतु। |
| दातुन नहीं किया | दन्तधावनं न कृतम्। |
| दंतमंजन | दंतफेनः/दंतचूर्णः। |
| ब्रश/दातुन कहाँ है? | दंतकूर्चः/दंतशलाका कुत्र। |
| मैं पहले नहाऊँगा | अहं प्रथमतः स्नानं करिष्यामि। |
| अङ्गोछा किसने लिया | प्रोञ्छवस्त्रं केन नीतम्। |
| स्नानघर में पानी नहीं है | स्नानगृहे जलं नास्ति। |
| साबुन चाहिए ? | फेनकम् आवश्यकम् ? |

| | |
|---|---|
| माँ, भूख लग रही है। | माते! बुभुक्षा भवति। |
| नहाकर जल्दी आओ । | स्नात्वा शीघ्रमागच्छतु। |
| भोजन बन गया ? | भोजनं सिद्धं वा ? |
| स्कूल जाने का समय हो गया। | विद्यालयसमयः संजातः। |
| रसोई बनी हुई है। | पाचनं सिद्धमेव। |
| मेरी पैण्ट/शर्ट | मम ऊरुकं/युतकम्। |
| किताब | पुस्तकम्। |
| पेंसिल/चॉक | अंकिनी/सुधाखण्डः। |
| चप्पल/कलम/ | पादत्राणं/लेखनी। |
| युनीफार्म/ ड्रेस कहां है? | गणवेशः कुत्र ? |
| देख, वहाँ होगी। | पश्य, तत्रैव स्यात्। |
| मां, स्कूल जा रही हूं। | माते! विद्यालयं गच्छामि। |
| परीक्षा निकट आ गई। | परीक्षा समीपे आगता। |
| ठीक से पढ़ो। | सम्यक् पठतु। |
| थोड़ा खेलने के लिए जाऊँगा | किंचित् खेलितुं गमिष्यामि। |
| घर का पाठ लिख रहा हूं। | गृहपाठं लिखामि। |
| नींद आ गई। | निद्रा आगता। |
| कल लिखूंगा। | श्वः लेखिष्यामि। |
| भोजन करके सो जाओ। | भोजनं कृत्वा शयनं करोतु। |
| जल्दी दो। | शीघ्रं ददातु। |
| सब लोगों को खाने के लिए बुलाओ। | भोजनार्थं सर्वान् आह्वयतु। |
| सब आ गए। | सर्वे आगताः। |
| चावल, साग, भाजी, सब्जी, दाल, खट्टा दही अचार दो। | अन्नं, व्यञ्जनं, भर्जं, शाकम्, द्विदलं, अम्लं दधि सन्धितं ददातु। |
| अच्छा, परोस रहा हूं। | अस्तु, परिवेषणं करोमि। |
| क्या सब्जी में नमक ज्यादा है ? | किं व्यञ्जनं लवणाक्तम् ? |
| मैं नहीं खाऊँगा। | नाहं खादिष्यामि। |
| खाओ, खाओ। | खादतु, खादतु। |
| बस, नहीं चाहिए। | अलम्, अनावश्यकम्। |
| क्या अच्छा नहीं लगता ? | किं न रोचते ? |
| कुछ लो। | किंचित् नयतु। |

| | |
|---|---|
| बस, ज्यादा हो गया। | मास्तु, अधिकं जातम्। |
| हाथ धोकर सो जाओ। | हस्तं प्रक्षाल्य शयनं करोतु। |

## विद्यालये-वार्त्तालापः

| | |
|---|---|
| आज साईकिल नहीं लाए हो क्या ? | अद्य द्विचक्रं नानीतम् ? |
| लाया हूं । | आनीतम् । |
| तुम कैसे आते हो ? | भवान् कथम् आगच्छति ? |
| मैं पैदल आता हूं । | अहं पादाभ्याम् आगच्छामि ? |
| क्या तुम्हारे पास साईकिल नहीं हैं ? | भवतः पार्श्वे द्विचक्रिका नास्ति किम्? |
| हां, है। | आम्,अस्ति। |
| साईकिल चलाना नहीं जानता हूं। | द्विचक्रिकाचालनं न जानामि। |
| घर का पाठ लिख लिया ? | गृहपाठः लिखितः वा ? |
| हाँ, लिख लिया। | आम्, लिखितम्। |
| विज्ञान पुस्तक खरीद ली ? | विज्ञानपुस्तकं क्रीतम् ? |
| नहीं । | नहि। |
| दुकान में नहीं मिलती । | आपणे न मिलति। |
| घंटी बज गई। | घंटा ताडिता। |
| जल्दी आओ। | शीघ्रमागच्छतु। |
| रुको, मैं आ रहा हूं। | तिष्ठतु भो, अहम् आगच्छामि। |
| गुरुजी आ गए। | शिक्षकः आगताः। |
| हल्ला मत करो। | कोलाहल मास्तु। |

## शिक्षक-छात्रयोः सम्भाषणम्

| | |
|---|---|
| पाठ पढ़ लिया ? | पाठः पठितो वा ? |
| इस प्रश्न का उत्तर क्या है ? | किम् अस्य प्रश्नस्य उत्तरम् ? |
| खड़े हो जाओ । | उत्तिष्ठतु। |
| सर! मैं कहूँगा। | श्रीमन् ! अहं कथयामि। |
| सब शोर बंद करो। | कोलाहलः मास्तु। |
| मैं जिसको कहता हूं वही कहे। | अहं यं/याम् आदिशामि, स/सा एव कथयतु। |
| तुम कहो। | त्वं कथय। |
| कल नहीं आया/आई थी, | ह्यः नागतः/ नागता, |
| इसलिए नहीं जानता/जानती हूं। | अतः न जानामि। |

| | |
|---|---|
| अच्छा, बैठो। | अस्तु, उपविश। |
| क्या मैं अंदर आ सकता हूं ? | किमहं अन्तः आगच्छामि ? |
| आओ। | गच्छ । |
| पुस्तक खोलो। | पुस्तकम् उन्मोचय। |
| पढ़ो। | पठ। |
| याद रखो। | स्मर। |
| भूलो मत। | मा विस्मर। |
| बार-बार चेष्टा करो। | वारं-वारं चेष्टां कुरु। |
| बैठो। | उपविश। |

**परीक्षा -समये**

| | |
|---|---|
| प्रश्न कैसे हैं ? | प्रश्नाः कीदृशाः सन्ति ? |
| बहुत कठिन/सरल | बहुकठिनं/बहुसरलम् |
| परीक्षाफल कब निकलेगा ? | परीक्षाफलं कदा प्रकाशितं भविष्यति? |
| कल हो सकता है। | श्वः भवेत्। |
| मैं प्रथम श्रेणी से पास हूं। | अहं प्रथमश्रेण्याम् उत्तीर्णा/उत्तीर्णः |

**सामान्यक्रिया-पदानि व्यवहारप्रयोगाश्च**

| | |
|---|---|
| धीरे चलो | शनैः चलतु/चलन्तु |
| घर जाओ | गृहं गच्छतु/गच्छन्तु |
| जल्दी आओ | शीघ्रमागच्छतु/आगच्छन्तु |
| मन लगा के पढ़ो | एकाग्रमनसा पठतु/पठन्तु |
| पत्र लिखो | पत्रं लिखतु/लिखन्तु |
| फुटबाल खेलो | पादकन्दुकेन खेलतु/खेलन्तु |
| पाठ कहो | पाठं कथयतु/कथयन्तु |
| मन लगा के सुनो | मनोयोगपूर्वकं शृणोतु/शृण्वन्तु |
| दूधा पीओ | दुग्धं पिबतु/पिबन्तु |
| कागज ले जाओ | कर्गजं नयतु/नयन्तु |
| डस्टर लाओ | मार्जनीम् आनयत/आनयन्तु |
| चन्द्रमा को देखो | चन्द्रं पश्यतु/पश्यन्तु |
| महान् पुरुष बनो | महापुरुषो भवतु/भवन्तु |
| मित्र से मिलो | मित्रं/बन्धुं मिलतु/मिलन्तु |

| | |
|---|---|
| राम को पूछो | रामं पृच्छतु/पृच्छन्तु |
| मादक द्रव्यो का सेवन मत करो | मादकद्रव्यसेवनम् त्यजतु/त्यजन्तु |
| थोड़ा रुको | क्षणं तिष्ठतु तिष्ठन्तु |
| बिस्तर से उठो | शय्यात: उत्तिष्ठतु/उत्तिष्ठन्तु |
| काम करो | कार्य करोतु/कुर्वन्तु |
| भिक्षा दो | भिक्षां ददातु/ददतु |
| पेन रखो | लेखनीं स्थापयतु/स्थापयन्तु |
| मैदान में दौड़ो | प्रान्तरे धावतु/धावन्तु |
| घर साफ करो | गृहं क्षालय/क्षालयन्तु |

**साधारण-वार्त्तालाप:**

| | |
|---|---|
| आपका नाम क्या है ? | भवत: नाम किम् ? |
| मेरा नाम | मम नाम |
| घर कहां है ? | गृहं कुत्र ? |
| भोपाल नगर में। | भोपाल नगरे। |
| पिताजी क्या करते हैं ? | पितृपाद: कि कुर्वन्ति ? |
| पिताजी शिक्षक हैं। | पितृपाद: शिक्षक: अस्ति। |
| आप किस कक्षा में पढ़ रहे हैं ? | भवान् कस्मिन वर्गे पठति ? |
| मैं मध्यमा में पढ़ रहा हूं। | अहं मध्यमायां पठामि। |
| क्या इस संस्कृत विद्यालय में ? | किम् अत्र संस्कृतविद्यालये ? |
| हां। | आम्। |
| आपके स्कूल में कितने छात्र हैं ? | भवत: विद्यालये कति छात्रा: सन्ति ? |
| लगभग छह सौ । | प्रायश: षट्शतम् । |
| आपका परिचय ? | भवत: परिचय: ? |
| मैं यहां शिक्षक हूं । | अहम् अत्र शिक्षक: अस्मि। |
| क्या आप यहाँ रहते हैं ? | किं भवान् अत्र निवसति ? |
| नहीं, मैं जबलपुर में रहता हूं । | नहि, अहं जबलपुरे निवसामि। |

**समयसूचकावाक्यानि**

| | |
|---|---|
| क्या समय हुआ है ? | क: समय:? |
| कितने बजे हैं ? | कति वादनम्? |
| अब दस बजे हैं। | अधुना दश वादनम्। |

| | |
|---|---|
| सवा दस बज गए। | सपाद्दशवादनम् जातम्। |
| साढ़े दस। | सार्धदशवादनम्। |
| पौने ग्यारह | पादोन एकादशवादनम् |
| दस बजकर पाँच मिनट | पञ्चाधिकं दशवादनम् |
| दस बजकर दस मिनट | दशाधिकं दशावादनम् |
| दस बजकर बीस मिनट | विंशत्याधिक दशवादनम् |
| सुबह के छह | प्रातः षड्वादनम् |
| मध्यान्ह के ग्यारह | मध्याह्वे एकादशवादनम् |
| शाम के पांच | सायं पञ्चवादनम् |
| रात के साढ़े नौ | रात्रौ सार्धनववादनम् |
| मैं साढ़े दस बजे विद्यालय जाता हूँ। | अहं सार्धदशवादने विद्यालयं गच्छामि। |
| आकाशवाणी से प्रतिदिन दो बार संस्कृत समाचार आते हैं। | आकाशवाणीतः प्रतिदिनं द्विवारं संस्कृतसमाचारः आगच्छति। |
| प्रतिदिन प्रातः छह पचपन पर आता है। | प्रतिदिनं प्रातः पंचोन सप्तवादने आगच्छति। |
| प्रतिदिनं सायं छः बजकर दर मिनट पर आता है। | प्रतिदिनं सायं दशाधिक षड्वादने आगच्छति। |
| दूरदर्शन से प्रति रविवार दोपहर सवा एक बजे आता है। | दूरदर्शनतः प्रति रविवारं मध्याह्ने सपाद एकवादने आगच्छति। |

## सौजन्यव्यवहारः

| | |
|---|---|
| महाशय ! क्या आपका नाम जान सकता हूं? | श्रीमन्! किं भवतः नाम ज्ञातुं शक्नोमि? |
| महाशय! क्या चाय, कॉफी या दूध ले आऊँ? | श्रीमन् ! किं चायं, कॉफिं, क्षीरं वा दास्यामि ? |
| रहने दीजिए, धन्यवाद । | मास्तु धन्यवादः |
| मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। | मम किमपि आवश्यकं नास्ति। |
| ध्यान दीजिए। | ध्यानं कुर्वन्तु। |
| थकावट दूर कीजिए। | क्लान्तिम् अपनयन्तु। |
| कलम है क्या ? थोड़ा दीजिए- | लेखनी अस्ति वा ? कृपया ददातु । |
| भोपाल के लिए कितने बजे बस है ? | भोपालं प्रति लोकयानं कदा अस्ति ? |
| क्या बता सकते हैं ? | सूचयितुं पारयन्ति वा ? |
| नहीं मैं ठीक से नहीं जानता हूं | नहि, अहं सम्यक् न जानामि। |
| कृपया टेलीफोन दीजिए। | कृपया दूरभाषं ददातु। |
| कितना नंबर है ? | दूरभाषं सङ्ख्या कियतीं। |

| | |
|---|---|
| हेलो, 2476 | हरिः ऊँ, द्वि-चतुःसप्त-षट्। |
| ओह ? गलत नंबर हो गया। | ओम्, भ्रान्तसङ्खया। |
| क्षमा कीजिए । | क्षन्तव्यम् । |
| क्षमा कीजिए, क्या मैं अंदर आ सकता हूं? | क्षन्तव्यं, किम् अहमन्तरागच्छानि ? |
| महाशय, रेवांचल एक्सप्रेस से रीवा तक का आरक्षण कर दीजिए। | श्रीमन्, रेवांचलद्रुतयानेन रीवां प्रति आरक्षणव्यवस्थां कुर्वन्तु। |
| क्षमा कीजिए, नहीं हो सकेगा। | क्षन्तव्यं, न सम्भवति। |
| 07 नंबर की बस क्या लालघाटी जाती है? | सप्तसंख्यकं लोकयानं लालघाटीं प्रति गच्छति वा? |
| ठीक से नहीं जानता हूं । | नाहं साधु जानामि। |
| आप किसलिए हंस रहे हैं ? | भवन्तः किमर्थं हसन्ति ? |
| कृपया कुछ नहीं सोचिएगा। | कृपया अन्यथा न चिन्तयतु। |
| हां, मै हर समय यही करता रहता हूं। | सत्यं, अहं सर्वदा एवं कर्तुमिच्छामि। |
| इसमें कुछ आपत्ति है क्या ? | किमत्र अभियोगः अस्ति वा ? |
| धन्यवाद, बहुत धन्यवाद । | धन्यवादः, बहुधन्यवादः। |
| आपका उपकार मैं नहीं चुका सकूंगा। | भवतः उपकारं प्रत्युपकरेण समर्पयितुं न पारिष्यामि। |
| आपका उपदेश अत्यन्त उपादेय है। | भवताम् उपदेशः अत्युपादेयः। |
| आपके परामर्श के लिए मैं कृतज्ञ हूँ। | भवतां परामर्श-निमित्तम् अहं कृतज्ञः। |
| आपके मार्गदर्शन के बिना मैं इस कार्य में भी कभी सफल नहीं हो सकता। | अहं कदापि भवतां मार्गदर्शनं विना एतस्मिन् कार्ये सफलः न भवेयम्। |
| इसलिए आपको धन्यवाद। | एतदर्थं धन्यवादाः। |
| आपकी कृपा से आनन्द से हूँ। | भवतां कृपया अहम् आनन्दितः/आनन्दिता |
| आपका आतिथ्य बहुत आनन्ददायक है। | भवतां आतिथ्यम् अत्यन्तम् आनन्दप्रदम्। |
| आपके व्यवहार से अत्यन्त संतुष्ट हूँ। | भवतः व्यवहारेण अहम् अतीव प्रीतः/प्रीता। |
| आपकी सेवा के लिए सुयोग पाऊं तो, मैं कृतकृत्य होऊंगा/होऊंगी। | भवतः सेवानिमित्तं सुयोगं प्राप्नोमि चेत्, अहं कृत्यकृत्यः/कृत्यकृत्या भविष्यामि। |

## आपणे वार्तालापः

| | |
|---|---|
| दूकानदार- क्या चाहिए ? | आपणिकः - किम् आवश्यकम् ? |
| ग्राहक- साबुन है क्या ? | ग्राहकः - फेनकम् अस्ति वा ? |
| दूकानदार- कौनसा साबुन चाहिए ? | आपणिकः - कीदृशं फेनकम् आवश्यकम् ? |
| ग्राहक- मुझे सनलाइट की जरूरत है । | ग्राहकः मां 'सनलाइट' आवश्यकम्। |
| दुकानदार- सनलाइट नहीं है, खत्म हो गया। ओके लीजिए। | आपणिकः 'सनलाइट' नास्ति, समाप्तम्। 'ओके' फेनकं नयतु। |
| ग्राहकः - ओके साबुन अच्छा है ? | ग्राहकः- 'ओके' किं समीचीनम्, 'सनलाइट' इव |

| | |
|---|---|
| सनलाइट जैसा झागवाला है क्या? | फेनयुक्तं अस्ति वा ? |
| दूकानदार- एक बार लेकर देखिए। | आपणिकः - परीक्षा करणीया। |
| ग्राहक- ठीक है, एक 'ओके' और एक दंतमञ्जन दीजिए। | ग्राहकः - अस्तुः 'ओके' फेनकम् एकं ददातु, दन्तमञ्जनमपि एकं ददातु। |
| ग्राहक - कितना मूल्य हुआ ? | किं यत् मूल्यम् ? |
| दूकानदार- 'ओके' की कीमत दो रुपये पचास पैसे, दन्तमञ्चन की कीमत तीन रुपये साठ पैसे, कुल मिलाकर छह रुपये दस पैसे हुए। | आपणिकः - 'ओके' इत्यस्य मूल्यं सार्द्धरुप्यकद्वयम् एवं दन्तमञ्जनम मूल्यं त्रीणि रूप्यकाणि षष्टिः पणकाः, सर्वम् आहत्य षटरुप्यकाणि दशपणकाः। |
| ग्राहक - ओ...भूल गया, च्वनप्राश है क्या? | ग्राहकः - विस्मृतम्, च्यवनप्राश अस्ति वा? |
| दुकानदार - जी हां है। आयुर्वेद-रसायन का । आपको कौन-सा चाहिए? | आपणिकः - अस्ति । आयुर्वेद-रसायनस्य च्यवनप्राशः अस्ति। भवतां किम् आवश्यकम्? |
| ग्राहक - मध्यम आकार का आयुर्वेद रसायन आप दीजिए। कितनी कीमत ? | ग्राहकः - मध्यमाकारकं आयुर्वेद -रसायनं ददातु। कियत् मूल्यम् ? |
| दूकानदार -चार रुपये अस्सी पैसे । | आपणिकः - चत्वारि रुप्यकाणि अशीति पणकाः। |
| ग्राहक - लीजिए | क्रेता -नयन्तु। |
| दूकानदार - धन्यवाद, फिर आइएगा .... | आपणिकः - धन्यवाद, पुनः पुनः आगच्छन्तु |

## लोकयाने वार्तालापः

| | |
|---|---|
| कण्डक्टर - आपका टिकट ? | संचालकः - भवताम् यात्राचिटिका ? |
| यात्री - दीजिए। | यात्री- ददातु। |
| कण्डक्टर - कहाँ जाएंगे ? | संचालकः - कुत्र गमिष्यति ? |
| यात्री - उज्जयिनी । | यात्री - उज्जयिनीं |
| कण्डक्टर -पैंतीस रूपये दीजिए। | संचालकः - पंचत्रिंशत् रुप्यकाणि ददातु। |
| यात्री - क्यों? इन्दौर से उज्जयिनी का किराया तो तीस रुपये है। | यात्री - कथम् ? इन्दौरतः उज्जयिनी-पर्यन्तं बस-भाटकं केवलं त्रिंशत् रुप्यकाणि भवन्ति। |
| कण्डक्टर - हां ठीक है, लेकिन यह एक्सप्रेस गाड़ी है, इसीलिए मैं एक्सप्रेस बस का किराया कह रहा हूं। | संचालकः - सत्यं, परंतु इदं द्रुतगामियानम्, अहं तु द्रुतगामियानस्य भाटकं सूचयामि। |
| यात्री- आपने पहले ही क्यों नहीं बताया? अगर हमारी इच्छा होती तो बैठते, नहीं तो चले जाते। | यात्री - भवान् किमर्थं पूर्वम् एतद्विषयं न उक्तवान्? इच्छा अस्ति चेत् उपवेक्ष्यामः नोचत् चलिष्यामः। |
| कण्डक्टर- अब भी उतर सकते हैं। | संचालक : अधुना अपि भवान् अवतरितुं शक्नोति। |

| | |
|---|---|
| यात्री - ठीक है, टिकट दीजिए। | यात्री - भवतु, यात्राचिटिकां ददातु। |

## कार्यालये वार्तालापः

| | |
|---|---|
| हरीश बाबू ! नमस्ते । | हरीश महोदय ! नमस्ते । |
| आज क्यों इतनी देर लगा दी ? | अद्य कथं एतावान् विलम्बः ? |
| मैं प्रतिदिन सुबह ब्यावरा से आया-जाया करता हूं। | अहं प्रत्यहं ब्यावरातः गच्छामि -आगच्छामि। |
| सब ठीक है तो है ? | किं सर्वं कुशलम् ? |
| आपका क्या काम है ? | भवतः किं कार्यम्? |
| सर, तीन महीने से मेरा वेतन नहीं मिला है। कृपया जल्दी व्यवस्था कीजिए। | श्रीमन् ! मासत्रयात् वेतनं न प्राप्तम् । कृपया शीघ्रं व्यवस्थां कुर्वन्तु। |
| अरे आपका बिल कहां है ? मुझे तो नहीं मिला। | अये, भवतः वेतन-पत्रकं कुत्र ? मया तु न प्राप्तम्। |
| वह तो बहुत पहले भेजा गया है। | तत्तु बहुदिनात् प्रेषितम्। |
| ठीक है, मैं देखता हूं । | भवतुः अहं पश्यामि। |
| सूरज, वह फाइल जरा लाना तो .... | सूरज... पत्रावलीम् आनय। |
| कितने नंबर का, क्या यह ग्यारह नंबर वाला? | कियतिम्, संख्याकाम्, इमां एकादशसंख्या ... ? |
| हां, उसी को । | आम्, तामेव। |
| सर, मैं कल से आकस्मिक अवकाश लूंगा। | श्रीमान्, अहं श्वः सकारणमवकाशम् इच्छामि। |
| क्यों ? | किमर्थम् ? |
| कल घर जाने के लिए सोच रहा हूं । | श्वः गृहं गन्तुमिच्छामि। |
| ठीक है, एक दिन की छुट्टी लीजिए। | भवतु, एकस्य दिनस्य अवकाशं नयतु। |
| धन्यवाद। | कृतज्ञोऽस्मि। |
| और क्या समाचार है ? | कः विशेषः समाचारः ? |
| वैसे कुछ नहीं है। | तथा किमपि नास्ति। |
| क्या आप अच्छे हैं ? | अपि सर्वं कुशलं भवतः। भवतः सर्वं कुशलं वा ? |
| हां, सुख-दुख लगे ही रहते हैं। | आम्, सुखेन-दुःखेन प्रचलन्ति। |

## पत्रालये वार्तालापः

| | |
|---|---|
| महाशय क्या पोस्टकार्ड हैं ? | श्रीमान्, समपत्रम् अस्ति ? |
| कितने चाहिए ? | कति आवश्यकानि ? |
| पांच अंतर्देशीय भी दीजिए ... | पञ्चाअन्र्देशीयपत्राणि अपि ददातु। |
| कुल छह रुपये दीजिए। | आहृत्य षड्रुप्यकाणि ददातु। |
| लीजिए, धन्यवाद । | नयतु, धन्यवादः |

## प्रकीर्णवाक्यानि

| | |
|---|---|
| अरे ! बहुत गर्मी लग रही है। | भो सखे ? अद्य रौद्रतापः अनुभूयते। |
| नदी के किनारे ठण्डी हवा चलती है। चलो, वहीं चलें । | नदीतीरे शीतलपवनः वहति, तत्र गमिष्यावः। |
| सिर मत धोओ, सर्दी लग जाएगी। | शिरः स्नानं मास्तु, शैत्यं भविष्यति। |
| सोकर मत पढ़ो, आंखे खराब हो जाएंगी। | शयित्वा मा पठतु, नेत्रम् असमीचीनं भविष्यति। |
| हर समय गंभीर मत बनो, सिरदर्द हो जाएगा। | सदा गंभीर भावो मास्तु, शिरोव्यथा भविष्यति। |
| ज्यादा हंसो मत, सब भूल जाओगे। | अत्यधिकः हासः मास्तु, सर्वं विस्मरणं भविष्यति। |
| खेल के समय खेलो, पढ़ने के समय पढ़ो। | खेलसमये खेलतु, पठनसमये पठतु। |
| अंधेरा हो गया, लाइट जलाओ। | अन्धकारः संजातः, दीपं दीपयतु। |

## निर्देशवाक्यानि

| | |
|---|---|
| सत्य कहो । | सत्यं वद । |
| धर्म का आचरण करो। | धर्मं चर। |
| दुःख मत करो । | दुखं मा कुरु। |
| बाएं तरफ चल। | वामपार्श्वे चलतु। |
| रुको। | तिष्ठ। |
| आगे विद्यालय है। | अग्रे विद्यालयः । |
| गाड़ी धीरे चलाओ। | यानं शनैः चालनीयम्। |
| आगे गतिरोध है। | गतिरोधः अग्रे। |
| रास्ता टेढ़ा है। | मार्गः कुटिलः अस्ति। |
| बाएं मोड़। | वामतो आवर्तनम्। |
| दाएं मोड़ । | दक्षिणतो आवर्तनाम्। |
| कृपया पंक्ति में। | अनुपक्तौ कृपया। |
| हल्ला मत करो। | कोलाहलः मास्तु। |
| धार नहीं है। | धारः नास्ति। |
| बत्ती जलाओ । | विद्युत ज्वालयतु। |
| बत्ती बुझाओ। | दीपं निर्वापयतु। |
| पंखा बंद करो । | व्यजनं स्थगतयु। |
| ब्रेक लगाओ। | रोधयतु। |

❖ ❖ ★ ❖ ❖

# दशमः अध्यायः

# पत्रलेखनम्

## संस्कृतपत्र-लेखनम्

संस्कृते पत्रलेखनम् प्राचीनकालतः एव प्रचलित। संदेश सम्प्रेषणे अद्यापि पत्राणां अत्यधिकं महत्त्वम् अस्ति। कार्यव्यवहारे भावप्रदर्शनस्य सशक्तमाध्यमं पत्रमेव अस्ति।

पत्रलेखनात् पूर्व सम्बोधनं कथं करणीयम् कुशलनिवेदनञ्च कथं करणीयम्। पत्रस्य आरम्भः कथं करणीयः तथा च पत्रस्य समाप्तिः कथं करणीया। एतादृशं कौशलं पत्रलेखने बहु आवश्यकम् अस्ति।

### वैयक्तिकपत्रस्य लेखनम्

1. ..............................................................................................................
2. ..............................................................................................................
3. ..............................................................................................................
4. ..............................................................................................................
5. ..............................................................................................................
6. ..............................................................................................................
7. ..............................................................................................................
8. ..............................................................................................................

1. माङ्गलिक -पदम्
2. स्थानं दिनाङ्कं च
3. सम्बोधनम्
4. नमस्कारः अभिनन्दनम् आशीर्वचनम्
5. कुशलसूचना
6. सन्देशः
7. उपसंहृतिः
8. प्रेषकस्य परिचयः हस्ताक्षरम्।

## वैयक्तिकपत्रस्य उदाहरण्

1. ॐ
2. दिनाङ्कः
   भोपालम्
3. आदरणीय भ्राता
4. नमस्कारः
5. अहमत्र कुशलः अस्मि।
6. भवतः पत्रं प्राप्य बहु आनन्दम् अनुभूतवान्। मया त्रैमासिकपरीक्षासु 92 प्रतिशताङ्काः प्राप्ताः। अर्धवार्षिकपरीक्षासु उत्तमाङ्कप्राप्त्यर्थं पठन्नस्मि। मातापितरौ भवन्तमेव स्मरन्ति। अतः शीघ्रमागच्छतु।
7. शेषं सर्वं कुशलम् भवतः पत्रप्रतीक्षायाम्
8. भवतः अनुजः सोमशेखरः

## कार्यालयीयपत्रम्

1. ........................................................................................................................
2. ........................................................................................................................
3. ........................................................................................................................
4. ........................................................................................................................
5. ........................................................................................................................
6. ........................................................................................................................
7. ........................................................................................................................
8. ........................................................................................................................

## कार्यालयीयपत्रस्य उदाहरणम्

1. इन्दौरम्
   दिनाङ्कः
2. श्रीमान् प्राध्यापकमहोदयः, संस्कृत विद्यालयः
3. विषयः - दिनद्वयविरमार्थम्
4. मान्याः।
5. अहं सुरेश नाम भवद्विद्यालयीय नवमकक्षा छात्रः अस्मि। अहं मम भगिन्याः विवाहार्थं उज्जयिनीं गन्तुमिच्छामि । अतः ........ तः .............. पर्यन्तम् विराम प्रार्थये।
6. धन्यवादैः
7. भविद्वधेयः
8. भोपालम्

**अवकाशार्थं प्रार्थनापत्रम्**

माननीयप्राचार्यमहोदयः

शासकीयसंस्कृतविद्यालयः,

भोपालम् (म.प्र.)

महोदय !

सविनय इदं निवेदयानि। आगामिनि नवम्बर मासे मम भ्रातुः विवाहोत्सवो भविष्यति। अतः अहं षड् दिनाङ्कतः द्वादश दिनाङ्कपर्यन्तं विद्यालये आगन्तुम् असमर्था अस्मि। अतएव सप्त दिवसानाम् अवकाशं प्रार्थये।

श्रीमन्तः अवकाशप्रदानेन माम् अनुग्रहीष्यन्ति।

दिनाङ्कः 24/02/2019 निवेदिका

अभिधा

**अवकाशार्थं प्रार्थनापत्रम्**

श्रीमन्तः प्राचार्यमहोदयः,

शासकीयउच्चतरमाध्यमिकविद्यालयः,

शिवपुरीम्।

मान्यवर !

अहमद्य दिनद्वयाद् शीतज्वरेण पीडितोऽस्मि। ज्वरतापेन भृशं कार्श्यमुपगतोऽस्मि। अतो विद्यालयमागन्तुं न शक्नोमि। कृपया दिवसद्वयस्यावकाशं स्वीकृत्य मामनुग्रहीष्यन्ति श्रीमन्तः।

श्रीमन्तः अवकाशप्रदानेन माम् अनुग्रहीष्यन्ति।

दिनाङ्कः 23/01/2019 भवतामाज्ञाकारी शिष्यः

अव्ययः

**निमन्त्रणपत्रम्**

श्रीमन्महोदय !

एतद् विज्ञाय नूनं भवन्तो हर्षमनुभविष्यन्ति यत् ईश्वरस्य महत्याऽनुकम्पया मम ज्येष्ठाया दुहिता-अपराजितादेव्याः शुभपाणिग्रहणसंस्कारो बड़वानी-वास्तव्यस्य श्रीमतो रामचंद्रोपाध्यायस्य ज्येष्ठपुत्रेण पीएच.डी. इत्युपाधिविभूषितेन श्री सुरेन्द्रप्रसादोपाध्यायेन सह दिनाङ्के 17/04/2019 ईसवीये रात्रौ दशवादने सम्पत्स्यते। सर्वेऽपि भवन्तः सादरं सविनयं च प्राथ्यर्न्ते यत् सपरिवारं निर्दिष्टसमये समागत्य वरवधुयुगलं स्वाशीर्वादप्रदानेनानुग्रहीष्यन्त्यस्मान्।

भवद्दर्शनाभिलाषी

लक्ष्मीनारायणदीक्षितः

363 'अभिवादनम्'
पञ्चवटीनगरम्, सागरम्

**भ्रात्रे पत्रम्**

प्रिय बन्धुवर रामकृष्ण !

सस्नेहं नमस्ते।

अत्र कुशलं तत्रास्तु । एतदवगत्य भवान्नूनं हर्षमनुभविष्यति यदहं संवत्सरेऽस्मिन् शास्त्रिपरीक्षामुत्तीर्णः। तत्र च प्रथमा श्रेणिः संप्राप्ता। साम्प्रतमहं संस्कृतविषये स्नातकोत्तरपरीक्षां दित्सामि। आशासे ईश्वरस्यप्रसादात् तत्रापि साफल्यमाप्स्यामि। सर्वेऽपि गुरवो मयि कृपापराः । शिष्टं विशिष्टं श्वः। परिचितेभ्यो नमः।

भवद्बन्धुः श्यामलेशः

**पितुः कृते पत्रम्**

**(शैक्षणिकभ्रमणाय आज्ञां प्राप्तुं पितरं प्रति पत्रम्)**

सान्दीपनिछात्रवासः
जाबालिपुरतः
दिनाङ्कः 10/04/2017

पूजनीयः जनकः

सादरचरणस्पर्शः ।

अत्र कुशलं तत्रास्तु मम मासिक परीक्षा 20/04/2019 दिनाङ्के सम्पूर्णो भविष्यति। तदुपरान्तं पञ्च दिनस्य अवकाशं भविष्यति। अस्मिन् अवकाशे मम कक्षायाः छात्राः शैक्षिकभ्रमणे गमिष्यन्ति। अहं अपि अस्मिन् अवसरे गन्तुम् इच्छामि। एत्तत्कृते भवदाज्ञा अति आवश्यकी। कृपया आज्ञा ददातु भवान् इति प्रार्थना।

भवताम् पुत्रः
अवधेशः

**मित्रस्य कृते पत्रम्**

**(मित्राय भगिनीविवाहस्य निमंत्रण पत्रम्)**

12/8, अलकनन्दानगरम्
उज्जयिनी
दिनाङ्कः 12/02/2019

प्रियमित्र अजय !

सप्रेम नमोनमः ।

अत्र कुशलम् तत्रास्तु। इदं प्रीतिदायकं वृत्तं भवन्तं सूचयित्वा अहम् अतीव आनन्दम् अनुभवामि यत् मम भगिन्याः विवाहः आगामिमासस्य दशम्यां तारिकायां, भौमवासरे निश्चितः जातः। अहं त्वां

प्रेमपूर्वकं पूर्वतः एव ज्ञापयामि येन त्वम् अत्र त्रिचतुर्दिनानि पूर्वतः एव प्राप्तः स्याः। भवता पितृभ्यां सह अत्र अश्वयमेव आगन्तव्यम्। भवतां स्निग्धां सङ्गतिं साहय्यं च अहं कामये। आदरणीयाभ्यां पितृभ्यां सस्नेह नमोनमः।

तव पत्रोत्तरं प्रतीक्षमाणः।

तव मित्रम्

उमेशः